हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

नवम्बर, 2002 | वर्ष 1 | अंक 9

– सम्पादक :–

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

– सहायक –

मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी

मु० हसान अन्सारी

हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही !

मजलिसे सहाफत व नशरियात

पो० बॉ० नं० 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 787250

फैक्स : 787310

e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

[illegible] नशरियात, [illegible] उलमा, लखनऊ [illegible] किया।

घाटा रहित मानव

क़सम है ज़माने की कि मानव घाठे में है सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए, भले काम किये और सत्य तथा सत्यमार्ग की परीक्षाओं पर जमे रहने का उपदेश देते रहे।

(सूरतलअस्त्र)

विषय एक नज़र में

• तब और अब	सम्पादकीय	3
• क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी अ़ली ह़सनी	7
• मुझको अ़ता कर अ़िश्के बिलाली	मुह़म्मद सानी ह़सनी	7
• मुसलमानों ने इस देश की क्या सेवा की	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी	8
• रमज़ान से सम्बन्धित आवश्यक बातें	मौलाना अब्दुस्समी नदवी	12
• एक पवित्र गुप्त रात्रि	मौलाना मो० अ़ली जौहर	14
• वसुधैव कुटुम्बकम	मौलाना अब्दुल माजिद	15
• मनुष्यता के काल	श्री हरि	15
• आदर्श चरित्र	डा० मो० इज्तिबा नदवी	16
• जिन्नात का परिचय	अबू मर्गूब	18
• जीवन यात्रा	मुह़म्मदुल ह़स्नी	19
• आपकी समस्याएं और उनका ह़ल	मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी	21
• एक घटना	अब्दुल्लाह सिद्दीक़ी	23
• शाहे कौनैन	मौ० अब्दुल बारी नदवी	24
• हमारे बच्चे और टेलीवीज़न	मो० अरशद आज़मी नदवी	25
• मोमिन की विशेषताएं	डा० अब्दुर्रशीद	26
• स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका	प्रो० शान्ति मय	29
• अल्लाह की ओर दावत	अहमद अ़ली नदवी	33
• मैकू	मु० ह़सन अन्सारी	34
• क़ादियानियत से होशियार		35
• पोलियो रोग एक चुनौती	डा० मु०अ० रऊफ सिद्दीक़ी	36
• इस्लाम में रिश्वत ह़राम होने के आदेश	शेख़ अहमद बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ अबूज़बी	37
• आओ उर्दू सीखें	इदारा	39
• अंतर्राष्ट्रीय समाचार	मुईद अशरफ़ नदवी	40

□□□

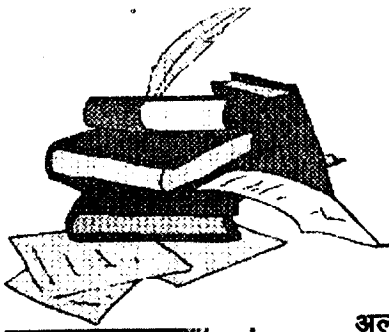

तब और अब

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह की किताब, पवित्र क़ुर्आन में बताया गया है :–
"तिल्कल् अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि" (3:140)
(यह दिन हम लोगों के बीच उलटते पलटते रहते हैं।)

गाँव में मेरा जन्म हुआ, गाँव का रहने वाला हूँ। न कभी धनवानों में गिन्ती रही न निर्धनों में समझा गया। लगभग पाँच सौ निवासियों का छोटा गाँव था। जिस में दो भाग हिन्दू थे एक भाग मुसलमान। पारस्परिक मेल जोल वर्णनीय था। हमारे पास पड़ोस के सभी ग्रामों में मेल जोल की यही स्थिति थी। मेरे पिता जी मु० इसहाक़ वर्ष के दो मास अप्रैल और मई में ग़ल्ले का सामेयिक व्यापार करते, गाँव के किसानों का जो अनाज बिकने योग्य होतो उसे खरीद कर मण्डी पहुँचाते, इस व्यापार में राम फेर यादव का बराबर का साझा रहता। पिता जी के देहांत के पश्चात् मैने भी राम फेर चाचा के साझे में व्यापार किया, तत्पश्चात मैं ने शिव प्रसाद यादव के साझे में व्यापार किया। सारा लेन–देन ज़बानी रहता। कभी भी परस्पर शंका सन्देह नहीं हुआ।

कितना अच्छा समय था। साधारणतया मुसलमान लोग दूध दही के लिए गाय भैंस नहीं पालते, ज़रूरत पर दूध मोल लेते। मेरे घर तो बराबर एक भैंस रहा करती । हर यादव के यहाँ मट्ठा फिरी मिलता, मुसलमान भैंस वाले के यहाँ भी मट्ठा मुफ़्त मिलता। कितने गरीबों के यहाँ केवल रोटी या कोदौ का चावल पकता और फिरी के मट्ठे से काम चलता। 1953 से मैं ने पढ़ाना आरम्भ किया, बाहर रहने लगा तो भैंस पालना छोड़ दिया, अब बच्चों के लिए दूध खरीदा जाने लगा। ख़ूब याद है जब मैं बाहर से घर जाता तो राम सुमिरन यादव के दरवाज़े से गुज़रना होता, मुझे देखते ही राम सुमिरन सलाम करते और माँ को आवाज़ देते : बुवा ! भैया आ गये हैं एक लोटा दूध पहुँचा आओ। वह थोड़ी ही देर में दूध लेकर पहुँच जातीं। इधर भी यह हाल था कि राम सुमिरन के बच्चों के सारे कपड़े मेरी पत्नी सिलतीं। पारस्परिक सहयोग और ईमान्दारी का ऐसा वातावरण अब कहाँ है?

ख़ूब याद है, पिता जी ने तीस रूपयों के चावल बेचे थे। प्रसिद्ध धान राम भोग के छने हुए अरवा चावल एक रूपिये के नौ सेर (लगभग 8½ किलो) की दर से बिके थे। दस–दस के तीन नोट मेरी माँ के हवाले हो गये, माँ ने एक हांडी में रख दिये। मुन्शी यादव को कोई ज़रूरत पड़ गई, उनको ज्ञात था कि मेरे यहाँ चावल बिके हैं वह भागे हुए मेरी माँ के पास आए। मेरी माँ गाँव ही की लड़की थीं। मुन्शी मेरी माँ को फूफू कहते थे। कहा फूफू बड़ी ज़रूरत है, दस रुपये दे दीजिए घी बिकते ही दे जाएंगे। माँ अन्दर गईं और एक नोट लाकर इस ताकीद से दे दिया कि एक महीने से पहले दे जाना।

मुन्शी चले गये, थोड़ी देर बाद वालिद साहिब ने दस रूपिये मांगे, माँ ने एक नोट उनको दे दिया, वह बाजार चले गये। एक फेरीवाला दरी बेचने आ गया, माँ ने दो रोपियों में एक दरी तमकी। रूपिया लेने गईं तो हाँडी में रूपया न था, बहाने से दरी वापिस कर दी, 11 बजे से 4 बजे तक नोट ढूँढा जाता रहा, बड़ा ग़म था। दस रूपिया बड़ा मूल्य रखता था। चार बजे के बाद मुन्शी दौड़े दौड़े आए। अरे फूफू इस में तो दो नोट हैं। एक नोट वापस किया अब माँ की जान में जान आई। शादी, ग़मी तथा हर अवसर पर हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के ऐसे शरीक होते जैसे करीबी रिश्तेदार। छुआछूत अवश्य था परन्तु न प्रेम का अभाव था न आदर सम्मान का, दीन दयाल यादव किसी मुसलमान को अपने बरतन में खाना न खिलाते लेकिन अपनी चौपाल में मुसलमानों को खिलाने के लिए बरतनों का एक सेट रखे रहते।

अमजद अ़ली के यहाँ हिन्दुओं के पकाने खाने के लिये बरतन सुरक्षित रहते। कोई हिन्दू किसी मुसलमान को उस के धर्म के कारण घृणा की दृष्टि से न देखता न कोई मुसलमान किसी हिन्दू से उसके मज़हब के सबब नफ़रत करता।

यह तब की बातें थी ज़रा अब भी देखें, मैं एक छोटा सा मदरसा चलाता हूँ किसी प्रकार गाँव के बच्चों को दीन सिखाने का प्रयास करता तथा साथ में हिन्दी अंग्रेज़ी हिसाब भी पढ़वाता हूँ। हर समय ख़र्चे की चिन्ता रहती है। एक सोसाइटी के एक सज्जन आए और प्रश्न किया आपके मदरसे का सालाना ख़र्च क्या है? मैंने बीस हज़ार बताया, कहने लगे एक सफ़र बाहर का कीजिए एक लाख हमारी सोसाइटी में जमा कीजिए, हम उन को कारोबार में लगायेंगे, शियरों की ख़रीदारी से नफ़ा कमायेंगे और आपको 20 हज़ार वार्षिक देते रहेंगे, कभी घाटा हुआ तो अपने चेरीटी फन्ड से आपको देते रहेंगे। मेरे पास मदरसे के दस हज़ार थे, मैं ने सोचा अनुभव करूँ झट जमा कर दिया, दो महीनों के पश्चात लाभ मिलना आरंभ हो गया तो मैं ने भी प्रौपैगन्डे में सहयोग देना शुरू कर दिया, परन्तु छः महीने भी नहीं बीते थे कि लोगों का करोड़ों रूपिया हज़्म करके सोसाइटी परदे से गाइब हो गई उत्तरदायी महोदय जेल भी गये तो क्या बिगड़ा? घर का हर व्यक्ति सम्पत्ति स्वामी बन गया। अब जो इर्द गिर्द नज़र डाली तो ऐसी कई सोसाइटियाँ जिन्होंने मुसलमानों को सूद से बचाने का बीड़ा उठाया था, अपने भाइयों की करोड़ों की अस्ल (मूल पूंजी) हड़प कर गईं।

आज हिन्दू मुस्लिम मेल मिलाप तो दूर की बात है खुद मुस्लिम मुस्लिम में न मेल है न एका है न हमदर्दी। आज हिन्दू मुसलमान पर भरोसा नहीं करता, मुसलमान हिन्दू पर एतिमाद नहीं करता। मट्ठा मुफ़्त क्या मिलेगा पानी भी मुफ़्त नहीं मिलता। निःसन्देह हमने उन्नति की है, हममें पढ़ाई का प्रतिशत बढ़ा है। हम पहले से अच्छा खाना खाते हैं, पहले से अच्छा पहनते हैं, हम सवारी पर चलते हैं, हम बिजली में रहते हैं, हमारे पास रेडियो है, टेलीफोन है, टीवी है, इन्टरनेट है परन्तु हमसे मानवता, उसका आदर, सहानुभूति और प्रेम छीन लिया गया, यह सब तब था अब नहीं है। यदि आप यह मानते हैं तो आइये तब की यह मूल्यवान वस्तुएं अब फिर प्राप्त करने की चेष्ठा करें। इसके लिए विश्व ख्यात महापुरुष जाने माने बड़े आलिम, सूफी बुजुर्ग मौलाना अ़ली मियाँ हसनी नदवी (रह०) के चलाए हुए आन्दोलन "मानवता का सन्देश" (पयामें इन्सानियत) से जुड़ जाएं और भारत में इस आन्दोलन को बरपा कर दें।

चौकसी और होश्यारी :

हमारे मौलाना अ़ली मियाँ साहिब (रहमतुल्लाहि अ़लैहि) जहाँ "मानवता के सन्देश आन्दोलन" को लाभदायक और आवश्यक समझते और समझाते थे वहीं इस की नज़ाकत का भी ज़िक्र किया करते थे और फ़रमाते कि इस में बड़ी चौकसी और होश्यारी की ज़रूरत है।

सोचये एक व्यक्ति जिसे मूर्ति पूजन में श्रद्धा है और वह मूर्ति पूजक है वह किसी के समझाने और मेल मिलाप रखने के लिए मूर्ति पूजा नहीं छोड़ सकता, इसी प्रकार एकेश्वर (एक अल्लाह) का पुजारी केवल मेल मिलाप की ख़ातिर किसी मूर्ति के आगे नहीं झुक सकता। अतः मानवता के सन्देश में ऐसी बातें कभी न लाई जाएं जिनका सम्बन्ध विश्वास, श्रद्धा और पूजा से हो बल्कि वह बातें लाई जाएं जो प्राकृतिक रूप से हर मनुष्य में पाई जाती हैं और जिन का सम्बन्ध मनुष्यों से है, उनमें सबसे ऊपर सहानुभूति है। बड़ों का आदर है। छोटों से प्यार है। दुखदर्द में एक दूसरे का हाथ बटाना है, सत्य सदाचार करूणा तथा न्याय आदि को अपनाना है। झूठ, धोखा, चोरी, डकैती, व्यभिचार, घूस, अत्याचार जैसे कुकर्मों को छोड़ना है। अलबत्ता यह अवश्य कहना है कि तुम्हारा कोई पैदा करने वाला है तुम्हारा कोई मालिक है तुम हर बुरा काम उसी मालिक के भय से छोड़ो और हर भला काम उसी मालिक का आदेश समझते हुए अपनाओ। मानवता का सन्देश आन्दोलन से सम्बन्धित लिट्रेचर के लिए लिखें:

"पयामे इन्सानियत फ़ोरम आफ़िस, नदवा, पो. बा. 93 लखनऊ।

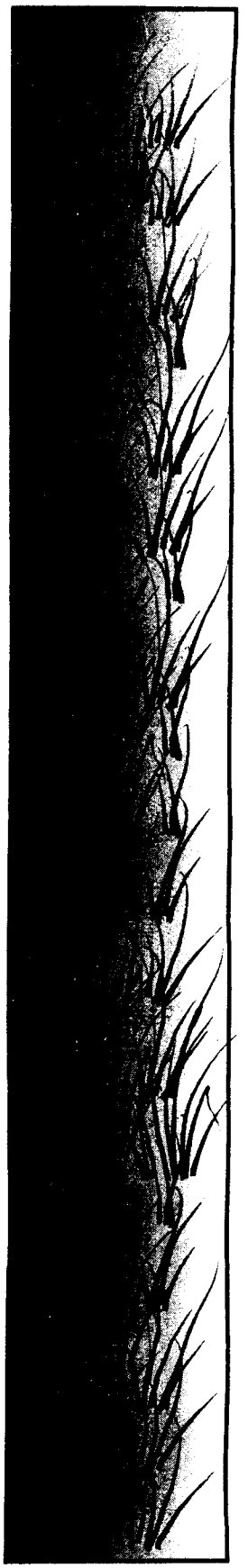

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

तक़्वा (संयम)

"इत्तकुल्लाह" अल्लाह से डरते रहो (हदीद : 28)

एक मरतबा हज़रते उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से किसी ने पूछा कि तक़्वा (संयम) किस को कहते हैं? आपने फ़रमाया कि तुम कभी ऐसे जंगल से गुज़रे हो जहाँ हर तरफ़ कांटे हो? जवाब दिया कि हाँ। फ़रमाया फिर वहाँ कैसे चलते हो? कहा कि अपना दामन समेट लेते हैं और गुज़र जाते हैं, हज़रते उमर ने फ़रमाया कि बस तक़्वा के यही माने (अर्थ) हैं कि तुम दुन्या से इस प्रकार गुज़र जाओ कि तुम्हारा दामन यहाँ के कांटों से उलझने न पाए। (दुर्रे मन्सूर 1:61)

अल्लाह के यहां वास्तविक इज़्ज़त (सम्मान) तकवे (संयम) की है, पवित्र क़ुर्आन में है कि ख़ुदा के नज़दीक तुम में से इज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सब से ज़ियादा तकवे वाला है। (49:13)

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिज्जतुलवदाअ़ में घोषित कर दिया था कि अ़रब को अ़जम पर और काले को गोरे पर कोई बड़प्पन नहीं सबसे अधिक बड़ाई वाला वह है जिसमें सब से अधिक तक़्वा (संयम) है।

ज्ञात हुआ कि इस्लाम में श्रेष्ठता बड़प्पन की कसौटी धन पद तथा टीप टाप (शान व शौकत) नहीं बल्कि अच्छे अख़्लाक़ और तक़्वा है।

इख़्लास :

फ़अ़बुदिल्लाह मुख़्लिसल्लहुद्दीन (39:2)

(तू अल्लाह की इताअ़त कर, ख़ालिस करते हुए इताअ़त को उसी के लिए)

जो भी भला काम किया जाए वह सिर्फ अल्लाह के आज्ञापालन तथा उसकी प्रसन्नता के लिए हो, इसी का नाम इख़्लास है। अल्लाह की आज्ञाकारिता में किसी को साझी न किया जाए चाहे वह साझी ठहराने वाली चीज़ पत्थर तथा मिट्टी के रूप में हो चाहे धरती तथा आकाश की कोई और सृष्टि हो चाहे अपने दिल की चाहतें, ख्यात, सदाचारिता, मान आदि हों।

जो कार्य इख़्लास (निः स्वार्थ) से नहीं होता अल्लाह के यहाँ वह किसी गिन्ती में नहीं होता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ लोगो अपने कामों में खुलूस पैदा करो, अल्लाह तआ़ला वही काम स्वीकार करता है जो खुलूस से हो। (नसई)

सहाबा (रज़ि) का हर काम खुलूस से होता था, हज़रते वलीद ग़ज़व–ए–बद्र में गिरिफ्तार हुए और फ़िदया देकर रिहाई पाई, फ़िदया अदा करने के बाद मक्का की ओर रवाना हुए और ज़ुल हुलैफ़ा पहुंच कर वापस हुए और इस्लाम लाए, उनके भाई ख़ालिद ने कहा कि अगर इस्लाम ही लाना था तो फ़िदया देने से पहले ही इस्लाम लाते कि यह रक़म बच जाती, बोले कि मैं इस लिए फ़िदया देने के बाद इस्लाम लाया कि लोग यह न कहें कि फ़िदया से बचने के लिए इस्लाम क़बूल किया। (अलइसाबा)

सब्र :

फ़स्बिर (सब्र करो।) (सूर–ए–रूम आयत 60)

सब्र दिल की दृढ़ता, नैतिक साहस तथा किसी कार्य पर जम जाने का नाम है, इस मतलब (अर्थ) को क़ुर्आन में कई प्रकार से बयान किया गया है, उन सबसे सब्र की यही वास्तविकता ज्ञात होती है कि :–

1. हर प्रकार का दुख दर्द उठाओ परन्तु अपने उद्देश्य पर जमे रहो।

2. आपत्ति तथा कठिनाई के समय व्याकुल न हो बल्कि उसे अल्लाह का आदेश तथा मसलहत समझ कर झेल ले जाओ।

3. तुम्हारे काम में जो मुशकिलें और ख़तरे पेश आएं उनको खातिर में न लाओ और न उनसे अपनी हिम्मत छोटी करो।

4. तुम्हारे साथ जो बुराई करे उस को मुआ़फ़ करो।

5. दुश्मन के मुकाबले के वक्त मरदाना वार पैर जमाए रहो।

6. अपने नफ़्स पर क़ाबू रखो।

7. मज़हबी हुक्मों को उम्र भर पूरी पाबन्दी और मज़बूती से अदा करते रहो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सब्र से ज़ियादा अच्छी निअ़मत इन्सानों को नहीं दी गई।

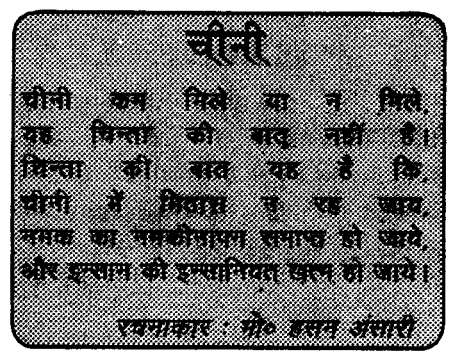

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने का सवाब :

नोट : दुरूद का अर्थ है अल्लाह से हज़रत मुहम्मद (स०) पर कृपा किये जाने की प्रार्थना करना और सलाम का अर्थ है –अल्लाह से सलामती (हर प्रकार की भलाई और रक्षा) मांगना।

पवित्र कुआन में है :

निःसन्देह अल्लाह और उसके फ़िरशते नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद भेजा करो और खूब सलाम भेजा करो। (३३:५६)

दुरूद की फ़ज़ीलत :

हज़रत अ़म्र बिन आ़स से रिवायत है कि उन्होंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है अल्ला तआ़ला उस पर दस बार रहमत उतारता है। (मुस्लिम)

दुरूद पर खुशख़बरी (शुभ सूचना)

हज़रते अब्दुल्ला बिन मसऊ़द से रिवायत है कि रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मुझ से ज़ियादा क़रीब वह शख़्स होगा जो मुझ पर सब से अधिक दुरूद भेजता है। (तिर्मिज़ी)

दुरूद न भेजने पर तिरस्कार :

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह ज़लील (अपमानित) हो जिस के समक्ष मेरा वर्णन हो और वह मुझ पर दुरूद न भेजे। (तिर्मिज़ी)

क़ब्र पर समारोह की मनाही :

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलल्लाहि (स०) ने फ़रमाया कि मेरी क़ब्र पर जश्न (समारोह) न मनाओ अलबत्ता मुझ पर दुरूद भेजो, तुम्हारा दुरूद मुझ को पहुंचता है तुम चाहे जहाँ हो। (अबूदाऊद)

वसीले की दुआ का महत्व :

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स से रिवायत है कि उन्होंने रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि जब तुम मुअ़ज़्ज़िन को अज़ान कहते सुनो तो तुम भी वही कलिमात (शब्द) दुहराओ, और जब अज़ान ख़त्म हो जाए तो मुझ पर दुरूद भेजो, जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है, अल्लाह तआ़ला उस पर दस बार रहमतें (कृपाएं) भेजता है, उस के पश्चात मेरे लिये वसीले (जन्नत में एक पद) मांगो। जो अल्लाह के एक बन्दे को मिलेगा। और उम्मीद है कि वह बन्दा मैं हूंगा, तो जो शख़्स मेरे लिये वसीले की दुआ करेगा उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त जाइज़ होगी। (तिर्मिज़ी)

दुरूद के लिए जुमे के दिन की फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता)

हज़रत औस बिन औस से रिवायत है कि रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, सब से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) दिन जुमा है। तुम जुमे के दिन मुझ पर खूब दुरूद भेजा करो तुम्हारा दुरूद मुझ को पेश किया जाएगा, सहाब–ए–किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी । हमारा दुरूद आप को कैसे पेश किया जाएगा? आपका जिस्मे मुबारक तो गल चुका होगा। आपने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने अंबिया–ए–किराम के जिस्म को ज़मीन पर हराम फ़रमाया है। (अबूदाऊद)

जितना अधिक दुरूद भेजा जाए उतना ही अच्छा ।

हज़रते उबइ बिन कअ़ब से रिवायत है कि मैंने रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अर्ज किया कि अल्लाह के नबी मैं आप पर बहुत दुरूद भेजता हूं तो अपनी दुआओं में से आप पर कितना दुरूद भेजा करूँ? आप ने फ़रमाया जितना चाहो। मैंने कहा क्या चौथाई ? फ़रमाया जितना चाहो। अगर अधिक करोगे तो तुम्हारे ही लिये लाभदायक होगा। मैंने अ़र्ज़ किया आधा समय? आप ने फ़रमाया जितना चाहो। अगर ज़ियादा करोगे तो तुम्हारा ही लाभ होगा। मैंने अ़र्ज़ किया कि फिर दो तिहाई कर लूँ? आपने फ़रमाया जितना चाहो अधिक कर लो तुम्हारा ही लाभ होगा। तो मैंने कहा तो अपनी दुआओं के पूरे समय में आप पर दुरूद भेजा करूँगा। आपने फ़रमाया तो तुम्हारे सारे ग़म दूर होंगे, और गुनाह मुआ़फ हो जाएंगे। (मिर्तिज़ी)

दुरूद में इन अल्फ़ाज की फ़ज़ीलत :

हज़रत अबू हमीद साअ़िदी से रिवायत है कि उन लोगों ने अर्ज़ किया अल्लाह के नबी ! आप पर दुरूद हम किस तरह भेजें आप ने फ़रमाया इस तरह पढ़ो:

(अनुवाद) ऐ अल्ला दुरूद उतार सय्यिदिना मुहम्मद पर और आप की पवित्र पत्नियों पर और आप की सन्तान पर जैसे तू ने दुरूद (कृपा) उतारा इब्राहीम (अ़०) पर और बरकत उतार सय्यिदिना मुहम्मद पर

और आप की पवित्र पत्नियों पर और आप की सन्तान पर जैसे की बरकत उतारी तू ने इब्राहीम की सन्तान पर निःसन्देह तू प्रशंसनीय बुजुर्ग है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत कअ़ब बिन अ़ज़रा से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (स०) हम लोगों के पास बाहर तशरीफ़ लाए, हम लोगों ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह के नबी! हम को आप बताएं कि आप को सलाम किस तरह भेजें और दुरूद किस तरह भेजें ? आप ने फ़रमाया कहो :

(अनुवाद) ऐ अल्लाह दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद और आप की आल पर जैसा कि तूने दुरूद नाज़िल फ़रमाया हज़रते इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बेशक तू तारीफ़ के लाइक़ बुजुर्ग है और बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद और आपकी आल पर जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम (अ़०) और आले इब्राहीम पर बेशक तू तारीफ़ के लाइक़ बुजुर्ग है। (बुख़ारी)

हज़रत इब्ने मसऊ़द से रिवायत है कि जब तुम लोग रसूलुल्लाह (स०) पर दुरूद भेजो तो अच्छी तरह दुरूद भेजो तुम्हें मालूम नहीं कि शायद यह रसूलुल्लाह पर पेश किया जाए रावी कहते है कि उन लोगों ने उन से कहा हमें आप सिखा दीजिए तो उन्होंने कहा तुम लोग कहो :

अनुवाद :

ऐ अल्लाह अपना दुरूद, और अपनी रहमत और अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमा रसूलों के सरदार मुत्तक़ीयों के इमाम, नबियों के ख़ातिम अपने बन्दे और रसूल मुहम्मद (स०) पर जो ख़ैर के इमाम और ख़ैर की जानिब रहनुमाई करने वाले और रहमत हैं। ऐ अल्लाह तू इन्हें मकामे महमूद तक पहुंचा जिस पर अगले पिछले सब रश्क करते हैं, ऐ अल्लाह दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद और उनकी आल पर जिस प्रकार तूने सय्यिदिना इब्राहीम (अ़०) और उनकी आल पर दुरूद नाज़िल फ़रमाया, बेशक तू तारीफ़ के लाइक़ बुजुर्ग है। ऐ अल्लाह तू बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (स०) पर और आप की आल पर जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई सय्यिदिना इब्राहीम (अ़०) पर और आप की आल पर बेशक तू तारीफ़ के लाइक़ बुजुर्ग है। (इब्ने माजा)

नोट : जहाँ नबी, रसूल या उनके नाम के पश्चात (स०) लिखा हो तो सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पढ़ें, जहाँ (अ़०) लिखा हो तो अ़लैहिस्सलाम पढ़ें। सहाबी के नाम के बाद (रज़ि) को रज़ियल्लाहु अन्दु पढ़ें। किसी नाम के पश्चात (रह०) लिखा हो तो रहमतुल्लाहि अ़लैहि कहें।

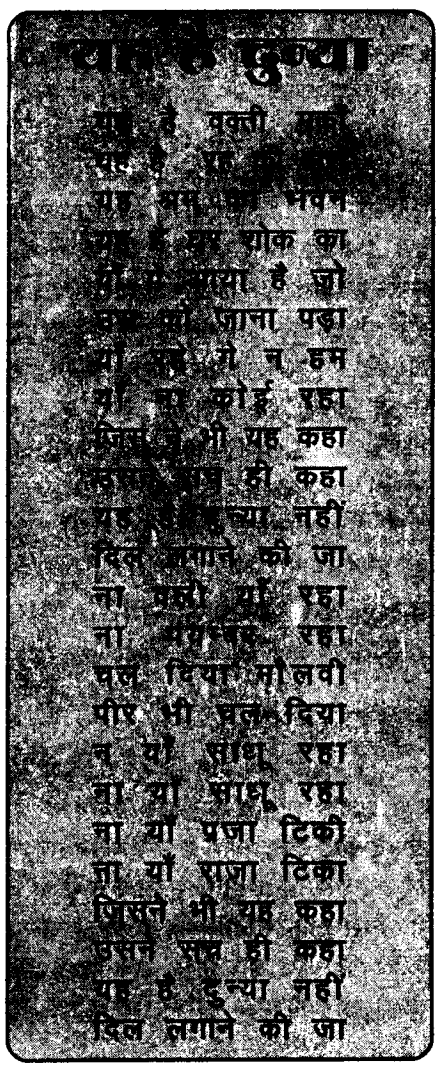

मुझको अ़ता कर अ़िश्के बिलाली

—मुहम्मद सानी हसनी

सारा जहां था नूर से ख़ाली ।
कुफ़्र कि शब थी काली काली।।
गहरा समन्दर मौजें बलाकी।
एक थी कश्ती डूबने वाली।।
भेजा ख़ुदा ने एक नबी को।
डूबती कशती जिसने निकाली।।
नामे मुहम्मद कितना प्यारा।
ज़ाते गिरामी कितनी आ़ली।
हुस्ने सरापा ख़ुल्के मुजस्सम।
अपने पराए सब के वाली।।
चान्द भी दम भर ताब न लाए।
रूए मुबारक कितना जमाली।।
जान का दुश्मन फिर भी महब्बत।
जिसने सताया उसने दुआ ली।
क़त्ल जो करने आप को आया।
सामने पहुंचा आंख झुका ली।
फ़र्श से पहुँचा अ़र्श तलक वह।
जिस पे नज़र इक आपने डाली।
आपकी जिसमें हो न महब्बत।
दिल है वह ईमान से ख़ाली।
नअ़ते नबी में मस्तो शादां।
पत्ता पत्ता डाली डाली।।
अपनी अपनी सबकी नज़र है।
कोई हक़ीक़ी कोई ख़यालि।
तेरी नज़र में शीश महल है।
मेरी नज़र में नूर की जाली।
ख़ुल्दे नज़र है मेरी नज़र में।
गुलशने तैबा ख़ाके अ़वाली ।।
जिस का वतन बन जाए मदीना।
उसने कि़स्मत अपनी जगाली।।
ख़ालिके अ़िश्को मिहरो महब्बत।
मालिके रहमां बरतरो आ़ली।।
सदका करम का तेरे ख़ुदाया।
मुझ को अ़ता कर अ़िश्के बिलाली।।

मुसलमानों ने इस देश की क्या सेवा की

मौ० अबुल हसन अली हसनी (एम०ए०)

मुसलमान सूफ़ी–संत

इस विशाल देश में मुसलमान कभी तो हर प्रकार के सांसारिक लाभ से विरक्त होकर विशुद्ध धार्मिक भावना के तहत प्रवेश किये और कभी विजेता बनकर। वह यहां न्याय और इन्साफ का संदेश लेकर आये रोशनी और खुलापन लेकर आये इस धरती में प्रकृति के अनमोल खज़ाने के विकास के तरीक़े लेकर आये और गुलामी व दास्तां के जंजीरों से जकड़े हुए बेबस इन्सानों को दुन्या के मालिक की दी हुई आज़ादी से लाभावान्वित होने का अवसर लेकर आये। इस्लाम के निःस्वार्थ सेवकों और सूफ़ी–सन्तों की जीवनी में इसकी उत्कृष्ट दृष्टान्त मिलते हैं, वे सूफ़ी–संत जिनकी छत्र–छाया में भारतीय समाज के सताये हुए हज़ारों उत्पीड़ित की न केवल पनाह व शरण मिली, अपितु वे इनके यहां सगे बाप–बेटों, भाई–बहनों की तरह रहने लगे। सय्यद अ़ली हिजवेरी, ख्वाजा मुईन उद्दीन अजमेरी और सय्यद अ़ली बिन शहाब हमदानी कशमीरी की गणना इन्हीं बुजुर्गों में होती है।

विजेता और शासक

कभी मुसलमान इस देश में विजेता सिपहसालार और उत्साही शासक की हैसियत से आये जैसे महमूद ग़ज़नवी, शहाब उद्दीन, मोहम्मद ग़ौरी और ज़हीर उद्दीन बाबर तैमूरी। इन बादशाहों के हाथों इस देश में ऐसी महान हुकूमत की बुनियाद पड़ी जिसने लम्बे समय तक इस देश की सेवा की और इसे सुख और समृद्धि की चरम सीमा तक पहुंचा दिया।

देश से स्थायी लगाव और सेवा की भावना

सारांश यह है कि मुसलमान जिस हैसियत से भी इस देश में आये उन्होंने इसे अपना वतन समझा। उनका अक़ीदा था कि ज़मीन अल्लाह की है वही जिसको चाहता है अपनी धरती का वारिस व निगहबान (रखवाला) बना देता है। वे अपने को अल्लाह (परमेश्वर) की आरे से उसकी धरती का व्यवस्थापक और इस जगत का सेवक समझते थे। इसलिए मुसलमानों ने सदैव इस देश को अपना वतन, अपना घर और अपना स्थायी निवास समझा जिस से वे कभी अपनी निगाहें फेर न सकते थे। अतएव इस देश की सेवा के लिए उन्होंने अपनी उत्कृष्ट क्षमतायें लगा दीं। उनका विचार था कि वे इस देश की सम्पदा में जो भी अभिवृद्धि करेंगे वह मानो स्वयं उनकी अपनी समृद्धि में अभिवृद्धि होगी। क्योंकि उनका भविष्य इसी धरती से जुड़ा है। इस सोंच का स्वाभाविक नतीजा यह था कि भारत के मुसलमान इस देश को जिस दृष्टि से देखते थे वह अंग्रेजों और अन्य सामन्तशाही पसन्द ताकतों का उद्देश्य केवल यहां की दौलत खींचना था, शोषण करना था। वास्तव में उनके सामने इस देश की हैसियत एक उधार ली गई दुधारी गाय की सी थी जो उनके पास थोड़े दिन रहकर वापस जाने वाली थी, इस लिये वे इसको अच्छी तरह दुह लेना चाहते थे।

बाहर की सभ्य और विकसित दुनिया से भारत का अलग थलग रहना

मुसलमान जब भारत में आये तो यहां प्राचीन ज्ञान व फ़ल्सफ़: (दर्शनशास्त्र) मौजूद था। खाद्यान, मेवा और कच्चे पदार्थ प्रचुरमात्रा में पैदा होते थे, लेकिन सभ्य व विकसित दुन्या से वह लम्बे समय से अलग थलग था। एक ओर ऊंचे–ऊंचे पर्वत और दूसरी ओर विशाल सागर उसे बाहर की दुन्या से सम्पर्क में आने से रोकते थे सब से अन्तिम राजा जो बाहर के सभ्य संसार से यहां आया वह सिकन्दर महान था, उसके बाद से मुसलमानों के आने तक बाहर की दुनिया और प्रशासन व्यवस्था के नये तरीक़े यहां तक पहुंच सकते थे और न यहां के प्राचीन ज्ञान बाहर जा सकते थे।

सभ्य और विकसित दुन्या से सम्पर्क के साधन

ऐसी दशा में जब मुसलमान इस देश में आये तो उनके साथ एक नया विवेकपूर्ण और हिकमत से भरा व्यवहारिक धर्म था। पक्का ज्ञान, विकसित सभ्यता, सभ्य आचरण, अनेक सभ्यताओं के बहुमूल्य अनुभव, परिपक्व विचार, और दुन्या की बहुत सी कौमों के प्रबुद्ध लोगों के विचार व चिन्तन को साथ लेकर वे यहां आये। इनमें अरबों की सुरूचि, ईरानियों की मृदुलता और तुर्कों की सादगी व सरलता शामिल थी, इसके अ़लावह अनेक दुर्लभ चीजें और अनोखी वस्तुएं थीं।

अद्वैतवाद की इस्लामी भेंट

सबसे दुर्लभ और बहुमूल्य भेंट जो मुसलमान यहां लाये वह इस्लाम का विशुद्ध और बे मेल तौहीद (अद्वैतवाद) का अक़ीदा था जिसके तहत (अन्तर्गत) आराधक और आराध्य के मध्य दुआ व इबादत के लिए किसी बीच की हस्ती की ज़रूरत नहीं है। इस अक़ीदे में 'अनेक खुदाओं' और 'खुदा का किसी मख़लूक (कृति) में विलीन हो जाना और दोनों को मिलाकर एक हो जाना' के विचारधारा की गुंजाइश नहीं, बल्कि एक खुदा (जो किसी का मुहताज नहीं और जिसके सब मुहताज हैं) का इक़रार और उसी पर आस्था रखना है जिसके न कोई बेटा है न बाप और न

खुदाई में कोई उसका साझी व शरीक। सृष्टि का जन्म, संसार की व्यवस्था और धरती व आकाश का प्रभुत्व उसी के हाथ में है। इस अकीदे व विश्वास का प्रभाव भारत पर जो शताब्दियों से विशुद्ध अद्वैतवाद के अक़ीदे से अपरिचित था, स्वाभाविक था। हिन्दू सभ्यता और हिन्दू धर्म पर इस्लाम के प्रभाव का उल्लेख करते हुए विख्यात इतिहासकार (K.M. anikkar) लिखते हैं :–

"यह बात तो साफ़ है कि युग में हिन्दू धर्म पर इस्लाम का गहरा प्रभाव पड़ा। हिन्दुओं में ईश्वर की आराधना की परिकल्पना इस्लाम ही की बदौलत पैदा हुई। और इस ज़माने के तमाम हिन्दू रहनुमाओं ने, अपने देवताओं का नाम चाहे कुछ भी हो, खुदापरस्ती ही की शिक्षा दी, अर्थात् अल्लाह एक है, वही इबादत के लायक़ है, और वही नजात (मोक्ष) देने वाला है।"

भाईचारा और बराबरी का सन्देश

सामुदायिक जीवन में भारत के लिए सब ने नई क़ीमती चीज इस्लामी भाईचारा और बराबरी की परिकल्पना थी। मुसलमानों के यहां न तो वर्ग–भेद था और न अछूत नाम की कोई जाति थी। उनका विश्वास और अक़ीदा था कि कोई व्यक्ति जन्मजात अपवित्र अथवा अज्ञान नहीं होता कि जिसको ज्ञानार्जन का हक़ न हो। किसी व्यवसाय अथवा उद्योग के लिए कोई जाति विशेष नहीं थी, बल्कि वे एक साथ रहते थे खाते पीते थे, और अमीर व ग़रीब सब मिलजुल कर ज्ञानार्जन के प्रयास करते थे, हर व्यक्ति को हक़ था जो पेशा चाहे अपनाये।

इन्सानी बराबरी की यह व्यवस्था भारतीय समाज के लिए एक नया अनुभव और चिन्तन का आह्वान था जिससे देश को बड़ा लाभ पहुंचा। इसके परिणाम स्वरूप प्रचलित वर्ण व्यवस्था के बन्धन बहुत हद तक ढीले पड़ गये और देश में वर्ण व्यवस्था के विरोध में प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गयी और समाज सुधारकों के लिए इसने एड का काम किया।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इतिहास की इस सच्चाई को इन शब्दों में स्वीकार किया है :–

"उत्तर–पच्छिम से आनेवाले हमलावरों और इस्लाम का आगमन भारत के इतिहास में बड़ा महत्व रखता है। इसने उन ख़राबियों को, जो भारत में पैदा हो गई थी, अर्थात्–वर्ण–भेद, छुआछूत और वैराग्य, उजागर किया। इस्लाम के भाईचारा के दृष्टिकोण और मुसलमानों की व्यवहारिक बराबरी ने हिन्दुओं के मन–मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव डाला, समाज में बराबरी और समता के अधिकार से वंचित थे।"

नारी के अधिकार और कुछ रस्मों का सुधार

दूसरी भेंट जो मुसलमान इस देश के लिए लाये वह नारी का प्रतिष्ठा और परिवार में उसकी मान–मर्यादा और उसके अधिकारी की स्वीकारोक्ति थी। यहां सती प्रथा का चलन और रिवाज था पत्नी की मृत्यु पर सती जाती थी क्योंकि समाज और स्वयं उनकी निगाह में पति के बाद उन्हें जीवित रहने का अधिकार ही न था। सती प्रथा के सुधार में मुस्लिम बादशाहों और उनके सहयोगियों ने हिस्सा लिया। भारत का विख्यात सैलानी डा० बर्नियर लिखता है :–

"आज कल पहले की अपेक्षा 'सती' की संख्या कम हो गई है, क्योंकि मुसलमान जो इस देश के शासक है इस प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने का यथा सम्भव प्रयास करते हैं। और यद्यपि इसे लागू करने के लिए कोई कानून नहीं है, क्योंकि उनकी नीति का एक अंश है कि हिन्दुओं के मामलों में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते, बल्कि उन्हें धार्मिक संस्कारों को सम्पन्न करने की आज़ादी देते हैं। फिर भी सती प्रथा को कुछ न कुछ तरीकों से रोकते हैं। यहां तक कि कोई औरत अपने प्रान्त के शासक की अनुमति के बिना सती नहीं हो सकती और सूबेदार कदापि अनुमति नहीं देता जब तक कि निश्चित रूप से उसे विश्वास नहीं हो जाता कि वह अपने इरादे से हरगिज़ बाज़ नहीं आयेगी। सूबेदार विधवा को समझाता और बहुत से वादे करता है और उसे डराता है और यदि उसके उपाय कारगर नहीं होते तो कभी ऐसा भी करता है कि अपने महलसरा में बेग़मात के पास भेज देता है ताकि वे भी उसको अपने तौर पर समझायें। किन्तु इन सबके बावजूद 'सती' की संख्या अब भी बहुत है। विशेषकर उन राजाओं के इलाकों में जहां कोई मुसलमान सूबेदार नहीं है।"

इतिहास लेखन

बहुत से आधुनिक ज्ञान को मुसलमान भारत लाये। ज्ञान की इन शाखाओं में इतिहास लेखन की कला बहुत महत्व रखती है। क्योंकि उस समय तक इस कला का यहां सर्वथा अभाव था यहां कोई किताब सही अर्थों में इतिहास की किताब कहलाने योग्य न थी। केवल धार्मिक उपनिषद, वीर–गाथायें और महाभारत व रामायण की प्रतियां उपलब्ध थीं। मुसलमानों ने इतिहास लेखन में पूरे–पूरे पुस्तकालय तैयार कर दिये।

डा० गस्टेव ले बान "तमददुने हिन्द" खण्ड तीन में भारत के इतिहास का उल्लेख करते हुए लिखता है।

"प्राचीन भारत का कोई इतिहास ही नहीं है। इनकी किताबों में ऐतिहासिक घटनायें बिल्कुल दर्ज नहीं हैं और न उनकी इमारतों और यादगारों से इस कमी की पूर्ति होती है। क्योंकि पुरानी से पुरानी यादगार मुश्किल से तीसरी शताब्दी से पूर्व की है। कुछ धार्मिक ग्रन्थों के अलावा जिन में कुछ ऐतिहासिक घटनायें, कहानियों और कथाओं के रूप में दर्ज हैं, प्राचीन भारत के हालात मालूम करना उतना ही कठिन कार्य है जितना कि उस काल्पनिक द्वीप 'एटलान्टस' का जो पेल्टो के कथानुसार धरती के उथल–पुथल के कारण तबाह हो गया।"

फिर यह लिखने के बाद कि वेद और रामायण व महाभारत के इस देश की

परिस्थितियों पर कुछ प्रकाश पड़ता है, वह लिखता है –

"भारत का इतिहास–युग वस्तुतः मुसलमानों की फ़ौज कुशी के बाद से प्रारम्भ हुआ, और भारत के प्रथम इतिहासकार मुसलमान थे।"

नई शैलियाँ

भारत की मुसलमानों से आमतौर पर उदार दृष्किोण और साहित्य की नयी शैलियां मिलीं। नया दृष्टिकोण बिना बौद्धिक, साहित्यिक और वैचारिक सामंजस के असम्भव था। अन्य उपहारों के अलावा मुसलमानों ने भारत को उर्दू भाषा का उपहार दिया जो एक व्यापक और मीठी भाषा है। इस देश की सभ्यता व संस्कृति, उद्योग–धन्धों और जीवन–शैली पर मुसलमानों की छाप अन्य संकायों की अपेक्षा अधिक गहरी नज़र आती है। उनके आने से इस देश में आई क्रान्ति ठीक उसी प्रकार है जैसे आधुनिक योरोप का जीवन यहां के मध्ययुग के जीवन से बिल्कुल भिन्न है।

प्राचीन भारत का चित्रण बाबर की लेखनी से

मुसलमानों ने इस देश की सभ्यता का संस्कृति की पूंजी में जो बहुमूल्य अभिवृद्धि की है, उसके महत्व को समझाने के लिए आवश्यक है कि पहले हम भारत के उस युग का जायजा (सिंहावलोकन) लें, जब मुसलमानयहां नहीं आये थे। मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक ज़हीरुद्दीन बाबर (सन् 1483–1523) ने मुसलमानों के आगमन से पूर्व इस देश के जीवन का बहुत ही स्पष्ट चित्रण किया है। बाबर अपनी 'तोज़क' में लिखता है –

'हिन्दुस्तान में अच्छे घोड़े नहीं। अच्छा गोश्त नहीं, अंगूर नहीं, खरबूज़ा नहीं, बर्फ नहीं, ठंडा पानी नहीं, हम्माम नहीं, मदरसः नहीं, शमा (ज्योति) नहीं, मशाल नहीं शमादान नहीं, शमादान के बजाय डेवट होता है, यह तीन पाये को एक लोहा लकड़ी में फिट कर के लगा देते हैं,दाहिने हाथ में लौकी की एक तोंबी होती है जिसका सूराख़ तंग होता है इसी की राह से तेल ती पतली सी धार गिरती है। राजाओं और महाराजाओं को रात के समय रोशनी का कुछ काम पड़ता है तो नौकर यही गन्दी डेवट लेकर उनके पास खड़े होते हैं ।

बाग़ों और इमारतों में प्रवाहित जल नहीं, इमारतें न साफ़ है न सुडौल, उनमें न हवा है न अनुपात। आम आदमी नंगे पैर एक लंगोटी लगाये फिरते हैं, औरतें धोती बांधती हैं जिसका आधा भाग कमर से लपेट लेती है, और आधा सर पर डाल लेती हैं।"

पंडित जवाहर लाल नेहरू अपनीपुस्तक "भारत की खोज" में बराबर के उक्त कथन पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि –

"बाबर के लिखे हुए इतिहास से सभ्यता की उस कंगाली का पता चलता है जो उत्तरी भारत पर छायी हुई थी। इसका कारण कुछ तो वह बर्बादी थी कि अनेक विद्वान, कलाकार और चित्रकार उत्तरी भारत छोड़कर दक्षिण भारत की ओर चले गये थे। इस पतन का एक कारण यह भी था कि भारतीयों की सर्जनात्मक शक्तियों के स्रोत शुष्क हो गये थे।

बाबर कहता है कि इस देश में होशियार कारीगरों और चित्रकारों की कमी नहीं है किन्तु यहां के मेकनिकी नये आविष्कारों में वैद्धिकता और होशियारी बिल्कुल नहीं ।"

फलों का विकास

हरियाली के बावजूद इस देश में मेवा और फल बहुत कम संख्या में और घटिया प्रकार के होते थे और जो कुछ पैदा होते थे वे प्रायः स्वतः उग आते थे जिनकी ओर देशवासी वांछित ध्यान न देते थे, जब मुग़ल इस देश में आये तो उन्होंने मेवा और फलों को बड़ी तरक़्क़ी दी जिस का विवरण "तोज़क बाबरी" और "तोज़क जहांगीरी" में अंकित है। मुग़लों ने भारती फलों की ओर विशेष ध्यानदिया। और विभिन्न प्रकार के फलों को एक दूसरे के साथ क़लम करके अनेक अनोखी क़िस्में खोज निकालीं। आम हिन्दुस्तान का मशहूर और सब से स्वादिष्ट फल है। मुग़लों के आगमन से पूर्व इसकी केवल एक क़िस्म अर्थात् "तुख़्मी आम" होती थी लेकिन उन्होंने क़ल्मी आम की खोज की और आज क़ल्मी आम की इतनी क़िस्म पैदा होने लगीं जिनकी गणना मुश्किल है।

उद्योग–धन्धे, कृषि और व्यापार का विकास

यही हाल कपड़ा उद्योग का था। हिन्दुस्तानी आमतौर से गंजी गाढ़ा और साधारण प्रकार के मोटे सूत अथवा कच्चे ऊन का कपड़ा पहनते हैं।

सुल्तान महमूद बिन मोहम्मद शाह गुजराती ने जो महमूद बेगढ़ा (मृत्यु 917 हिज्री) के नाम से विख्यात था, अनेक कारख़ाने स्थापित किये थे जिनके कपड़े की बुनाई रंगाई, छपाई और डिज़ाइन तैयार करने का काम होता था। पत्थर तराशने, हाथी दांत, रोशनी कपड़े और काग़ज के कारखाने भी क़ायम किये गये सुल्तान महमूद की सुरूचि उच्च कोटि की थी। उसने देश के कोने कोने में बेमिसाल औद्योगिक, कृषि और व्यापार सम्बन्धी क्रान्ति पैदा कर दी थी।

हिन्दुस्तान के महान इतिहासकार और सैयद अब्दुल हयी अपनी पुस्तक "नुजहतुल ख़वातिर" खण्ड चार के पृष्ट 345 पर सुल्तान महमूद का उल्लेख करते हुए लिखते हैं :–

"सुल्तान के महान कार्यों में देश का विकास, मस्जिदों मदरसों और मुसाफ़िरख़ानों का निर्माण कृषि उत्पादन में वृद्धि और फलदार वृक्षों का रोपण, और बाग़ों का लगवाना शामिल है। उसने लोगों को इन कार्यों के लिए उभारा । और सिंचाई के लिए नहीं बनवायीं। इसीलिये कारीगर उद्योग–धन्धों के अच्छे जानकार ईरान व तुर्किस्तान से उसके पास बड़ी संख्या में आये और अपने उद्योग यहां लगाये। फलतः गुजरात एक हरा–भरा क्षेत्र बन गया और यहां लहलहाते खेत और

घने बाग़ दिखाई पड़ने लगे और मेवा व फलों की पैदावार होने लगी। और गुजरात एक व्यापारिक मण्डी बन गया जहां से उच्चकोटि के बहुमूल्य वस्त्र भारत से बाहर भेजे जाते थे। यह सब सुल्तान महमूद की लगन और देश के विकास और समृद्धि के प्रति उसकी जागरूकता का नतीजा था।"

शेरशाह और अकबर द्वारा कृषि के क्षेत्र में किये गये सुधार

आराज़ी के लगान और ज़मीन ज़ायदाद की पैमाइश आदि की व्यवस्था व बन्दोबस्त में मुसलमान बादशाहों ने विशेष सुधार किये। कानून बनाये। रेवेन्यु विशेषकर सिक्कों की व्यवस्था के क्रम में जो सुधार उनके ज़माने में हुआ वह भारत के लिये नया था। क़ानून बनाने और प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में शेरशाह सूरी को दक्षता प्राप्त थी, उसका अनुसरण बाद में अकबर ने किया।

जन–कल्याण के कार्य

अस्पतालों और मुहताजख़ानों की स्थापना, पब्लिक गार्डन मनोरंजन स्थान, बड़ी–बड़ी नहरों और विशाल तालाबों को बनवाना मुस्लिम हुकूमतों के कारनामे है। जानवरों की ट्रेनिंग और उनकी नस्लों के विकास में भी उनका विशिष्ट योगदान था। भारत के पूर्वी भाग से जोड़ने वाली सबसे लम्बी सड़कें भी मुसलमान बादशाहों की बनवाई हुई है। इनमें सब से मशहूर सड़क शेरशाह सूरी की बनवाई हुई है। जो पूरब में सोनार गांव से लेकर पश्चिम में नीलाब तक जाती है। इसकी लम्बाई 4832 किलोमीटर (3000 मील) है। हर तीन किलोमीटर पर एक मुसाफ़िरखाना होता था जिसमें एक लंगर हिन्दुओं के लिए और दूसरा मुसलमानों के लिए होता था। साथ ही एक मस्जिद भी हर दूसरे मील पर बनाई गई थी। जिसके इमाम मुक़र्रर थे। हर मुसाफिरखाने में सन्देश और डाक ले जाने के लिए तेज़रफ्तार दो घोड़े रहते थे जिनकी सहायता से प्रतिदिन नीलाब की ख़बरें बंगाल की सुदूर सीमा तक पहुंचाई जाती थी। सड़क के किनारे दो क़तारों में फलदार वृक्ष लगाये गये थे जिनकी छाया और जिनका फल यात्रियों के लिए बड़ी नेमत थी।

रहन सहन के तरीक़ों में फैलाव व पाकीज़गी (पवित्रता)

इसके अतिरिक्त मुसलमनों ने हिन्दुस्तान को पाकीज़गी, खान–पान की वस्तुओं में सुरूचि और रोशनदान बनाने का तरीक़ा क़िस्म क़िस्म के खाने पीने के बर्तनों से भी परिचित कराया। उन्होंने आधुनिक निर्माण कला भी ईजाद की जिसमें गम्भीरता, मृदुलता सौन्दर्य और सुडौलता व अनुपात का वास होता था। ताजमहल उस स्वर्णिम युग की याद ताज़ा करता रहेगा।

सभ्यता व संस्कृति पर गहरे प्रभाव

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने "भारत की खोज" पुस्तक के पृष्ठ 219 व भारतीय समाज, विचारधारा और सभ्यता व संस्कृति पर मुसलमानों के अविसमरणीय गहरे प्रभावों को स्वीकार करते हुए लिखा है –

"भारत में इस्लाम के और उन विभिन्न जातियों के आगमन ने, तो अपने साथ नये विचार और विभिन्न जीवन–शैली लेकर आयी, यहां की आस्था (अक़ीदा) और स्वरूप को प्रभावित किया। बाहरी विजय चाहे कुछ भी बुराइयां लेकर आयी उसका एक लाभ अवश्य होता है, यह जनसाधारण के बौद्धिक छितिज में विशालता पैदा कर देती है और उन्हें मजबूर कर देती है कि वे अपने घेरे से बाहर निकालें। वह यह समझने लगते हैं कि दुनिया इससे कहीं अधिक बड़ी रंगारंग है जैसी कि वह समझ रहे थे।

बिल्कुल इसी प्रकार अफ़ग़ान विजय ने भारत पर प्रभाव डाला और बहुत से परिवर्तन आये। इससे भी अधिक परिवर्तन उस समय प्रकट हुए जब मुग़ल भारत में आये। क्योंकि वे अफ़ग़ानों से अधिक सभ्य और विकसित थे। उन्होंने भारत में विशेष रूप से इस नफ़ासत को रायज (प्रचलित) किया जो ईरान का हिस्सा थी।"

इस सच्चाई को कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष और स्वतंत्रता संग्राम के एक लीडर डा० पट्टाभि सीता रमैया ने भी 1948 में जयपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में अपने अध्यक्षीण भाषण में इन शब्दों में स्वीकार किया है –

"मुसलमानों ने हमारे कलचर को मालामाल किया है, और हमारे प्रशासन को सुदृढ़ और मज़बूत बनाया, और देश के सुदूर क्षेत्रों को एक दूसरे से निकट लाने में कामयाब हुए। इस देश के साहित्य और सामूहिक जीवन में उनकी छाप बहुत गहरी दिखाई देती है।"

स्वास्थ्य सेवायें

मुसलमानों के आगमन और उनके शासन के कारण भारत की सत्काली सभ्य और विकसित संसार में जो महत्व प्राप्त हो गया था, उसकी बदौलत इस देश को जो बौद्धिक व भौतिक लाभ प्राप्त हुए उनमें एक "यूनानी चिकित्सा व्यवस्था" भी है, यह चिकित्सा पद्धति आधुनिक चिकित्सा पद्धति के पूर्व दुनिया की सबसे विकसित और सबसे अधिक प्रचलित पद्धति थी और स्पेन, ईराक़ व तुर्किस्तान अपने शीर्षस्थ विकास के दिनों में यूनानी चिकित्सा पद्धति के सबसे बड़े केन्द्र थे : और वहीं मध्य युग में इसके महान ज्ञाता और पंडित पैदा हुए। भारत में मुसलमानों की सल्तनत क़ायम हो जाने के बाद, और शाही दरबार में ज्ञान–विज्ञान की कद्रदानी की ख़बरें सुनकर इन देशों के विशेषज्ञ भारत आते रहे । यह क्रम सातवीं हिज़्री से प्रारम्भ होकर लगभग बारहवीं सदी तक जारी रहा। बाहर से आये इन विशेषज्ञों के ज्ञान, सेवाभाव, लगन और उनकी क्षमता व योग्यता की बदौलत यूनानी चिकित्सा पद्धति भारत में अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी, और इसके सामने तमाम प्रचीन चिकित्सा पद्धतियां मन्द पड़ गयी भारत का कोई नगर, क़स्बा चिकित्सकों से खाली नहीं रहा यह चिकित्सा पद्धति सस्ती भी

(शेष पृष्ठ 13 पर)

रमज़ान से सम्बन्धित आवश्यक बातें

मौलाना अब्दुस्समी नदवी

नोट : यहां सरलता से समझ में आने वाली बातें ही लिखी जा रही हैं, इन के अतिरिक्त बातों की जानकारी के लिए उलमा से सम्पर्क करें।

चाँद देखने का हुक्म : नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया है कि "चांद देखकर रोज़ा रखो और चान्द देख कर रोज़ा तोड़ो" (बुखारी व मुस्लिम) अतः शअ़बान की 29 तारीख़ को मत्ला (उदय स्थान) पर चान्द देखने की कोशिश करना मुसलमानों पर वाजिब है। अगर 29 को चान्द दिखाई दे तो दूसरे दिन रोज़ा रखना चाहिए। 29 को चान्द न दिखे तो 30 के बाद रोज़ा रखें।

29 तारीख़ को मत्ला साफ न हो, मत्ले पर बादल हो या गर्द हो तो 30 तारीख को 11 बजे तक कहीं से ख़बर आजाने का इन्तिजार करना चाहिए। मानने के लाइक ख़बर आ जाए तो रोज़े की नीयत करलें, वरना खाएं पिएं। चान्द की ख़बर के बिना रोज़े की नीयत करना मकरूह (अप्रिय) है। कुछ लोग यूं नीयत करते हैं कि चान्द हुआ तो रमज़ान के रोज़े की नीयत करता हूं वरना नफ़्ल रोज़े की नीयत करता हूं, यह शक का रोज़ा हुआ, इस को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रोका है। अबू दाऊद व तिर्मिजी वगैरह में इस प्रकार आया है:-

"जिस ने (रमज़ान का दिन समझते हुए) शक के दिन का रोज़ा रखा उस ने अबुल कासिम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ना फ़रमानी (अवज्ञा) की।"

चान्द की गवाही : अगर मतला साफ न हो, और आ़म लोगों को चान्द नज़र न आया हो लेकिन अगर एक नमाज़ी परहेज़गार (संयमी) और सच्चे मुसलमान ने चान्द देखा हो चाहे वह मर्द हो या औ़रत और वह यह गवाही दे कि मैं ने चान्द देखा है तो उसकी गवाही मानकर रोज़ा रखनाचाहिए। यह रमज़ान के चान्द का हुक्म है। ईद के चान्द के लिए अगर मत्ला साफ न हो तो दो सच्चे परहेज़गार मुसलमान मर्द या एक मुसलमान मर्द और दो मुसलमान औरतें गवाही दें तब चान्द माना जाएगा।

मतला साफ़ हो तो एक दो आदमियों की गवाही से चान्द की तस्दीक़ न होगी बल्कि इतने लोग गवाही दें कि उनका झुठलाना सम्भव न हो।

रेडियो और टेलीवीज़न से चान्द की ख़बर का हुक्म यह है कि उलमा हज़रात की कोई मजलिस या मुअ़तबर (विश्वसनीय) चान्द कमेटी शहादत लेकर चान्द होने का फैसला करे फिर उनकी तरफ़से रेडियो या टेलीवीज़न पर एलान हो तो मक़ामी आ़लिम या उलमा चान्द के होने का फ़ैसला कर सकते हैं। हर आदमी को फ़ैसला न करना चाहिए, इहतियात ज़रूरी है।

रोज़े की फ़रज़ियत—रमज़ानुल मुबारक के रोज़े हर आक़िल व बालिग तन्दुरूस्त व मुक़ीम मर्द व औरत पर फर्ज़ हैं, जो कोई बिला उज़रे शरई रोज़े न रखेगा गुनहगार होगा।

शरअी अुज़्र – मुसाफ़िर बहालते सफ़र रोज़े न रखे तो जाइज़ है मुअख्ख़र कर सकता है मुक़ीम होने पर क़ज़ा रख ले लेकिन सफ़र में तकलीफ़ न हो तो रोज़ा रखना अफ़ज़ल है या ऐसा बीमार है कि रोज़ा रखने की ताक़त नहीं है या बीमारी बढ़ जाने का अन्देशा हो तो तन्दुरूस्त होने पर क़ज़ा रख ले या ऐसा बूढ़ा है कि आयन्दा भी रोज़ा रखने की ताक़त नहीं आ सकती तो हर रोज़े के बदले पौने दो सेर गेहूं या इसकी कीमत मुहताज को दे दें। औरत हमल से है और हमल को नुकसान पहुंचने का अन्देशा हो या बच्चे को दूध पिलाती हो और दूध सूख जाने का कवी एहतमाल हो तो क़ज़ा रख ले। नाबालिग़ पर रोज़ा फ़र्ज़ नहीं मगर आदत डालने के लिए बालिग़ होने से पहले रोज़ा रखवाना चाहिए। जो छोटे बच्चे भूख प्यास बर्दाश्त न कर सकें उनसे रोज़ा न रखवाना चाहिए।

रोज़े की तारीफ़ – सुबह सादिक़ से गुरूब आफ़ताब तक नियत के साथ खाने पीने और बीवी के पास जाने से रुके रहने का नाम रोज़ा है।

नियत – रोज़े के लिए नियत करना शर्त है जब दिल में यह ध्यान हो कि आज मेरा रोज़ा है तो नियत हो गयी, मगर ज़ुबान से यह कह ले तो अच्छा है "बिसौमि ग़दिन नवैतु लिल्लाहि तआ़ला।" या उर्दू में कह दे कि – ऐ अल्लाह मैं कल तेरा रोजा रखूंगा। रमज़ान शरीफ के रोज़े में तुलुए आफ़ताब से लेकर दोपहर से एक घंटा पहले तक जरूर नियत कर लें।

सहर व इफ़्तार – सहरी खाना सुन्नत है और ताख़ीर करके खाना मुसतहब है, लेकिन इतनी ताखीर न करें कि सुबह होने को शक होनें लगे, इतनी ताख़ीर करना कि सुबह होने का शक जाये मकरूह व नापसन्दीदा है। इफ़्तार में जल्दी करना सुन्नत है जब सूरज यक़ीनन डूब जाये तब देर करना मकरूह है। इफ़्तार में अब्र के रोज़ थोड़ी ताख़ीर करना बेहतर है। इफ़्तार की दुआ – अल्लाहुम्म लक सुमतु व बिक आमन्तु व अला रिज़्क़िक अफ़्तरतु। छुआरे या किसी मीठी चीज़ या पानी से इफ़्तार करना बेहतर है।

रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ें – जिन चीज़ों से रोज़ा टूट जाता है उनकी दो क़िस्में हैं (1) एक वह जिन से क़ज़ा वाजिब होती है। किसी ने जबरदस्ती

रोज़ेदार के मुंह में कोई चीज़ डाल दी और वह हलक़ से उतर गई। यह समझकर खाया पिया कि अभी सुबह नहीं हुई है और बाद को मालूम हुआ कि सुबह हो चुकी थी। कसदन मुंह भर क़ै करे, रोज़ा याद था और कुल्ली करते वक़्त बिला क़स्द पानी हलक़ से उतरगया, कन्कर, पत्थर, रूई, काग़ज़ का टुकड़ा निगल गया, कान में तेल डाला, दांतों से निकले हुए खून को निगल लिया, आफ़ताब गुरूब होने का ख़याल करके रोज़ा इफ़तार कर लिया, अगर चे अभी दिन था, भूले से कुछ खा लिया और यह समझकर कि रोज़ा टूट गया, फिर क़सदन खाया पिया ऐसी सूरतों में रोज़ा टूट गया तो इसकी क़ज़ा रखनी पड़ेगी, क़ज़ा यह है कि एक रोज़े के बदले एक रोजा रखा जाये।

क़ज़ा व कफ़्फ़ारः — रमज़ान में रोज़ा रखकर किसी ऐसी चीज़ को जो ग़िज़ा या दवा के तौर पर इस्तेमाल की जाती है कसदन खा पी लिया या क़सदन सोहबत की (कामिल या नाक़िस) इन सूरतों में क़ज़ा व कफ़्फ़ारह दोनों वाजिब हो जाते हैं। कज़ा की तारीफ ऊपर की जा चुकी है। कफ़्फ़ारह यह है कि लगातार दो महीने के रोज़े रखे अगर बीच में कोई रोज़ा क़ज़ा हो जाये तो अज़ सरे नौ दो माह के रोज़े रखे अगर रोज़े न रख सके तो साठ मिसकीनों को दोनों वक्त हस्बे हैसियत खाना खिलायें।

जिन सूरतों में रोजा खोल डालना दुरुस्त है — कोई शख्स यकायक ऐसा बीमार पड़ जाय कि अगर रोज़ा न तोड़ेगा तो जान पर बन आयेगी या मरज़ बढ़ जायेगा या भूख–प्यास इतनी बढ़ गई कि जान का खौफ है तो रोज़ा खोल लेना दुरुस्त है बाद में कज़ा रख लें। औरत अगर हैज़ा व निफ़ास में मुब्तला हो जाये तो ऐसी सूरत में रोज़ा दुरुस्त नहीं कज़ा रखनें होंगे।

जिन सूरतों में रोज़ा नहीं टूटता — भूल कर कुछ खा–पी लिया, भूल कर सोहबत की, आप ही गुबार या धुंआ या मक्खी हलक़ के अन्दर चली गई, तेल या सुरमे का असर हलक़ में मालूम हुआ इत्र, फूल और दीगर खुशबू सूंघी। गुस्ल किया और पानी की तरी मालूम हुई, दिन भर नापाक रहा, तिल या उसके बराबर कोई चीज चबाई या निगल गया मगर उसका मज़ा हल्क़ में मालूम नहीं हुआ, थूक या नाक की रतूबत निगल गया इन तमाम सूरतों में रोजा नहीं टूटा।

जिन सूरतों में रोज़ा मकरूह हो जाता है :–

झूठ बोलना, ग़ीबत करना, गाली–गलौज बकना, किसी चीज़ का मुंह में डाले रखना, मुंह में बहुत सा थूक जमा करके निगल जाना, कुल्ली करने में ज़ियादती करना, कोयला चबाकर मंजन से दांत मांजना (मिसवाक करना मकरूह नहीं है, चाहे उसकी कड़वाहट हल्क़ में क्यों न मालूम हो) दिन भर नापाक रहना, यह सब उमूर रोज़ा में मकरूह हैं।

तरावीह — सुन्नते मुअक्किदह है। बीस रकआत नमाज़ तरावीह दो दो रकअत करके पढ़ना चाहिए। जमाअत के साथ मस्जिदों में पढ़ना चाहिए माह रमजानुल मुबारक में एक कुरआन शरीफ़ का खत्म करना सुन्नत है, इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ऐतिकाफ़ — रमज़ानुल मुबारक के महीने में 20 रमज़ान की शाम से ईद का चान्द देखने तक मस्जिद में ऐतिकाफ़ करना ऐसी सुन्नते मुअक्किदा है कि बस्ती का कोई एक आदमी भी एतिकाफ़ कर लेगा तो सब की ओर से सुन्नत अदा हो जायेगी, कोई गुनाहगार न होगा वरना सब सुन्नत छोड़ने के गुनाहगार होंगे।

अल्लाह तआला सब मुसलमानों को रोज़ा रखने और दीन के तमाम उमूर पर अमल करने की तौफ़ीक़ बख्शे, आमीन।

.....(शेष पृष्ठ ११ का) .....

थी और सुलभ भी थी और भारत की जलवायु और यहां के लोगों के मिज़ाज के अनुकूल भी । इसलिए इसका बड़ी तेजी के साथ विकास हुआ और इसने इस देश की एक बड़ी आबादी (विशेषकर ग़रीब ग्राम वासियों) की बड़ी सेवा की। भारत के चिकित्सकों ने अपनी बुद्धि परिश्रम और अनुभव से इसको चार चांद लगा दिये। अन्तिम दिनों में दिल्ली और लखनऊ इसके दो प्रमुख केन्द्र थे। अब तो सारे विश्व में भारत ही इसका केन्द्र रह गया है और इसी के दम से ही यह चिकित्सा पद्धति जीवित है।

मुसलमानों के दस उपहार

विख्यात भारतीय इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार ने अपने एक लेख में जो कलकत्ता की अंग्रेजी पत्रिका "प्रबुद्ध भारत" में प्रकाशित हुआ था, मुसलमानों के उन दस उपहारों का उल्लेख किया है जो उन्होंने भारत को दिये हैं। इन दस का उल्लेख ऊपर आ चुका है, शेष यह है –

1. भारत का सम्पर्क बाहर की दुनिया से।
2. राजनीतिक एकता और पहनावे व संस्कृति की समता विशेषकर उच्च वर्गों में।
3. एक मिली जुली सरकारी भाषा और गद्य लेखन की सरल शैली जिसके विकास में हिन्दू–मुस्लिम दोनों ने हिस्सा लिया।
4. केन्द्र सरकार के तहत क्षेत्रीय भाषाओं का विकास ताकि अमन और खुशहाली आम हो और साहित्यक व सांस्कृतिक विकास के अवसर प्राप्त हों।
5. समुद्र–मार्ग से अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार का नवीनीकरण जो पहले दक्षिणी भारत के वासियों के हाथ में थी और लम्बे समय से निलम्बित पड़ी थी।,
6. भारत की नव–सेना का गठन।

ज्योतिर्मय मशाल

एक भारतीय विद्वान श्री एन.एस. मेहता आई.सी.एस. अपने एक अंग्रेजी खेल में "भारतीय सभ्यता और इस्लाम" शीर्षक के अन्तर्गत इस्लाम के उपहारों का उल्लेख इस प्रकार करते हैं –

"इस्लाम यहां केवल एक ज्योतिर्मय मशाल लाया था जिसने प्राचीन काल में, जबकि प्राचीन सभ्यतायें पतनों–मुखी हो रही थीं, और पाचन लक्ष्य मात्र बौद्धिक आस्थायें बन कर रह गया था, मानव जीवन पर छाये हुए घटा टोप अंधेरे को दूर कर दिया। अन्य देशों की तरह भारत में भी राजनीतिक से अधिक विचारों की दुनिया में इस्लाम की विजय की परिधि बढ़ी । आज की इस्लामी दुनिया भी एक आध्यात्मिक बिरादरी है जिसको अर्द्धतवाद या एकेश्वरवाद (तौहीद) और समता (मसाचात) के मिले जुले ईमानी रिश्ते ने आपस में जोड़ रखा है। दुर्भाग्यवश इस देश में इस्लाम का इतिहास शताब्दियों तक हुकूमत से जुड़ा (सम्बद्ध) रहा जिसके कारण इस्लाम के असली आकार–प्रकार पर पर्दा पड़ गया, और उसके उपकार निगाहों से ओझल हो गये।"

इतिहास के इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए साफ़ ज़ाहिर है कि मुसलमानों ने इस महान देश को जिस क़दर फ़ायदा पहुंचाया वह उस फ़ायदे से बहुत अधिक है जो भारत ने उन्हें पहुंचाया। मुसलमानों का आगमन इस देश के इतिहास में तरक्की व खुशहाली के एक नये दौर की शुरूआत थी जिसे भारत कभी भुला नहीं सकता।

एक पवित्र गुप्त रात्रि ..... शबे क़द्र

मुहम्मद अली जौहर

शबे क़द्र क्या है :–

रमज़ानु–ल–मुबारक की रात्रियों में से एक रात्रि शबेक़द्र कहलाती है। कुरआन शरीफ में उसको हज़ार महीनों से उत्तम बताया गया है। हज़ार महीनों में 83 वर्ष और चार महीने होते हैं इस रात्रि के विषय में दुर्रे मन्सूर में हज़रत अनस रज़ि० के द्वारा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का कथन मौजूद है कि शबे क़द्र अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को प्रदान की है पहली उम्मतों को यह रात्रि नहीं दी गयी। कुछ रिवायतों में इसका कारण यह बताया गया है कि अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स० ने पहली उम्मतों की उम्रें को देखा कि बहुत–बहुत हुई हैं और आप स० की उम्मत की उम्रें थोड़ी हैं तो आप स० को दुख हुआ इसलिए यह रात्रि प्रदान की गयी। अगर किसी भाग्यवान को दस रात्रियां भी मिल जायें और इनको वह इबादत में व्यतीत कर दें तो उसने आठ सौ तैंतीस वर्ष चार महीने इबादत की।

शबे क़द्र का अर्थ :–

शब फ़ारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है रात्रि और क़द्र का अर्थ होता है श्रेष्ठ, प्रतिष्ठा आदि इस रात्रि को शबे क़द्र कहने का कारण इसका श्रेष्ठ एवं सर्वोच्च होना है। क़द्र का दूसरा अर्थ तकदीर (भाग्य) और आदेश के है अर्थात इस रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक को कुछ किसी के भाग्य में लिखा हुआ है वो फिरिश्तों के सुपुर्द कर दिया जाता है जो फिरिश्ते संसार में अल्लाह का आदेश लागू करते हैं।

शबे–क़द्र का महत्व :–

इस पवित्र रात्रि के लिए कुरआन मजीद में कहा गया है "हमने कुरआन शरीफ को शबे क़द्र में उतारा" अर्थात "लोहे महफ़ूज़" से कुरआन इसी रात्रि में उतारा गया और आगे कुरआन में इस रात्रि का महत्व इन शब्दों में बताया गया है "क्या आप जानते हैं कि शबे कद्र क्या है? शबे क़द्र हज़ार महीनों से श्रेष्ठ है इस रात्रि में फिरिश्ते और जिब्रील अ० अपने पालनहार की आज्ञा से हर कार्य पर उतरते हैं यह रात्रि सरापा सलामती है सूर्य उदय होने तक"।

आप स० ने फरमाया कि शबे क़द्र में हज़रत जिब्रील फिरिश्तों के एक गिरोह के साथ उतरते हैं जिसको जिक्र व इबादत में लगा पाते हैं उसके लिए रहमत की दुआ करते हैं। मजाहिरे हक़ में लिखा है कि इसी रात्रि में फिरिश्ते पैदा हुए और इसी रात्रि में हज़रत आदम अलै० का तत्व एकत्र होना आरम्भ हुआ इसी रात्रि में जन्नत में वृक्ष लगायेगये इसी रात्रि में हज़रत आदम अ़लै० की दुआ कुबूल हुई। यह रात्रि सरापा सलामती है अर्थात फिरिश्तों की तरफ से मोमिनों पर सलाम होता रहता है फिरिश्तों की एक टुकड़ी जाती है तो दूसरी आ जाती है।

शबे क़द्र को गुप्त रखने का रहस्य :

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं कि प्यारे नबी स० इसलिए बाहर आये कि हमें शबे क़द्र की खबर दें मगर दो मुसलमानों में झगड़ा हो रहा था आप स० ने फरमाया मैं इसलिए आया था कि तुम्हें शबे क़द्र की खबर दूं मगर फुलां–फुलां में झगड़ा हो रहा था जिसकी वजह से उसकी नियुक्ति उठा ली गयी सम्भव है कि गुप्त रखना अल्लाह तआला के ज्ञान में बेहतर हो इसलिए अब इस रात्रि को नवीं, पाँचवी और सातवीं रात्रियों में तलाश करो।

(बुख़ारी शरीफ)

अर्थात दो मुसलमानों के झगड़ने के कारण आप स० के दिमाग से शबे क़द्र की नियुक्ति मिटा दी गयी जो वस्तु जितनी मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण होती है वह उतने ही परिश्रम से प्राप्त होती है इसलिए इसका समय गोल मोल कर दिया गया है आप स० का कथन है कि क्या मालूम इसका गुप्त रखना ही तुम्हारे लिए बेहतर हो तात्पर्य यह है कि अगर दिन मालूम हो जाता तो इतनी क़द्र न रहती। इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि इसको गुप्त रखने में यह भेद है कि इसके चाहने वाले पूरे रमज़ाने इबादत को महत्व देंगे।

(इब्ने कसीर भाग 4 पेज नं. 534)

अल्लामा जमख़्शरी फ़रमाते हैं कि शायद शबे क़द्र को गुप्त रखने में यह मसलहत है कि इसका तलाश करने वाला वर्ष भर की अधिकतर रात्रियों में इसको तलाश करे ताकि उसकी इबादत का सवाब अधिक से अधिक हो जाये दूसरे यह कि अगर लोगों को मालूम हो जाता तो इसी रात्रि पर भरोसा कर लेते और दूसरी रात्रियों की इबादतों में सुस्ती करते इसलिए इसको गुप्त कर दिया गया। (उमदतु–ल–कारी भाग 1 पेज नं. 263)

शबे क़द्र की निशानियां –

हदीसों में शबे क़द्र की कुछ निशानियां बताई गयी हैं जिस रात्रि में वह निशानियां पाई जाये समझलो वह शबे क़द्र है।

- सबसे सही पहचान यह है कि उस रात्री की सुबह को जब सूर्य उदय होता है तो चौदहवीं रात्रि के चन्द्रमा की तरह बिना किरणों के आम दिनों से किसी कद्र कम उज्जवल होता है। (अ़ैनी शरह बुख़ारी भाग 5 पेज नं. 365)
- वह रात्रि खुली हुई उज्जवल होती है – (मुस्नदे अहमद, अ़ैनी 365)
- इस रात्रि में गगन से सितारे

टूट-टूट कर इधर उधर नहीं जाते।

(इब्ने कसीर भाग 4 पेज नं. 431)

● इमाम इब्ने जरीर तिबरी रह० ने कुछ बुजुर्गों से अनुकरण (नकल) किया है कि इस रात्रि में हर वस्तु धरा पर झुक कर सज्दा करती है और फिर अपनी असली अवस्था में आ जाती है।

(अ़ैनी भाग 5 पेज नं. 365)

● कुछ मुस्लिम विद्वानों का अनुभव है कि इस रात्रि में सागरों, कुओं का खारा जल मीठा हो जाता है।

(अलर्उफुरिशिज़्जी पेज नं. 327)

● कुछ लोगों को विशेष प्रकार की रोशनी आदि भी नज़र आती है लेकिन वह अपने अपने हालात पर है यह कोई खास निशानी नहीं है आम लोगों को इसके चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।

(रमज़ान क्या है पेज नं० 16०)

शबे क़द्र कब आती है –

हज़रत आ़यशा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद स० ने फ़रमाया कि शबे क़द्र को रमज़ान के आख़िर अ़शरे की ताक़ रात्रियों में तलाश करो

(बुख़ारी शरीफ)

आखिर अ़शरह इक्कीसवीं रात्रि से आरम्भ होता है अर्थात शबे क़द्र की तलाश 21, 23, 25, 27, 29 की रात्रियों में की जानी चाहिए। इमाम अबू हनीफ़ा रह० का कथन है कि शबे क़द्र तमाम रमजान में घूमती रहती है इमाम मुहम्मद व इमाम यूसुफ रह० का कथन है कि रमज़ान की किसी एक रात्रि में है जो नियुक्त है मगर मालूम नहीं इमाम शफ़ई रह० का कथन है कि इक्कीसवीं रात्रि में होना निकट है इमाम मालिक और इमाम अह़मद बिन हम्बल का कथन है कि आखिर अ़शरे की ताक़ रात्रियों में घूमती रहती है और जमहूर उलामा रह० की राय है कि सत्ताईसवीं रात्रि में अधिक उम्मीद है ग़ुनीयतुत्तालिबीन में हज़रत अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० ने लिखा है कि कुरआन में सूरह क़द्र में "हिया" अर्थात "यह रात्रि" का शब्द सत्ताईस शब्दों के पश्चात आता है इससे मालूम हुआ कि शबे क़द्र रमजान की सत्ताईसवीं रात्रि में होती है।

(ग़ुनीयुतुत्तालिबीन पेज नं. 378)

शबे क़द्र के विशेष अ़मल :-

हज़रत आ़यशा रज़ि० ने आप स० से पूछा कि या अल्लाह के रसूल अगर मुझे शबे क़द्र का पता चल जाये तो क्या दुआ़ मांगूं यह दुआ बताई "अल्लाहुम्म इन्न अ़फ़्वुन तुहिब्बुल अ़फ़्व फ़अ़फ़ु अ़न्नी" अर्थात ऐ अल्लाह तू बेशक माफ करने वाला है और माफ करने को पसन्द करता है। बस मुझको भी माफ़ फ़रमादे।

(तिरमिज़ी व मिश्कत)

इस रात्रि में जाग कर नमाज़, तिलावत, दुरूद शरीफ और दुआओं आदि का एहतिमाम किया जाये इस रात्रि में कोई अमल विशेष नहीं है थोड़े-थोड़े सभी अमल करने चाहिए ताकि सभी का सवाब मिल जाये, इस रात्रि में मस्जिदों में एकत्र होकर तकरीरें आदि करना या कराना आदि से अगरचे जागने में आसानी होती है मगर इस पर पाबन्दी भी नहीं करनी चाहिए।

मनुष्यता के काल

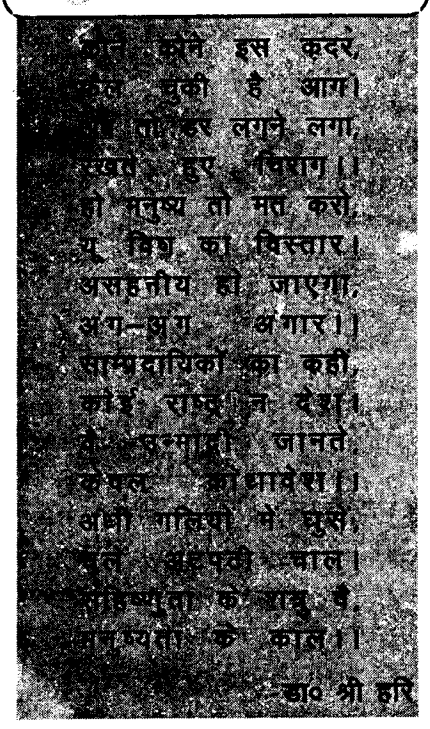

[illegible] कोने इस क़दर,
[illegible] चुकी है आग।
[illegible] तो डर लगने लगा,
[illegible] हुए चिराग।।
[illegible] मनुष्य तो मत करो,
यूं विष का विस्तार।
असहनीय हो जाएगा,
अंग-अंग अंगार।।
साम्प्रदायिकों का कहीं,
कोई राष्ट्र न देश।
[illegible] उन्माद ही जानते,
केवल [illegible] आवेश।।
अंधी गलियों में घुसे,
[illegible] अटपटी चाल।
सहिष्णुता के शत्रु हैं,
मनुष्यता के काल।।

-डा० श्री हरि

वसुधैव कुटुम्बकम्

(अलखल्कू अयालुल्लाहि)

-मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी

अगर यह सच है कि सारे इन्सान चाहे गोरे हों या काले, लाल हों या पीले, अमीर हों या ग़रीब, पूरब के हों या पच्छिम के, चीन के हों या फिलिस्तीन के, बोली अंग्रेजों की बोलने वाले हों या बर्मा वालों की, औलाद एक आदम और एक हव्वा की हैं, तो यह बात साफ है और नतीजा ज़ाहिर है कि सब आपस में भाई-भाई हैं, एक ही पेड़ की डालियां हैं, एक ही दरिया की लहरें हैं, एक ही फूल की पत्तियां हैं। और यह अक़ीदा (आस्था) भू-तल के मुसलमानों का, ईसाइयों का, यहूदियों का तो है ही, दूसरे भी जितने धर्म हैं सबने किसी न किसी तरह इसी को माना है, शब्दों के उलट फेर, परिभाषिक शब्दावलियों (इस्तलाहात) के हेर फेर से कहीं सच्चाइयां थोड़ी ही बदल जाती हैं।

और जब मां-बाप एक ठहरे, चाहे वह एक पीढ़ी ऊपर हो या सौ दो सौ हज़ार पीढ़ियां ऊपर हो, तो भाई बनने में कोई कसर बाक़ी रह गई? रही स्वाभाव की भिन्नता, मिज़ाज व पसन्द की भिन्नता, रंग व रूप की विभिन्नता, आस्था और विचारों की विभिन्नता तो वह क्या सगे भाइयों में नहीं होती, और पूरे ज़ोर के साथ नहीं होती? लेकिन इसके बावजूद भी भाई भाई ही रहते हैं, एक दूसरे के हक़ में पत्थर दिल क़साई नहीं बन जाते। तो फिर क़ौमों और मुल्कों की विभिन्नता बन्धुत्व एकता की राह में इससे अधिक क्यों अवरोधक बने, रूकावट डाले। यह विभिन्नता चाहे भाषा और बोली की हो या रंग व रूप की, यहां तक कि मज़हब की विभिन्नता की, इसे आख़िर इसके दर्जे से अधिक क्यों महत्व दीजिए, और इसे इन्सान की सम्मिलित इन्सानियत या आदमज़ादों की आम आदमियत पर क्यों हावी होने दीजिए?

अनुवाद : मो० हसन अन्सारी

आदर्श चरित्र

डा० मु० इज्तिबा नदवी

रसूलुल्लाह सल्ल. को हिजरत (मक्का से मदीना प्रस्थान) किए तेरह वर्ष बीत चुके हैं प्रथम ख़लीफा हज़रत अबू बक्र (रज़ि) का देहान्त हो चुका है। अपना उत्तराधिकारी बनाकर इस्लामी शासन का उत्तरदायित्व हज़रत उमर फ़ारूक (रज़ि)के सुपुर्द इस विश्वास व भरोसे के साथ कर दिया है कि खिलाफ़त और इस्लाम के प्रचार प्रसार का काम सब से ज़ियादा भली भांति करने की योग्यता वही रखते हैं। मदीना के लोग इसी विश्वास के साथ हज़रत उमर रज़ि० की बैअत करने के बाद मस्जिदे नबवी में जमा हैं। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु मिम्बर पर आसीन होते हैं और सम्बोधित करना शुरू करते हैं :

"लोगो ! जान लो मेरी सख़्ती दो गुनी हो गयी है, लेकिन यह सख़्ती मुसलमानों पर अत्याचार करने वालों पर होगा। रहे ठीक रास्ते पर चलने वाले और भले दीनदार लोग, तो मैं उनके लिए हर एक से अधिक नर्म हूंगा। किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति पर अत्याचार न करने दूंगा, यहां तक कि उस का एक गाल जमीन पर रखूंगा और दूसरे गाल पर अपना पांव रखूंगा जब तक कि वह सत्य को स्वीकार न कर ले। मैं इस सख़्ती के बावजूद पवित्र आचरण और उत्तम गुणों वाले लोगों के लिए अपनी गर्दन झुकाए रहूंगा और विनम्रता का व्यवहार करूंगा।"

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि. ने अपने इन शब्दों में अपनी शासन प्रणाली का पूरा नक़्शा प्रस्तुत कर दिया। जिस पर आप अपने कार्यकाल में पूरी तरह जमे रहे। आप ने शासन चलाने की एक ऐसी अनोखी मिसाल स्थापित की, जो सदैव इस दुन्या के लोगों के लिए नमूने के रूप में मौजूद रहेगी। विजयों का जो क्रम हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने आरम्भ किया था, उसका क्षेत्र बढ़ाकर मिश्र, शाम, ईरान और इराक़ को इस्लामी राज्य का अंग बना दिया। राज्य की व्यवस्था स्थिर, न्याय और जनता की सुरक्षा व शान्ति को सशक्त आधारों पर स्थापित किया। आय के साधन बढ़े और हर ओर खुशहाली आ गयी। इस के बावजूद स्वयं सदैव तंगी व फ़ाक़ा, बलिदान व फ़क़ीरी की इतनी बड़ी मिसाल थे कि दुन्या आप को सदैव याद करती रहेगी।

आप ज़ैतून के तेल और रोटी के अलावा कुछ और न खाते। एक बार कहा कि मैंने यह प्रतिज्ञा की है, कि मैं उस समय तक घी और गोश्त नहीं खाऊंगा जब तक कि ये चीजें आसानी से राज्य के हर व्यक्ति को उपलब्ध न हो जाएं।

एक बार आपके खाने में शहद या घी रखा गया। आप ने पूछा कि क्या सारे मुसलमानों को शहद मिल रहा है? जवाब मिला कि: 'नहीं, तो आंखों से आंसू बहने लगे और कहा: 'इस खाने को ले जाओ, इसे मैं भी नहीं खा सकता।'

मानव इतिहास में हज़रत उमर रज़ि. पहले शासक हैं जिन्होंने दिन में ही नहीं रातों को जाग कर भी अपनी जनता के दुख सुख जानने और कष्टों के निवारण करने का काम सीधे अपने ज़िम्मे लिया। इसका एक ऐसा उदाहरण स्थापित किया जो क़ियामत तक नमूना बना रहेगा। तो आइए देखें।

मदीना पूरी इस्लामी दुन्या के लोगों का धड़कता हुआ दिल और उम्मीदों का केन्द्र बना हुआ है। रूम व ईराम, शाम व मिश्र और दुन्या के अन्य भागों से काफ़िले और ज़रूरत मन्द इस नगर का रुख करते हैं। परदेसी कभी–कभी आबादी के बाहर पड़ाव डाल देते हैं। और सुबह की प्रतीक्षा करते हैं। हज़रत उमर रजि० के सेवक असलम रज़ि० बताते हैं कि मैं एक रात उमर रज़ि० के साथ निकला। वे मदीना से काफी दूर निकल गए। हमारा उद्देश्य बाहर और दूर की आबादियों की देख भाल करना था। अचानक हमें एक जगह आग जलती हुई दिखाई दी। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा: 'लगता है कि कोई काफिला है, रात और ठंड के कारण आग नहीं बुझा सका है, चलो वहां देखें शायद उनको किसी चीज़ की ज़रूरत हो।'

हम तेज़–तेज़ चलकर वहां पहुंचे। क्या देखते हैं कि एक महिला है, उसके साथ कुछ बच्चे हैं, आग पर एक हांडी रखी हुई है और बच्चे रो रहे हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने सलाम किया और महिला से पूछा क्या मामला है? महिला ने जवाब दिया ठंड और रात के कारण हम यहां ठहर गए।' पूछा 'ये बच्चे क्यों रो रहे हैं?' उत्तर मिला 'भूख के कारण रो रहे हैं।' पूछा इस हांडी में क्या है?' जवाब मिला 'केवल पानी है, इन को बहलाने और चुप कराने के लिए रख दिया है ताकि ये सो जाएं। खुदा उमर को समझे।' यह कहते हुए वह हज़रत उमर को कोसने और बुरा भला कहने लगी।

हज़रत उमर रज़ि. ने कहा खुदा तेरा भला करे, भला उमर को क्या मालूम कि तुम किस हाल में हो ? औरत ने बड़े आक्रोष से कहा वे हमारे ख़लीफ़ा हैं और हमारे से अनभिज्ञ हैं?'

असलम कहते हैं कि अमीरूल मोमिनीन ने मुझ से कहा 'चलो चलें।' हम बड़ी तेज गति से वापस हुए और गोदाम से आटे की एक बोरी निकाली। घी का एक डिब्बा लिया और मुझसे कहा यह सामान मेरी पीठ पर लाद दो।' मैंने कहा अमीरूल मोमिनीन यह काम मेरा है। मैं ले चलता हूं।' आपने कहा खुदा तुम्हारा भला करे क्या तुम क़ियामत के दिन मेरा बोझ उठाओगे?

ये दूसरे खलीफ़ा हैं जिनके नाम से रूम व ईरान की हुकूमतें कांपती हैं। देखिए अपनी पीठ पर आटे की बोरी और

घी का डिब्बा लादे हुए उस परदेसी औरत के पड़ाव की ओर तेज़ी से दौड़े चले जा रहे हैं। असलम का कहना है कि खेमे में बोरी रख कर थोड़ा सा आटा निकाला, औरत से कहा कि मैं अभी खाना तैयार किए देता हूं। उसकी हांडी के नीचे फूंक मार मार कर आग जलाना शुरू कर दिया। आप की दाढ़ी बड़ी और घनी थी। मैं देख रहा था कि धुवां दाढ़ी के अन्दर से निकल कर हवा में मिल जाता है। खाना स्वयं ही तैयार किया और हांडी से बर्तन में निकाल दिया और फिर कहने लगे बच्चों को खिलाइये मैं खाना ठंडा करता रहूंगा।' खाना ठंडा करके देते रहे, यहां तक कि बच्चों का पेट भर गया। जो खाना बचा वह उस औरत को दे दिया और वापसी के लिए खड़े हो गए।

असलम कहते हैं कि जब अमीरूल मोमिनीन वापस जाने लगे तो औरत कहने लगी 'अल्लाह तुमको इस उपकार का सुफल दे, खिलाफत के योग्य तो तुम थे, न कि उमर। आपने कहा भलाई की दुआ करो। तुम सुबह को अमीरूल मोमिनीन उमर के पास आना, वहां तुम मुझ को पाओगी और इन्शाअल्लाह तुम्हारे गुजारे के लिए भी उचित फैसला किया जाएगा।'

वहां से निकल कर अमीरूल मोमिनीन थोड़ी दूर गए और ऐसी जगह छुप कर बैठ गए कि खेमे के अन्दर का हाल देख सकें और उनको कोई देख न सके। मैंने मालूम कयिा कि क्या और कुछ काम है? आप चुप रहे। इतने में बच्चे खेलने कूदने और एक दूसरे को छेड़ छाड़ करने लगे और थोड़ी देर के बाद आराम से मीठी नींद सो गए। अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने खुदा का शुक्र अदा किया और उठ खड़े हुए। मुझको कहा 'असलम ! भूख ने इन बच्चों को दुखी कर दिया था और इसीलिए वे रो रहे थे, मैंने इस अन्तिम दृश्य को देखे बिना जाना अच्छा न समझा।

आइए! ज़रा फ़ारूक़े आज़म रज़ि० की उच्च मानव प्रेम और जनसेवा की भावना की एक और झलक देखते चलें।

एक दिन बाज़ार से गुज़र रहे थे, एक बूढ़े पर नज़र पड़ी। वह सदक़ा ख़ैरात के लिए हाथ फैलाए घूम रहा था। आगे बढ़कर उससे पूछते हैं 'ऐ बूढ़े तुम कौन हो और क्या चाहते हो?' उसने कहा, मैं एक यहूदी हूं, बुढ़ापे के क़ारण कमा नहीं सकता, ज़िज़्या की रक़म अदा करने और अपने पेट भरने के लिए भीख मांग रहा हूं। हज़रत उमर रज़ि. का दिल भर आया और उससे कहा 'बड़े मियां हमने तुम्हारे साथ न्याय नहीं किया। हमने तुमसे जवानी में ज़िज़्या वसूल किया ओर बुढ़ापे में बे सहारा छोड़ दिया।' यह कह कर उस का हाथ पकड़ा और अपने घर ले आए। जो कुछ घर में था लाकर दे दिया। उसके बाद सरकारी कोष के इन्चार्ज को निर्देश दिया इन बड़े मियां और इन जैसे अन्य बूढ़े और कमज़ारों से ज़िज्या न लिया जाए और उनके लिए बैतुलमाल से इतना वज़ीफा निर्धारित कर दिया जाए कि जो इनके और इनके घर वालों के गुज़ारे के लिए पर्याप्त हो।'

अन्त में उनके अपने घर की एक अनोखी घटना भी देख लीजिए। मदीना की गलियों से गुज़र रहे हैं, आपके बेटे अब्दुल्ला साथ चलरहे हैं। अचानक एक छोटी कमज़ोर सी बच्ची लड़खड़ाती हुई गिरती पड़ती नज़र आई फरमाया ओह कितनी लाचार, बेबस और परेशान है? इस बच्ची को कोई जानता है? आपके बेटे ने कहा क्या आप इसे नहीं पहचानते?' फरमाया नहीं। बेटे ने कहा यह तो आपकी अपनी बच्ची है। फ़रमाया मेरी कौन सी बच्ची? फरमाया यह अब्दुल्लाह बिन उमर की लड़की है। यानी वह हज़रत उमर की पोती थी। हज़रत उमर रज़ि. ने मालूम किया इसका यह हाल कैसे हो गया है? बैटे ने कहा आपने इन पर तंगी कर रखी है। आपने फरमाया खुदा की क़सम मेरे पास से तुम्हें वही मिलेगा जो सारे मुसलमान को मिलता है, चाहे पूरा पड़े या तंगी से जीवन बसर हो। यह मेरे और तुम्हारे लिए अल्लाह का हुक्म है। मेरा साहस नहीं कि मैं उसके आदेश का उल्लंघन करूं। क्या इन्सानी इतिहास इस का कोई उदाहरण पेश कर सकता है ?

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन काल की एक घटना

मदीना मुनव्वरा की एक गली में महान सहाबी हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० और हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि० के बीच किसी बात पर तकरार हो गयी। बात इतनी बढ़ गयी कि क्रोध वश अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० ने हज़रत बिलाल रज़ि० को सम्बोधित करते हुए उनको 'ऐ काली कलौटी के बच्चे' कह दिया।

हज़रत बिलाल नबी सल्ल० की सेवा में उपस्थिति हुए और जनाब अबूज़र रजि० की शिकायत की। नबी सल्ल० ने हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० से पूछ ताछ की। बात साबित हो जाने पर आपने फ़रमाया: 'अबूज़र तुम्हारे अन्दर अभी तक अज्ञानता का नशा बाक़ी है, यह (काले) लोग तुम्हारे भाई हैं।' हज़रत अबूज़र रज़ि० बड़े दुखी और लज्ज़ित हुए। और उन्होंने तौबा की और हज़रत बिलाल रज़ि० से माफी ही नहीं मांगी बल्कि उन से यह विनती भी की कि वे अपने पांव उनके गाल पर रखें ताकि फिर कभी इस अज्ञानता की हरकत का दुस्साहस न हो सके।

यहां तो मान, सम्मान और अपमान का आधार ईमान पर और कर्म पर है, न कि रंग व रूप और जाति या राष्ट्र पर। कुरआन का इर्शाद है :

जो कण भर भी नेकी करेगा वह उसे देखेगा और जो कण भर भी बुराई करेगा वह उसे पाएगा।' (सूरः ज़िलज़ाल)

मानवता से ख़ाली मानव
मानव से लड़ जाता है
कर्म को उसके देख के फिर तो
दानव भी शर्माता है
मावनता सन्देश को लेकर
तुम को उस तक जाना है
सत्य संदेशा पाके दानव
मानव फिर बन जाता है।

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

सूर–ए–सज्दा न० 32 की आयत न. 13 का अनुवाद इस प्रकार है :–

"मैं नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) जिन्नों और इन्सानों से जहन्नम को भर दूंगा।

सूर–ए–रहमान नं. 55 की आयत नं. 56 का अनुवाद पढ़िये :–

"उन जन्नतों में नीची निगाह वाली हूरें होंगी जिन को पाने वाले जन्नतियों से पहले उनको न किसी इन्सान ने प्रयोग किया होगा न जिन्न ने।"

इस आयत में तो यह संकेत दिखता है कि जिन्न भी जन्नत में होंगे और जो हूरें जन्नतियों को दी जाएंगी उनको इससे पहले न जिन्नों ने हाथ लगाया होगा न इन्सानों ने।

.इस अंक और इस से पहले के अंक में पवित्र कुर्आन की जो आयतें प्रस्तुत हुई उनसे निम्न लिखित बातें ज्ञात हुई :–

1. इन्सान और जिन्न दो अलग अलग सृष्टि है।

2. जिन्न इन्सानों से पहले पैदा किये गये।

3. जिन स्वक्षतर आग से पैदा किये गये।

4. इन्सानों की भांति जिन्नों पर भी इस्लामी विधान (शरीअ़त) लागू है।

5. जिन्नों के लिए भी यही कुर्आन है, अहकाम (आदेश) वाली आयतों के अर्थ तथा उनपर अनुकरण में विभिन्नता हो सकती है।

6. कुछ जिन्नों को अल्लाह तआ़ला ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मजलिस में पहुंचाया और उन्होंने अदब से कुर्आन सुना।

7. जिन जिन्नों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुर्आन सुना और शरीअ़त का ज्ञान प्राप्त किया वह अपनी जिन्न क़ौम के लिये मुन्ज़िर (अर्थात) नाफ़रमानी (अवज्ञा) पर अल्लाह की पकड़ और उसके प्रकोप से डराने वाले या मुबल्लिग़ अर्थात इस्लाम पहुंचाने वाले बन गये।

8. अच्छे कामों का हुक्म (आदेश) और बुरे कामों से मनाही का कार्य जिन्नों में भी है।

9. जिन्नों से भी हिसाब किताब होगा और अवज्ञाकारी जिन्न जहन्नम में डाले जाएंगे जबकि मोमिन जिन अज़ाब से बचा दिये जाएंगे और जन्नत में रहेंगे।

10. जन्नत में जिनों के लिये भी हूरें होंगी।

कुछ सम्बन्धित बातें :–

जब जिन्न और इन्सान की सृष्टि तथा बनावट में महान अंतर है तो जन्नत के पुरस्कारों से आनन्द लेने में भी अंतर होगा और दोनों को उनकी अस्तित्व के अनुसार पुरस्कार मिलेंगे ताकि वे उनसे आनन्दित हों सकें या फिर दोनों की योग्यताएं सामान्य कर दी जाएंगी। (वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु)

जब जिन्न अपनी बनावट और अपने तत्व के अनुसार इतने सूक्ष्म हैं कि इन्सान उनको देख नहीं सकता यहां तक कि किसी तंत्र (आले) से भी उनके अस्तित्व का अनुभव नहीं किया जा सकता तो यह इशकाल हो सकता है कि जिस वस्तु को न देख सकें न सूंघ कर मालूम कर सकें न छू कर, ना ही किसी तंत्र से उसका अनुभव हो तो उसका अस्तित्व कैसे माना जाए? उत्तर इसका यह है कि आप अपने प्राण पर ध्यान दे लीजिए जिसे अब तक किसी प्रकार भी अनुभव नहीं किया जा सका परन्तु क्या कोई रूह (आत्मा) को नकार सकता है? अतः जब किताब व सुन्नत से जिन्नों का अस्तित्व सिद्ध है तो चाहे वह हमारे अनुभव में आएं या न आएं हम उनको मानेंगे।

यहाँ बात यह कहना है कि जब वह मनुष्य की आखों से ओझल रखे गये हैं तो अल्लाह तआ़ला उनको यह शक्ति नहीं देगा कि वह छुपे छुपे इन्सान को हानि पहुंचाते रहें फिर तो इन्सान की ज़िन्दगी दूभर हो जाएगी।

इसी प्रकार जब जिन्न दिखते नहीं तो उनकी सुरक्षा का भी इलाही प्रबन्ध होगा। ऐसा नहीं हो सकता कि वह इन्सानों से कुचल जाएं, चोट खाएं, या इन्सान उन पर नाक थूक कर दे या पाखाना पेशाब कर दे। यह बात भी असम्भव लग रही है कि कोई आदमी पेशाब कर रहा हो और वह उधर से गुज़र रहे हों और उन पर पेशाब की छींट पड़ जाए और वह क्रोधित होकर उस आदमी को पटख़ दें, या कोई जिन्न नमाज़ पढ़ रहा हो और कोई आदमी दिखाई न देने के कारण उसके आगे से निकल जाए और वह उस आदमी को पागल बना दे जब वह दिखाई ही नहीं पड़ते तो इसमें इन्सान की क्या ग़लती वह सज़ा क्यों पाएगा? वास्तव में इस प्रकार की 95 प्रतिशत बातें निराधार होती हैं।

कुछ ठगों ने इस सम्बन्ध में बड़े भ्रम फैला रखे हैं, मुझे अपने बचपन की बात याद है, मेरी मां को बुखार आ गया मां ने मुझे एक मौलवी जी के पास भेजा मैंने जा कर हाल बताया। मौलवी जी ने एक पुस्तक खोली एक जगह उंगली रखी कुछ बुदबुदाए फिर बोले : ओ हो! ख़ैर कोई ऐसी बात नहीं, मैं तावीज़ लिखे देता हूं इस को जो तुम्हारे घर के पिछवाड़े नीम का पेड़ है, उसकी डाल में बांध देना और एक पाव पचमेल मिठाई उस पेड़ की जड़ पर रख देना। वास्तव में उस पेड़ पर एक जिन रहता है, वह नीचे खड़ा था तुम्हारी मां ने कूड़ा फेंका तो उस पर पड़ गया उसने ख़फ़ा होकर पकड़ लिया है। मैंने कहा किताब तो मैं देख रहा हूं इसमें तो यह कहानी नहीं लिखी है। मौलवी जी ने मुझे डाट कर भगा दिया।

मैं पंसारी के यहां गया जोशाँदा लाया तीन दिन मां को पिलाया वह ठीक हो गई। ऐसे मौलवी मौलवी नहीं ठग होते हैं।

जीवन यात्रा

मुहम्मदुल हसनी

जीवन यात्रा किसी मित्र, मार्गदर्शक, हमदर्द और सदभावक के बिना कभी पूरी नहीं हो सकती। जीवन के यात्री को पग पग पर मार्गदर्शन, चेतावनी, दया, उदारता, उत्साहवर्धन और सहानुभूति की ज़रूरत पड़ती है। इसको इस महत्वपूर्ण, कोमल, और लम्बी यात्रा के लिए कुछ मित्रों को चुनना पड़ता है, किसी पर भरोसा करना पड़ता है। किसी की आज्ञा पालन करनी पड़ती है। किसी का परामर्श स्वीकार करना पड़ता है। अपने दुःख, दर्द, आराम व सुख, शान्ति व सन्तोष और अविश्वास व असंतोष अर्थात इस यात्रा के हर मोड़ पर और हर दशा में उस को इन निस्वार्थ मार्ग दर्शकों और दोस्तों से शक्ति प्राप्त होती है, शान्ति मिलती है। उसके सन्देह समाप्त होते हैं। असंतोष दूर होता है और वह नये उत्साह और विश्वास के साथ इस राह में मर्दानावार आगे बढ़ता है। यदि यह जीवन साथी न हो तो जीना दूभर हो जा जाए। जीवन में कोई मज़ा और आकर्षण बाक़ी न रहे। पग, पग पर ठोकरें लगें। हर मोड़ पर सन्देह हो कि सही दिशा क्या है। मंज़िल की दूरी और तनहाई का बोझ, दिल की घुटन और जज़्बात व ख़्यालात के बन्धन इन्सान के लिए बुद्धि चेतना और फ़ैसला करने की शक्ति को ठंडा और निलंबित कर दे और उसकी आंखों के सामने अन्धेरा छा जाए और उसको ऐसा महसूस हो कि इस बेमज़ा और नीरस जीवन से मौत बेहतर है।

यही वह वास्तविकता है जिसे हम माहौल के नाम से जानते है। माहौल नाम है ज़िन्दगी के कुछ साथियों का जो इस यात्रा में हमारे साथ देते हैं और एक समूह के रूप में हमारे साथ चलते हैं। उनको हमारी सहायता की आवश्यकता होती है और हमें उनकी मदद की। इनमें से कोई किसी से बेपरवाह नहीं हो सकता। एक दूसरे पर हुक्म नहीं चल सकता। सब एक ही नाव पर सवार और एक ही चिन्ता में गिरफ़्तार नज़र आते हैं। अर्थात जल्द से जल्द सुरक्षा व शांति के साथ मंज़िल तक पहुंच जाना। उद्देश्य की मंज़िल का महत्व और प्राथमिकता के बाद दूसरे नम्बर पर जो चीज़ आती है वह यही माहौल है। अर्थात यह तय करते के बाद की हमारी दिशा क्या होगी, किन किन समस्याओं से गुज़रना होगा और असली और आख़िरी मंज़िल क्या होगी? हमें यह देखना चाहिए कि इन मित्रों की मंज़िल कुछ और तो नहीं है। वह काबा के स्थान पर तुर्किस्तान तो नहीं जा रही है। उसका अच्छी तरह इत्मिनान कर लेने के बाद हमें यह देखना होगा कि इनमें उद्देश्य प्राप्ति की लगन कितनी है। उनकी तलब सच्ची है या झूठी। वह इस राह के कष्टों को सहने और उसकी मान्यताओं को पूरा करने के योग्य हैं या नहीं? इस राह के फूल ही उन्हें प्रिय हैं काटों से उन्हें नफ़रत और घृणा है या उनका वह हाल है जो कवि ने इस प्रकार बयान किया है –

गुलशन परस्त१ हूं मुझे गुल२ ही नहीं अज़ीज़३।
कांटों से भी निबाह किये जा रहा हूं मैं।।

ऐसा तो नहीं कि वास्तविक प्रियतम (ईश्वर) तक पहुंचने के बजाए वह इस लम्बी यात्रा की मनमोहकता और सुन्दरता में इस प्रकार फंस चुके हों कि अब उन्हें मंज़िल तक पहुंचने की कुछ अधिक चिन्ता न हो। उनके जज़्बात व दशा, उनके व्यवहार कार्यशैली ऐसी तो नहीं है जो उस मंजिल के तक़ाज़ों और उस राह की शर्तों के बिलकुल ख़िलाफ़ हो।

मंज़िल निश्चित हो जाने के बाद जीवन के हर यात्री की पहली आवश्यकता ऐसे मार्गदर्शकों और साथियों की तलाश व खोज है जो इस कसौटी पर खरे उतरे हों और जो कुछ अपनी ज़बान से कहते हैं, उसको सच कर दिखाते हों। उनका जीवन निःस्वार्थ, सत्यनिष्ठा, सच्चाई, गौरव और वफ़ादारी का नमूना हो।

यह नुसख़ा न किसी दिमाग़ की रचना है न कोई सिद्धान्त सम्बन्धी बहस। कुर्आन मजीद ने ईमान वालों के लिए यही कार्य विधि बताई है।

अनुवाद – ऐ ईमान वालों ! अल्लाह का सम्मान और आदर करो और सच्चे लोगों के साथ रहा करो।

हमारे वर्तमान समाज की बहुत बड़ी ख़राबी और उस की बहुत बड़ी कमज़ोरी ज़िन्दगी के सफ़र में माहौल के महत्व की उपेक्षा करना और उससे बेपरवाही बरतना है।

हम में से हर व्यक्ति के लिए, चाहे वह किसी स्तर या किसी मरतबे का हो, अच्छे मार्ग दर्शकों, सलाहकारों और सहगामियों का चुनाव एक ऐसा नाज़ुक काम है जिसमें ज़रा सी चूक सारे जीवन को ग़लत राह पर डाल सकती है। इसमें रूकावटें पैदा कर सकती है और इंसान को विभन्न चीजों में उलझा सकती है।

यदि आदमी का माहौल अच्छा न हो और उसके मित्रगण उस स्तर के नहीं जो कुर्आन और हदीस ने निश्चित किये हैं और जिसका उच्चतर नमूना माननीय सहाबा और हमारे पूर्वजों ने पेश किया है तो अपने चिन्तन और आत्मा के आहार के लिए उस को बहुत सी चीजों का सहारा लेना पड़ता है। दीनी पुस्तकों का अध्ययन,धार्मिक समारोहों में हाज़िरी और इसी प्रकार की दूसरी चीज़ें वह हैं जिनसे वह अपने दीनी जज़्बे की तसकीन और

अपनी आत्मा की प्यास के बुझाना चाहता है। वास्तव में यह चीजें बहुधा बहुत काम कर जाती हैं और इसकी सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं कि क़ुर्आन मजीद की किसी ख़ास आयत ने, किसी ख़ास घटना ने किसी मनुष्य ने, किसी पुस्तक या भाषण (तक़रीर) ने इन्सान में एक ऐसी वेदना पैदा कर दी जो कभी न मिट सकी और रंगलाए बिना न रह सकी। लेकिन साधारणतः ऐसा नहीं होता। अल्लाह की सुन्नत (रीति) यह है कि आदमी को उसके लिए वह सब कुछ करना पड़ता है जिस का आदेश अल्लाह तआला ने उसको दिया है।

इस बात को एक साधारण उदाहरण से समझा जा सकता है। सख़्त गर्मी और लू के ज़माने में प्यास और बेचैनी को दूर करने के लिए एक तरीक़ा यह है कि बार बार शर्बत पिया जाए, बर्फ़ का प्रयोग किया जाए। परन्तु सब जानते हैं इन चीजों का लाभ अस्थाई होगा और गर्मी की अधिकता और लू के थपेड़ों और प्यास से आदमी को छुटकारा न मिलेगा लेकिन अगर वह एयरकण्डीशन घर में रहने लगे तो उसकी दुन्या बदल जाएगी जल्सों, तकरीरों, पुस्तकों, पत्रिकाओं सब की यह दशा है कि वह इस माहौल का केवल एक अंश हैं कुल नहीं है। इनसे माहौल को शक्ति प्राप्त हो सकती है। यह उसको घेरा बढ़ा सकते हैं लेकिन उनमें से कोई अकेली चीज़ न महौल की जगह ले सकती है न उसकी ज़रूरत पूरी कर सकती है।

क़ुर्आन मजीद की इस आयत में हम को अच्छे माहौल की तलाश की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है और यह कहा गया है कि हम अच्छे लोगों के साथी बनें और जीवन की यह यात्रा उनकें साथ करें।

यह साथी और मार्गदर्शक जिस स्तर के होंगे उसी हिसाब से मंज़िल पर पहुंचा जा सकेगा। इनमें जिस दर्जे का ईमान व विश्वास, निःस्वार्थ, सत्य की तलब और खुदातरसी (ईश्वर भय) होगी। वह ईश्वर ज्ञान, उपकार की जिस मंजिल पर होंगे उनमें जितना धर्म, शक्ति, ईमान व विश्वास होगा, उन को खुदा की ज़ात व विशेषता पर जो विश्वास होगा, अर्थात यह कि उनको खुदा से जिस दर्जा गहरा, सच्चा और वास्तविक सम्बन्ध होगा, उसी क़दर वह दूसरों के लिए लाभकारी और प्रभावकारी होंगे। और हमको जल्द से जल्द वह "उद्देश्य' का मोती प्राप्त होगा जो हर युग में दृष्टिवान और दिलवालों की तमन्ना, उनकी सारी कोशिशों का फल और सृष्टि रचना का उद्देश्य ही पर्याप्त है।

जीवन के हर लम्बे कोलाहल पूर्ण उपद्रव फैलाने वाले और ख़तरनाक (आशंकापूर्ण) यात्रा में निःसन्देह हर प्रकार के पूर्व प्रबन्ध (पैशबन्दी) ज़रूरी है। मामूली मामूली बातों का ख़्याल व सावधानी आवश्यक है। और अपनी हर कमज़ोरी पर नज़र रखने और उसके उपचार व प्रबन्धक की ज़रूरत है। परन्तु सबसे अधिक बुन्यादी और महत्वपूर्ण बात ऐसे मार्ग दर्शकों और सहयात्रियों और साथियों का चुनाव है जो हमें इस जीवन को सफल बनाने, इस धूलकण के प्रताप को बुलन्द करने, पत्थर के टुकड़ों को चन्द्रमा को शर्माने वाले और गुनाहों के अन्धकार में डूब हुए इन्सान को पूज्य प्रशंसित खुदा का प्रिय और समीपवर्ती बनाने में हमारे लिए लाभदायक सिद्धि हों और हम को इस महत्वपूर्ण वास्तविकता से बेपरवाह न होने दें, जिस पर इन्सान का कल्याण व विनाश निर्भर है और जिस की तरफ़ इस भौतिक युग में सबसे कम ध्यान दिया जाता है और जिस को इस तथाकथित "यथार्थवाद" के युग में प्रतिक्रियावाद, और संसार त्याग कहा जाता है।

परलोक को याद दिलाने वाली, लज़्ज़तों और सरमस्तियों को बरबाद करने वाली चीज़ मौत की याद ताज़ा करने वाला, मरने से पहले मरजाने अर्थात अपनी इच्छाओं से गुज़र जाने और इच्छाओं की मंज़िल को पीछे छोड़ देने का उपदेश देने वाला, जन्नत का शौक़ और खुदा की न मिटने वाली सच्ची और वास्तविक तलब पैदा करने वाला और उस पर जान व दिल निछावर करने और उसकी याद में मस्त उनमादित करनेवाला और उसके लिए हर प्रकार की तकलीफ़ और हर तरह का ख़तरा हंसी ख़ुशी क़ुबूल करने की दावत देनेवाला माहौल हममें से हर व्यक्ति के लिए ऐसी अनिवार्य ज़रूरत है जिसको टालना अपनी ज़िन्दगी के साथ जुआ खेलने या अपने जीवन को अविश्वास और सन्देह व शुबहे के हवाले कर देने की पर्याय है और एक ऐसे रास्त पर चलना है जिस के बारे में यह कहना कठिन है कि वह कहां और कब समाप्त होगा और इस मुसाफिर को कहां पहुंचाएगा।

इस माहौल की तलाश व खोज या ऐसे माहौल की तैयारी को हमारी ज़िन्दगी के और दूसरे कामों और आवश्यकताओं की सूची में सबसे ऊपर होना चाहिए। खुदा की ज़मीन ख़ाली नहीं है। उसके सच्चे और सत्यप्रिय बन्दे हर युग में और हर जगह पैदा होते रहे हैं। जब तक खुदा चाहेगा यह सिलसिला जारी रहेगा। उसके सर्वप्रिय बन्दों में आज भी वही गुण हैं और उनसे आज भी वही लाभ पहुंच सकता है औरइस जीवन यात्रा में अब उनपर भरोसा किया जा सकता है लेकिन सच्ची तलब और प्यास शर्त है।

हर चीज़ तलब पर निर्भर है यदि हमारे अन्दर तलब नहीं तो फ़रिश्ते भी आसमान से उतर आएं तो हमें लाभ नहीं पहुंच सकता। जीवन की नज़ाकत और माहौल का महत्व का सही अनुभव एक ऐसा द्वार है जिससे हम इस माहौल के अन्दर दाख़िल हो सकते हैं और जीवन यात्रा खुदा की सहायता और रहमत (अनुकम्पा) के साये में तय कर सकते हैं। काश हमारे अन्दर यह चेतना पैदा हो सके और हम इस महत्वपूर्ण प्रसंग की ओर पूरा ध्यान दे सकें और किसी समय इससे अचेत न हों।

(अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी)

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : आज कल तरावीह की नमाज़ में एक ही रात में कुर्आन ख़त्म किया जाता है जिसे शबीना कहते हैं । उसमें कुछ लोग खड़े होकर इमाम के साथ नमाज़ अदा करते हैं और कुछ लोग बैठकर और कुछ लोग खाने पीने में लगे रहते हैं क्या शबीना का यह तरीक़ा दुरुस्त है।

उत्तर : शबीना का जिस तरह रिवाज है यह कराहियत से ख़ाली नहीं है कुछ लोग तो जमाअ़त में शामिल होते हैं और कुछ खाने पीने में ही लगे रहते हैं इस तरह जमाअ़त और तरावीह दोनों के एहतिराम के ख़िलाफ अ़मल होता है लेकिन अगर तमाम मुक़्तदी चुस्त और मज़बूत हों और जमाअ़त के साथ नमाज़ तरावीह अदा करें और हाफ़िज़ भी साफ़–साफ़ शब्दों में कुर्आन पढ़े तो ऐसी हालत में शबीना सहीह हो सकता है।

प्रश्न – दाढ़ी मुंडवाने वाले की चांद के विषय में शहादत मानी जाएगी या नहीं जबकि व्यक्ति बहुत नेक है?

उत्तर – दाढ़ी मुंडवाने वाला चाहे जितना नेक और भरोसे मन्द हो उसकी गवाही चांद के मामले में शरअ़ी तौर पर नहीं मानी जाएगी।

प्रश्न – क्या किसी दुन्यावी इल्म जैसे – बी0ए0, एम0ए0 आदि के इम्तिहान में रोज़े रखने से नुक्सान होने का अन्देशा हो तो क्या रोज़ा छोड़कर कज़ा कर सकता है।

उत्तर – किसी भी ऐसे इम्तिहान की वजह से रोज: छोड़ने की गुंजाइश नहीं है। रोज़ा रखकर ही इम्तिहान दे अल्लाह तआ़ला मदद फरमाएंगे।

प्रश्न – रमज़ान के महीने में मग़रिब के वक्त क्या कुछ देर से जमाअ़त की गुंजाइश है ?

उत्तर – हां इफ़्तार के लिए मगरिब की जमाअत में थोड़ी गुन्जाइश होती है (अर्थात लगभग दस मिनट)

रमज़ान के महीने में किन–किन कारणों से रोज़: न रखने की गुंजाइश है?

उत्तर – चंद चीज़ें हैं जिनकी वजह से रोज़: न रखने की गुंजाइश है।

1. बीमारी – ऐसी बीमारी जिसकी वजह से रोज: रखने की ताकत न हो या रोज: से बीमारी बढ़ जाने का अन्देशा हो (लेकिन इन रोज़ों की क़ज़ा ज़रूरी है)
2. हामिला (गर्भवती) वह औरत जिसको रोज: रखने से अपनी जान या बच्चे को तकलीफ़ पहुंचने का अन्देशा हो (बाद में कज़ा ज़रूरी है।)
3. शरअ़ी मुसाफ़िर (घर पहुंचने पर कज़ा ज़रूरी है)
4. बहुत ही बूढ़ा और कमज़ोर जो रोज: न रख सकता हो। वह रोज़ा के बदले फिद्या (पौने दो सेर गेहूं या उसकी क़ीमत) गरीब को दे लेकिन अगर अल्लाह तआला उसे तन्दुरूस्ती दे दे तो कज़ा ज़रूरी होगी।
5. हैज़ और निफास वाली औरतों का रोज: रखना दुरुस्त नहीं अगर रख भी लें तो रोज़: न माना जाएगा और यह गुनहगार भी होंगी लेकिन पाक होने के बाद क़ज़ा ज़रूरी होगी।

प्रश्न – रमज़ानुल मुबारक में बिना किसी कारण के रमज़ान का रोज: अगर कोई न रखे एलानिया पान, बीड़ी और दूसरी चीज़ें खाएं और कहे जब अल्लाह से चोरी नहीं तो बन्दों से क्या चोरी ऐसे व्यक्ति का क्या हुक्म है।

उत्तर – ऐसा आदमी फासिक है और इस्लाम की तौहीन करने वाला है इस्लामी हुकूमत हो तो ऐसे बदतमीज़ और बेहया आदमी की सज़ा क़त्ल होगी। "दुर्रे मुख्तार" में है कि कोई व्यक्ति बिना ज़रूरत शरई रोज़: न रखे और एलानिया खाए पिये तो इस्लाम के हुक्म से क़त्ल कर दिया जायेगा।

प्रश्न – रोज़े की हालत में अगर औरत को हैज़ आ जाए तो उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर – अगर रोज़ की हालत में औरत को हैज़ (माहवारी) आ जाए तो उसका रोज़ा अपने आप टूट जाएगा इसलिए कि हैज़, निफ़ास, रोज़: के खिलाफ़ है जैसे ग़ैर माजूर शख़्स का नमाज़ की हालत में बुज़ू टूट जाए।

लेकिन हां रमज़ान के एहतिराम में एलानिया खाने पीने से बचे और अगर हैज़ से पाक हो जाए तो उसे बाक़ी दिन भी रोज़ेदार की तरह रहना चाहिए।

प्रश्न – आंख में सुर्मा या दवा डालने से रोज: फासिद होता है या नहीं ?

उत्तर – आंख में सुर्मा डालने से रोज़: फासिद नहीं होता आंख में डाली हुई दवा और सूर्मा का रंग व मज़ा कभी हलक़ और थूक में महसूस होता है इससे भी रोज: नहीं टूटता।

(फ़तावा आ़लमगीरी 18/2)

प्रश्न – क्या नापाकी ही हालत में रोज: रख सकते हैं जैसे एहतिलाम (स्वप्नदोष) के बाद सहारी खाना बिना नहाए कैसा है?

उत्तर – सोने की हालत में एहतिलाम हो गया फिर बिना गुस्ल किए हुए सहरी खाई और रोज: रख लिया तो उससे रोज़: फासिद नहीं होगा (नापाकी का गुनाह अलग होगा)

प्रश्न – रोज़े की हालत में कान में तेल या पानी के चले जाने से क्या रोज़: टूट जाता है?

उत्तर – कान में पानी खुद से चले जाने से या जान बूझ कर डालने से रोज़: नहीं

टूटता लेकिन तेल के डालने से रोज़: फ़ासिद हो जाता है ।

इल्मुलफिक: 32/2

प्रश्न – क्या रोज़े में थूक या राल निगल जाने से रोज़: टूट जाता है?

उत्तर – रोज़े की हालत में मुंह में थूक या राल जो जमा हो जाए उसको निगल ले या दांतों की झिर्री में खानेकी कोई चीज़ रह गई है उसको निगल ले तो उससे भी रोज़े को नुकसान नहीं पहुंचता और अगर जान बूझ कर ऐसा किया तो भी रोज़: दुरुस्त होगा हां अगर उस चीज़ की मिकदार इतनी हो जिसे आमतौर से ज़ियादा कहा जाए (चने के बराबर) तो उसके निगलने से चाहे बिना इरादा ही ऐसा हुआ हो रोज़: खत्म हो जाएगा।

(किताबुल फिक़्ह: –920/1)

प्रश्न – क्या नाक को हलक में चढ़ाने से रोज़: टूट जाता है?

उत्तर – नाक को रोज़े की हालत में इतनी जोरे से सुड़क लिया कि हलक में चली गई तो उससे रोज़: नहीं टूटा इसी तरह मुंह की राल सुड़क कर निगल जाने से रोज़: नहीं टूटता।

(आलमगीरी 278/1 व बिहिश्ती ज़ेवर भाग3 पेज नं. 12)

प्रश्न : डकार के साथ मुंह में पानी आ जाने से क्या रोज़: टूट जाएगा?

उत्तर – डकारों के साथ खुद से मुंह में पानी आ जाने से रोज़ा नहीं टूटता चाहे वह पानी कम हो या ज़ियादा, बशर्ते कि वह पानी निगल न लिया हो बल्कि थूक दिया हो। अल्बत्ता कोशिश करके क़ै करने से अगर मुंह भर क़ै है तो रोज़ा टूट जाएगा कम हो तो न टूटेगा।

प्रश्न – आज कल रमज़ान में लोग रवादारी के तौर पर गैर मुस्लिमों और बेदीन लोगों, स्थानीय लीडरों को इफ़्तार के अवसर पर बुलाते हैं और नमाज छोड़कर वह माडर्न तरीक़े पर खड़े होकर इफ़्तार करते हैं क्या यह तरीक़ा दुरूस्त है?

उत्तर – इस तरह की इफ़्तार पार्टी जिस का मक्सद केवल दुन्यावी ग़रज़ हो और उसका मक़सद अल्लाह को राज़ी करना न हो बल्कि उसका मकसद शोहरत व नामवरी हो उसके साथ रोज़े का एहतिराम भी न किया गया हो और खाने में इस्लामी तरीके का भी ख़याल न रखा गया हो और नमाज़ भी छूट जाती हो। ऐसी पार्टी करना शरअ़ी तौर पर दुरुस्त नहीं है। रवादारी के लिए मज़हब की रूह और उसके एहतिराम के ख़िलाफ अ़मल करना बहुत बड़ा गुनाह है इससे बचना चाहिए।

प्रश्न – क्या इंजेक्शन लेने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर – इंजेक्शन लेने से रोज़ा नहीं टूटता है।

प्रश्न – फ़ित्रा किस पर वाजिब है, कितना वाजिब है, यह कब वाजिब होता है और यह किसे दिया जाना चाहिए ?

उत्तर – फ़ित्रा हर साहिबे निसाब पर वाजिब है यानी जिस के पास साढ़े बावन तोला (612 ग्राम) चान्दी या साढ़े सात तोला (87 ग्राम) सोना हो या साढ़े बावन तोला चान्दी खरीदने भर के पैसे हों तो उस पर फ़ित्रा वाजिब है। चाहे मर्द हो चाहे औरत हो। अल्बत्ता मर्द पर अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से भी फ़ित्रा वाजिब है। बालिग़ औलाद की तरफ़ से नहीं, औरत पर सिर्फ़ अपना फ़ित्रा वाजिब है, किसी और का नहीं। फ़ित्रा एक आदमी की तरफ़ से पौने दो सेर (एक किलो 635 ग्राम) गेहूं या साढ़े तीन सेर (तीन किलो 270 ग्राम) जौ या पौने दो सेर गेहूं की क़ीमत वाजिब है, निसाबे फ़ित्रे का हिसाब अरबी माप (पैमाना) मिस्क़ाल, दिरहम और साअ़ से निकाला गया है। उससे तोला और ग्राम आदि में बदलने में आ़लिमों में मतभेद हो गया, यहां प्रसिद्ध व प्रचलित मापें लिखी गई हैं कुछ लोगों का मत इस से अधिक का भी है कुछ लोगों का कम का भी, यह फ़ित्रा सुब्हे सादिक़ शुरूअ़ होने से पहले वाजिब होता है इस लिये जो बच्चा सुब्हे सादिक़ के बाद पैदा हुआ उसकी तरफ़ से फ़ित्रा उस ईद में वाजिब न होगा। फ़ित्रे का सदक़ा ईद की नमाज़ से पहले अदा कर देना चाहिए अगर बाक़ी रह गया है तो बाद में अदा करना ज़रूरी है। अगर ईद के दिन से पहले रमज़ान ही में अदा कर दें तो अदा हो जाएगा। फ़ित्रे के सदक़े के वही हक़दार हैं जो ज़कात के हक़दार हैं। यानी अपने बाप दादा नाना नानी ऊपर तक और औलाद तथा उनकी औलाद नीचे तक को छोड़ कर किसी भी ऐसे मुसलमान को दे सकते हैं जो निसाब का मालिक न हो।

प्रश्न – निसाब और फ़ित्रा के अ़रबी पैमाने क्या हैं? बताइये ।

उत्तर – चान्दी का निसाब अ़रबी पैमाने से 200 दिरहम या 5 ओक़िया है सोने का निसाब 20 मिस्क़ाल है, यह तौल के पैमाने हैं, और फ़ित्रा गेहूं आधा साअ़ या जौ एक साअ़ यह नाप का पैमाना है जो आज भी सऊदिया में पाया जाता है।

प्रश्न – अगर सदक़–ए–फ़ित्र की क़ीमत किसी हक़दार मुसलमान को ईदी के बहाने दे दें और ज़ाहिर न करे कि यह सदक़ा है तो सदक़–ए–फ़ित्र अदा हो जाएगा या नहीं?

उत्तर – मुस्तहिक़ को सदक़–ए–फ़ित्र देते वक़्तयह बताना ज़रूरी नहीं है कि यह सदक़–ए–फ़ित्र है इस लिए इस तरह सदक़ा देने से अदा हो जाएगा।

प्रश्न – हमारे यहां रवाज है कि ईदगाह के रास्ते में फ़क़ीर लोग लाइन से कपड़े बिछाये बैठे रहते हैं और फ़ित्रा तलब करते हैं इसी तरह ईद की नमाज़ के बाद ईद गाह के दरवाजे और रास्ते में फ़क़ीर लोग फ़ित्रा तलब करते हैं, बहुत से लोग उनको ग़ल्ला या नक़द फ़ित्रा देते हैं। क्या इस तरह फ़ित्रा अदा हो जाएगा ?

उत्तर – अगर वह ऐसे ग़रीब मुसलमान हैं कि निसाब के मालिक नहीं हैं तो अदा हो जाएगा। अगर आप ने उन को मुस्तहिक़ समझ कर दिया जबकि वह हक़ीक़त में मुस्तहिक़ न थे मगर आप को मालूम न था तब भी अदा हो गया। लेकिन अगर आप ने जानबूझकर ग़ैर मुस्तहिक़ को दिया तो फ़ित्रा अदा न होगा।

एक घटना

अब्दुल्लाह सिद्दीक़ी

राम सिंह एक मध्यवर्ग के भूपति थे। एक गाँव में उनका निवास था। यह गाँव गंगा नदी के किनारे ऐसी ऊंचाई पर था कि कभी बाढ़ से डूबता न था। उनका मकान बहुत ही साधारण परन्तु सुखदायी हवादार था। ज़ाती खेत थे, बाग़ था। रिआया में इन के सदव्योहार का बड़ा नाम था। बनारस (वाराणसी) में भी एक कोठी थी। गंगा का बहाव बनारस से इनके गांव की ओर था। राम सिंह जी के केवल एक पुत्र राज सिंह था जिस की आयु दस वर्ष थी। पत्नी सतवंती बड़ी ही उदार चरित्र की थीं। उनकी सेवा तथा खाना पकाने और चूल्हा बरतन के लिए एक स्त्री नौकर थी जो बुआ कहलाती। राम सिंह जी कभी गांव में रहते और कभी कई कई महीने बनारस में गुजारते।

एक समय जब वह पूरे परिवार के साथ बनारस में थे वहां चेचक ने महामारी का रूप धारण कर लिया। राम सिंह जी की पत्नी भी बड़ी चेचक से बुरी तरह पीड़ित हो गईं। पहली बात तो चेचक के मरीज़ को सारे स्टेजों (अवस्थाओं) से गुज़ारना आवश्यक होता है, इलाज में किसी भी स्टेज को रोक देना, रोगी के लिए खतरनाक होता है। अतः चिकित्सा में चिकित्सक केवल इन बातों की ओर ध्यान देता है :'

–रोगी को जितना सम्भव हो कष्ट से बचाए।

– रोगी के किसी अंग के भंग होने से बचाने की चेष्ठा करे।

– रोगी को नमोनिया से बचाए रखने की चेष्ठा करे।

परन्तु उस समय तक हिन्दू धर्म वाले चेचक को रोगी की चिकित्सा में काली के रूष्ट हो जाने के विश्वास में इलाज कराते ही न थे। राम सिंह की पत्नी का भी इलाज न हुआ, महल्ले का हाल यह था कि मरने वालों की लाइन लगी हुई थी। मौत का भय सब पर सवार था। सतवंती की हालत बिगड़ चुकी थी अन्ततः उसकी भी मृत्यु हो गयी। राम सिंह बहुत घबराये और दुखी हुए । क्रिया कर्म करने वाले एक पण्डित को बुलाया, शव फूंकने का खर्चा पूछा, उस समय बीस बहुत थे पंडित जी ने तीस मांगे, राम सिंह ने तीस रूपये दे दिये तीस रूपया कफन और टिक्ठी ख़र्चा अलग से दिया। राम लाल नौकर और पंडित सीताराम को शव सौंपा और पुत्र राज सिंह को लेकर गांव भाग गये। गांव में शोर हो गया कि सतवंती को काली माई ने ले लिया और उनका शव शमशान में अग्नि को सौंप दिया गया।

राम सिंह ने पत्नी का शव छोड़ कर और बेटे को लेकर गांव भागने पर विवश हो गये थे वास्तव में मौत की गर्म बाज़ारी से वह अत्यधिक भयभीत हो गये थे। उनके गांव चले जाने के पश्चात उनका नौकर दो रूपये का दो गज कफन लाया और दो रूपये की टिक्ठी पंडित सीताराम ने सलाह दी कि हम दोनों शव शमशान उठा ले चले और 26 रूपयो आधा आधा बांट लें। नौकर राजी हो गया, रास्ते में पंडित जी ने कहा चलो शव को नदी में सिर्वा दें 30 रूपया वह भी आधा आधा बांट ले तुम साहिब से कह देना शव फूंक दिया। नौकर इस पर भी सहमत हो गया शव को गंगा जी को सौंप कर हर एक ने 28 रूपये खरे कर लिये नौकर का वेतन 8 रूपया महीना था इस प्रकार उसको तीन महीने से अधिक वेतन मुफ़्त मिल चुका था।

सतवंती का शव बिना किसी भार के रात के समय गंगा में डाल दिया गया था अतः वह बैठने के बजाए बाहर बहने लगा और बहता रहा। ऐसा लगता है कि सतवंती का देहान्त नहीं हुआ था कष्ट से उसकी अचेतना (सक्ता) की स्थिति हो गयी थी उसी स्थिति में वह नदी में बहा दी गयी। उस समय नदी में बाढ़ भी थी। लाश बहती रही, बहती रही आगे चलकर किसी प्रकार लाश किनारे लग गई और एक बबूल की झुकी शाख से लग कर रूक गई, इत्तिफ़ाक़ की बात पानी नीचा हुआ तो लाश कीचड़ पर आ गई, अनुमान है कि बबूल का कोई कांटा सतवंती को चुभा जिससे उसकी अचेतना समाप्त हुई और उसने आंखें खोल दीं, परन्तु अपने को कीचड़ पर पड़ा देख कर कुछ समझ न सकी, वह नंगी भी थी सम्भव है बहने में कफन अलग हो गया हो। जान बड़ी प्यारी होती है, सतवंती ने जोर लगाया और उठ बैठी, वह बाहर की ओर बैठे बैठे चलने लगी, एक खेत चली थी कि उसने पहचान लिया कि यह तो वही रास्ता है जिससे चलकर वह नदी में नहाने आया करती थी, वह तो अपने दीहात वाले गाँव पहुँच चुकी थी।

कुछ बच्चे पशु चरा रहे थे, उन्होंने देखा कि एक नंगी औरत बैठे बैठे चल रही है, पूरा शरीर खराब चेहरा भयानक, एक लड़के ने लपक कर पूछा तुम कौन हो? उत्तर मिला मैं राजसिंह की मां हूं, मेरे घर से कपड़े ला दो। लड़कों को तो मालूम था कि राजसिंह की माँ मर चुकी हैं और फूंकी भी जा चुकी हैं। फिर क्या था। मुँह नोचवा की तरह शोर मचा कि भागो भागो राज सिंह की माँ प्रेतिन बन कर गांव पर आक्रमण करने आ रही है। पूरे गांव में शोर हो गया, लोगों ने अपने अपने बच्चे ढूंढे अन्दर किये और दरवाजे बन्द कर लिये।

राज सिंह ने भी सुना। अपनी मां

का नाम सुनकर उसका दिल भर आया वह माँ को देखने चल पड़ा राम सिंह को मालूम हुआ तो वह बहुत घबराए जल्दी से बन्दूक संभाली और बेटे के पीछे दौड़ पड़े बेटा माँ के निकट पहुँच चुका था बस तीस हाथ की दूरी रह गई होगी माँ ने राजू की आवाज़ निकाली इधर राम सिंह ने बन्दूक छतया ली, सतवंती ने कसम दी कि मुझे न मारो, इधर घोड़ा दब चुका था। बन्दूक दगने की आवाज आई उधर सतवंती ढेर थी अब राज सिंह का बुरा हाल था, चीखता, उछलता और गिरपड़ता, राम सिंह ने उसे पकड़ लिया सीने से चिमटाया मगर वह उसी तरह बेचैन व बेक़रार था, बन्दूक की आवाज सुनकर और यह समझ कर कि भूतनी मार दी गयी गांव के लोग भी दौड़ पड़े एक भीड़ इकट्ठा थी, परन्तु लोगों से राज सिंह की बेक़रारी देखी न जाती थी, बड़ी मुशकिल से राम सिंह बेटे को बता पाए कि उन्होंने खाली फाइर किया था उसकी माँ भय से मूर्छित है, जल्दी से लोगों ने डरते डरते सतवंती के मुँह पर पानी का छींटा मारा उसने आंखें खोल दीं, उसने कपड़ा मांगा तुरन्त कपड़ा लाकर पहनाया गया, वहीं गाय का दूध लाकर पिलाया गया और फिर घर लाया गया परन्तु राम सिंह ने राज सिंह को मां से दूर ही रखा और समझाया कि तुम्हारी मां तो बनारस में फूंकी जा चुकी, यह है तो तुम्हारी मां लेकिन इस समय यह प्रेत योनि में है। इस से सम्बन्ध रखना खतरनाक है, यह तुम को हम से छुड़ा कर प्रेत लोक ले जा सकती है। इसको किसी प्रकार यहां रहने न देना चाहिए।

सतवंती ने यह बातें सुनीं तो रो रो कर कहने लगी हम को घर से न निकालो, हम को ठकुराइन से गोबर पथिन बना लो, हम से गउएं चरवाओ, खेत में काम कराओ, हम को दूर से खाना खिलाओ, हम को राज सिंह को बस दूर से देख लेने दो, हम को सरया चौपाल में पड़ी रहने दो, हम से हमारे लाल को न छुड़ाओ, उधर राजसिंह की भी मांग थी कि पापा मम्मी को रहने दो। आखिर कार राम सिंह सतवंती को चौकी पहरे के बीच रखने पर राजी हो गये। एक सप्ताह इसी प्रकार बीता इस बीच सतवंती ने भी सरसों का तेल आदि प्रयोग किया जिससे चेचक के दाने ठीक हो गये।

एक सप्ताह पश्चात एक दिन राम सिंह के मन में यह बात आई कि हो सकता है कि पंडित सीताराम ने किसी कारण जलाने के बजाए नदी में डाल दिया हो और यह मरी न रही हो, अचेत रही हो, और यह प्रेतिन न हो। यह ख़याल आते ही राम सिंह तुरन्त बनारस रवाना हो गये, अपनी कोठी पहुंचे नौकर को बुलाया और पूछना आरंभ किया कि लकड़ी कितने की आई? घी कितने का आया फूंकने में कितना ख़र्च आया?

नौकर छनक गया, समझा कि कहीं से पता लग गया है अतः उसने बातें नहीं बनाई तुरन्त बताया कि पंडित के कहने में हम भी आ गये और नदी में शव डाल दिया पैस अभी हमारे पास रखे हैं, हम को जो चाहिए सजा दीजिए वैसे मैं हाथ जोड़ कर क्षमा चाहता हूं। नौकर यह देखकर हैरान रह गया कि साहिब क्रोध प्रकट करने के स्थान पर मुस्कुराए और फिर रोने लगे, थोड़ी देर के बाद पूरा हाल बताया तो नौकर भी खूब रोया परन्तु यह रोना अपनी कोताही और खुशी पर था, फिर ठाकुर साहिब नौकर के साथ गाँव आए, पत्नी से चिमट कर खूब रोये और क्षमा मांगी। राज सिंह आज बहुत खुश था, सब लोग पहले की भांति रहने लगे सतवंती अब गोबर पत्थिन नहीं मालकिन थी।

साँच बराबर तप नहीं,
झूट बराबर पाप।
जा के मन में साँच है,
वा के मन में आप ।।

शाहे कौनैन

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मौ० अब्दुल बारी नदवी (रह०)

मस्जिद नबवी के आँगन में आप (स०) के सामने माले ग़नीमत के ढेर लग जाते थे। मगर ख़ुद उस ढेर को बांटने वाले शाहै कौनेन का जीवन यह था कि जानवर की खाल या ख़ाली ज़मीन पर आराम फ़रमाते थे। नबी का आवास यद्यपि इलाही प्रकाश से प्रकाशित या फिर भी उसमें रात को दिया न जलता था। कई कई दिन तक भूख के कारण पेट पर दो, दो तीन, तीन पत्थर बन्धे होते। घर का काम काज ख़ुद करते, कपड़ों में पैवन्द लगाते, घर में ख़ुद झाड़ू लगाते, दूध दूह लेते, बाज़ार से सौदा लाते, जूती फट जाती तो ख़ुद गाँठ लेते, ऊँट को अपने हाथ से बान्धते, उस को चारा देते, ग़ुलाम के साथ मिलकर आटा गूंधते, हज़रते फ़ातिमा आपकी लाडली बेटी थीं। जिन के हाथों में चक्की पीसने से छाले पड़ गये थे, पानी की मशक उठाते उठाते सीने पर गट्ठे पड़ गये थे, घर में झाड़ू देते देते कपड़े चीकट हो जाते थे। इस पर भी जब उन्होंने एक बार घर के कामों के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से लौंडी (सेविका) मांगी और हाथ के छाले दिखाए तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने साफ इन्कार कर दिया कि यह फ़कीरों और अनाथों (यतीमों) का हक़ है।

हमारे बच्चे और टेलीविज़न

मो० अरशद आज़मी नदवी

संचार माध्यम, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीवीजन आज कल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। कोई घर, चायखाना दुकान इससे ख़ाली नहीं है। विशेषकर टेलीवीज़न ने तो बड़े छोटे सबको बहुत प्रभावित किया है। वह ऐसी ज़रूरत बन गया है जिसके बिना कोई चारा नहीं। लेकिन अफसोस है कि इस्लाम दुश्मन ताक़तें ही अब तक इस संचार माध्यम पर हावी रही हैं। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वे अपने विचारों, बेहयाई, अपराधों, नैतिक बिगाड़ को प्रसारित करते रहे हैं जिससे समाज का नवजवान विशेष रूप से बहुत प्रभावित होता है। मां–बाप की यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह यह देखें कि उनके बच्चे क्या देखते हैं और इससे क्या सीखते हैं ?

टेलीवीज़न चूंकी आंख और कान दोनों को अपील करता है। आदमी सुनने के साथ–साथ दृश्यों को भी आंखों से देखता है इसलिए इसका प्रभाव अन्य माध्यमों से बहुत अधिक ताक़तवर हो जाता है। शिक्षित और अशिक्षित दोनों ही वर्ग इसमें बड़ा आकर्षण महसूस करते हैं। आम घरों में बड़े और छोटे बच्चे प्रतिदिन दो तीन घंटे टेलीवीजन देखते हैं यह एक औसत है। छुट्टी के दिनों में तो चार घंटे और कभी कभी इससे भी अधिक समय टेलीवीज़न के सामने गुज़ारा जाता है। इतनी देर तक टेलीवीज़न देखने से कई नुक़सान बच्चों को हो सकते हैं। उदाहरण के लिए अगर प्रोग्राम बच्चों के मिज़ाज, उनके मानसिक स्तर के अनुकूल न हों तो इससे वह मानसिक खिंचाव का शिकार हो सकते हैं। दूसरे यह कि टेलीवीज़न सेट से निकलने वाली किरणें उनकी आंखों को भी प्रभावित कर सकती है।

टेलीवीज़न पर जो प्रोग्राम टेली कास्ट किये जाते हैं वह दो तरह के होते हैं और दोनों बच्चों के लिए लाभप्रद नहीं है। वह एक प्रोग्राम जो सयाने लोगों के लिए तैयार किये जाते हैं जिनमें टी०वी० सीरियल ड्रामे, ख़बरें स्पोर्ट्स आदि होते है, इनमें सीरियल और ड्रामे अधिक समय लेते हैं और इनके अक्सर क़िस्से इस्लामी मिज़ाज से मेल नहीं खाते। प्रायः इनमें प्रेम गाथायें, सुन्दरियों की जादूभरी अदायें और महिला व पुरूष का मिलाप होता है या फिर आतंक व आतंकवाद के दृश्य होते हैं। दूसरे वह प्रोग्राम जो बच्चों ही के लिए तैयार किये जाते हैं इनमें आमतौर से केवल मनोरंजन और टाइम पास का सामना होता है।

कार्टून की फिल्में जो बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं उनके क़िस्से, मार काट, आतंक और खींचतान पर आधारित होते हैं और कुछ एक में प्रेम गाथायें होती हैं। इन दोनों ही तरह के प्रोग्रामों में इस्लामी आचरण व मूल्यों का अभाव होता है जिसके कारण बच्चों के मन मस्तिष्क पर ग़ैर इस्लामी असर पड़ता है।

प्रश्न यह उठता है कि समस्या का समाधान क्या है? टी०वी० के फायदे हैं इससे बच्चों की नवीनतम् जानकारी होती रहती है। उनका दृष्टिकोण व्यापक होता है, किन्तु मौजूदा प्रोग्रामों में इसके नुकसान भी बहुत हैं। इसलिए कुछ शिक्षाविदों का विचार है कि टी०वी० प्रयोग यथासम्भव कम किया जाये। और केवल उपयोगी प्रोग्राम ही देखे जायें। अनुचित प्रोग्राम के समय किसी अन्य व्यस्तता में बच्चों को लगाया जाये जैसे कोई व्यायाम, वीडियो कैसेट के द्वारा किसी उपयोगी प्रोग्राम में अथवा कम्प्यूटर गेम्स "जिन घरों में कम्प्यूटर उपलब्ध है" खेलने की तरफ़ आदि आदि। कम्प्यूटर के शैक्षिक प्रोग्राम की डिस्क अब बाज़ार में उचित दाम पर उपलब्ध हैं जिनसे बच्चे टी०वी० के कुप्रभाव से सुरक्षित रहकर आधुनिक शैक्षिक ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

बच्चों के कुछ बड़े होने के बाद उन्हें बताया जा सकता है कि टी०वी० के कौन से प्रोग्राम अच्छे हैं और कौन से बुरे और क्यों? ताकि वह इस का सही प्रयोग कर सकें।

मां–बाप के लिए उचित है कि वह बच्चों की दीक्षा तरबियत में नर्मी से काम लें और सोपानवार (मरहलावार) उनमें परिवर्तन लाने का प्रयास करें। सिर्फ हुक्म जारी न करें। बल्कि यह देखें कि उसपर कितना अमल किया जाता है।

(पृष्ठ ३१ का शेष)

..... अल्लाह की ओर ....

उन्होंने ईमानी जोश और दिलेरी के साथ कहा कि "हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आये हैं। ताकि वह हमारे पापों को क्षमा कर दे और जो जबरन जादू करने पर तूने हमको मजबूर किया उसको भी क्षमा कर दे, और अल्लाह बेहतर है और बाकी रहने वाला है कुछ शक नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने परवरदिगार के पास आएगा। उसके लिए जहन्नम है जिसमें वह न तो मरेगा और न ज़िन्दा ही रहेगा। और जो ईमान वाला होकर उसके सामने हाज़िर होगा और उसने नेक काम किये होंगे, यही लोग हैं जिनके बड़े दर्जे होंगे। हमेशा रहने के लिए बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही होगी उसमें हमेशा रहेंगे। यह बदला है उसका जो पाक हुआ।"

मोमिन की विशेषताएं

डा० अब्दुर्रशीद

इस्लाम में आचरण का सुधार इस्लामी समाज, इस्लामी सभ्यता पर निर्भर है। इस्लाम ने इस्लामी समाजी प्रबन्ध का एक परिपूर्ण अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदर्श आचरण को अपनाने का निर्देश दिया है। इस्लामी समाज अच्छे कर्म के सिद्धान्त पर अमल करता है और जिस व्यक्ति की तर्बियत (प्रशिक्षण) ऐसे समाज में होगी उसका आचरण भी अवश्य इस्लामी सिद्धान्त और रसूल (सल्ल०) के आदर्शों के अनुसार होगा।

इस्लामी चरित्र व्यवस्था इन्सान को तक़वा (संयम), निस्वार्थता, सच्चाई, पवित्रता, ईमानदारी, न्याय, इन्साफ और उपकार की शिक्षा देता है और यह बुन्यादी मूल्य हैं। मानो इस्लामी आचरण की व्यवस्था का आधार विश्वव्यापी मूल्यों पर है। अतः सारे संसार की भलाई इस बात पर निर्भर है कि इन मूल्यों को अपनाया जाए इस्लामी समाज के लिए इन मूल्यों की हैसियत रीढ़ की हड्डी के समान है जिनके बिना इस्लामी समाज बिल्कुल फल फूल नहीं सकता। यही कारण है कि इस्लाम में उपासना का उद्देश्य आचरण सुधार क़रार दिया गया है। इस्लामी व्यवस्था की बुन्यादें निम्नवत आचरण मूल्यों पर आधारित हैं:–

तक़वा (संयम–ईशमय) यदि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा को संक्षिप्त शब्दों में बयान करना चाहें तो इसे तक़वा (संयम) से अदा कर सकते हैं। इस्लाम की हर शिक्षा का उद्देश्य अपने हर कार्य में संयम पैदा करना है। कुर्आन पाक ने अपनी दूसरी सूरः में यह ऐलान किया है कि इस की तालीम से वही लाभ उठा सकते हैं जो संयम (तक़वा) वाले हैं "हुदल्लिल मुत्तक़ीन" (सूरः बक़र –2) "यह किताब तक़वा वालों (ख़ुदा से डरने वालों) को राह दिखाती है।" यही कारण है कि इस्लाम की सारी उपास्नाओं (इबादतों) का उद्देश्य इसी तक़वे को प्राप्त करना है। कुर्आन मजीद में आया है।

अनुवाद– "ऐ लोगो ! इबादत (उपास्ना) करो अपने रब की जिसने तुमको और तुमसे पहले वालों को पैदा किया ताकि तुम तक़वा पाओ।"(सूरः बक़र–21)

दूसरी आयतों में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

अनुवाद– " ऐ ईमान वालों! तुम पर रोज़ा उसी तरह फ़र्ज़ किया गया जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था ताकि तुम तक़वा हासिल करो" (सूरः बक़र–183)

अनुवाद –" जो अल्लाह के शआएर की इज़्ज़त करता है तो यह दिलों के तक़वे से है।" (अलहज–32)

अनुवाद – "ख़ुदा के पास क़ुर्बानी का गोश्त और ख़ून नहीं पहुंचता मगर तुम्हारा तक़वा उसको पहुंचता है" (अलहज–37)

इन क़ुर्आनी आयतों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम में तक़वे को कितना महत्व प्राप्त है। अरबी भाषा में तक़वे का शाब्दिक अर्थ बचने, परहेज़ और लिहाज़ (आदर) करने के है लेकिन धर्मानुसार (रार्अन) यह दिल की उस अवस्था का हाल है जो अल्लाहतआ़ला को हमेशा मौजूद और सर्वव्यापी होने का यक़ीन पैदा करके दिल में अच्छाई और बुराई की पहचान की चुभन और अच्छाई की ओर झुकाव और बुराई से नफ़रत पैदा करती है।

इस्लाम का वास्तविक उद्देश्य और शिक्षा तक़वा है। अल्लाह तआ़ला उन्हीं कर्मों को स्वीकार करते हैं जो तक़वे के साथ पूरा किया गया हो। इसका स्पष्टीकरण क़ुर्आन पाक की इस मुबारक आयत से भली भांति होता है :–

अनुवाद –"अल्लाह तो तक़वे वालों ही को क़ुबूल फ़रमाता है" (सूरः माएदा–37)

मुत्तक़ीन (संयमी लोगों की) विशेषता अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन पाक में इस प्रकार बयान फ़रमाई है :–

अनुवाद – "और जो सच्चाई लेकर आया और उसको सच माना वही लोग मुत्तक़ी हैं, उनके लिए उनके रब के पास वह है जो वह चाहें। यह है बदला नेकी करनेवालों का" (ज़ुमर–33)

इख़लास (निःस्वार्थता) :– तक़वा की प्राप्ति उस समय सम्भव है जब कर्म में निःस्वार्थता हो इस्लाम की तालीम यह है कि जो भी कर्म किया जाए उसमें दुन्यावी दिखावा, तलब, प्रशंसा या कोई लाभ निहित न हो बल्कि केवल अल्लाह के आदेश के पालन और उसकी प्रसन्नता लक्ष्य हो। इसी का नाम इख़लास है। इस आचरण मूल्य का वर्णन क़ुर्आन ने इस प्रकार किया है –

अनुवाद – तू अल्लाह की इबादत कर, खालिस (विशुद्ध) करते हुए अज्ञापालन को इसीलिए कि अल्लाह ही के लिए है खालिस आज्ञा पालन" (सूरः ज़ुमर– 2,3)

इस आयते मुबारक का अर्थ यह है कि ख़ुदा की उपासना में निःस्वार्थता का होना बहुत आवश्यक है। अल्लाह तआ़ला के लिए किया जानेवाला कर्म दिखावे और मक्कारी से पाक साफ़ होना चाहिए। जिस अमल में मक्कारी शामिल हो उसका उद्देश्य यह होता है कि लोग देखें और खुश हों परन्तु जिस अमल में निःस्वार्थता छुपी हुई हो उसका उद्देश्य

केवल अल्लाह की स्वीकृति और प्रेम की प्राप्ति होती है। द्वेष को दूर करने के बाद ही निःस्वार्थता प्राप्त होती है और कोई मुसलमान पूरा मोमिन (विश्वासी) उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि वह मुत्तक़ी और मुख़लिस (संयमी और निःस्वार्थ) न हो। यही कारण है कि कुर्आन पाक ने बार बार यह एलान किया है कि –

अनुवाद – "आज्ञापालन खुदा के लिए ख़ालिस (विशुद्ध) किया जाए" (सूरः अअ़राफ़ – 29)

इस अल्लाह के ए लान निःस्वार्थता का महत्व स्पष्ट हो जाता है कि हर उपासना और हर अमले ख़ालिस (विशुद्ध कर्म) खुदा ही के लिए हो। उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के सिवा और कोई उद्देश्य न हो। तमाम ईश्वर के सन्देशवाहक ने यही एलान किया था कि "हम इस पर तुम से कोई मज़दूरी नहीं चाहते, हमारी मज़दूरी तो उसी पर है जो सारे संसार का पालन हार है।"

दूसरे शब्दों में ईश्वर के सन्देश वाहकों की हर कोशिश निःस्वार्थ थी वह केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हर कार्य करते थे।

सारांश यह है कि हर वह अमल अल्लाह के समीप स्वीकार करने योग्य है जो केवल उसी की प्रसन्नता हासिल करने के लिए किया जाए और जिसमें तनिक भी अल्लाह के सिवा किसी और की प्रसन्नता और स्वीकृति शामिल हो जाए वह अल्लाह के नज़्दीक स्वीकार करने योग्य नहीं है।

इफ़्फ़त (संयम पवित्रता) : संयम और पवित्र को इस्लम ने बहुत महत्व दिया है। इस्लाम से पहले अरब में पवित्रता और पाकबाज़ी नाम की कोई चीज़ नहीं थी। बेहयाई और अशलीलता को बुराई नहीं माना जाता था बल्कि लौंडिया से वेश्या का काम कराया जाता था और उसकी कमाई खाई जाती थी। मदीना का मशहूर मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल अपनी लौंडियों को पेशा करने पर मजबूर करता था। इसके बावजूद वह इज़्ज़त का हक़दार था और सिर पर ताज रखे जाने के योग्य समझा जाता था। औरतें बनाव सिंगार करके बाहर निकलती थीं और सीने को ढकने पर ध्यान न देती थीं। बदचलन औरतें शराब की महफ़िल में शराब पिलाने का काम करती थीं और गला खुला रखती थीं कि जो चाहे छेड़ छाड़ करे। एक औरत के इस दस आदमी पति होते थे। बच्चा पैदा होने पर उस बच्चे को उनमें से जिस के नाम से संबध्य करती थी वह उसका बाप कहलाता था और इस बात को नितांत बुरा न समझा जाता था। इस्लाम ने इन तमाम रसमों का सुधार किया और बदकारी को समाप्त किया। कुर्आन करीम ने इस खुली बेशर्मी को बुराई बताते हुए कहा :

अनुवाद – "और मजबूर न करो अपनी कनीज़ों (दासियों) को बदकारी पर जबकि वह बचना चाहें। यह तुम इसलिए करते हो कि दुन्या में माल कमाओ।"

इस्लाम ने न केवल बेहयाई और अशलीलता की निन्दा की बल्कि उसे हराम क़रार दिया और सभी की पवित्रता की सुरक्षा के सिलसिले में ज़िना (व्यभिचार) से कठोरता के साथ रोका।

अनुवाद – "और बदकारी के पास न जाओ बेशक वह बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह है।" (कुर्आन–सूरः इस्राईल 32)

बदकारी से रोकने के साथ–साथ उन तमाम बातों को, जो बेहयाई और बुरेकाम की बुन्याद बनती है, को भी हराम क़रार दिया है। चुनाचः इसी सिलसिले में मुसलमान मर्द और औरतों को अपनी नज़रें नीची रखने का आदेश दिया गया है।

अनुवाद – "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ईमान वालों से फरमा दें कि नज़रों को नीची रखें और अपने गुप्त अंगों की रक्षा रक्षा करें। यही उनके लिए अधिक सफ़ाई की बात है। (कुर्आन–सूरः नूर–30)

मुसलमान औरतों को विशेषकर यह ताकीद की गई कि वह ऐसा अवसर ही न दें जिससे मर्द उनकी ओर आकर्षित हों। ख़ुदा का आदेश है –

अनुवाद – "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! ईमानदार औरतों से भी फ़रमा दीजिए कि वह अपनी नज़रें नीची रखें और गुप्त अंगों की रक्षा करें।" (सूरःनूर–31)

फिर इसी विषय को जारी रखते हुए कहा गया–

अनुवाद– "और अपना बनाव श्रृंगार न ज़ाहिर (प्रकट) करें मगर उन लोगों के सामने – पति, पिता, पतियों के पिता, अपने बेटे, पतियों के बेटे, भाई, भाइयों के बेटे, बहनों के बेटे अपनी मेलजोल की स्त्रियों अपने दास, दासियों (लौंडी गुलाम) अर्धानस्तमर्द जो किसी और प्रकार का स्वार्थ न रखते हों और वह बच्चे जो औरतों के गुप्त बातों से अभी परिचित न हों। वह अपने पैर धरती पर पटकती हुई न चला करें कि अपना जो श्रृंगार उन्होंने छुपा रखा है उसकी लोगों को जानकारी हो जाए।"

यह तो सावधानसी बताई गई है। अब यदि इन तमाम शिक्षाओं के बावजूद भी कोई अवैध श्रृंगार करे तो कठोर सज़ा निश्चित करके इस बात की व्यवस्था की गई है कि मुसलमान मर्द और औरतें अपनी और दूसरों की पाक दामनी की रक्षा करें इस लिए कि इंसानी इस्मत (सतीत्व) के आगे सब कुछ तुच्छ है।

अनुवाद – " बदकारी करने वाली औरत और मर्द दोनों में से हर एक को सौ, सौ कोड़े मारो और यदि तुम खुदा और आख़िरत के दिन (परलोक के दिन) पर ईमान व विश्वास रखते हो तो खुदा के आदेश को लागू करने में, तुम को उनके मारने में किसी प्रकार का तरस या लिहाज़ न होने पाए और उन दोनों की सज़ा के समय मोमिनीन (विश्वासियों) के एक समूह को मौजूद होना चाहिए" (कुर्आन – सूरः नूर–2)

आज भी देखा जा सकता है कि जिन देशों में इस्लामी सज़ाएं दी जाती हैं वहां दूसरी बुराइयों की तरह बदकारी का प्रतिशत न होने के बराबर है।

न्याय व इन्साफ : न्याय और

इन्साफ़ व उच्च मूल्य हैं जो किसी भी समाज की हैसियत की पहचान हैं। जिस समाज में न्याय व इन्साफ का प्रचलन होता है। वहां अधिकार और कर्तव्यों का पालन भली भांति होता है। खुदा का आदेश है –

अनुवाद – "इसमें सन्देह नहीं कि अल्लाह तआ़ला इंसाफ़ और लोगों के साथ नेकी करने का आदेश देता है।" (सूरः नहल–90)

"और जब लोगों के आपसी झगड़ों का फ़ैसला करने लगो तो इंसाफ़ से फ़ैसला करो।" (सूरः निसा–58)

इस्लाम में न्याय और इंसाफ़ के विचार की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) सूरः निसा की एक आयत में ऐसे अन्दाज़ से की गई कि जिससे न्याय व इन्साफ का हर पहलू प्रत्यक्ष रूप से सामने आ जाता है। कुर्आन का उपदेश है – अनुवाद– "ऐ ईमान वालो ! मज़बूती के साथ ईमान पर क़ाइम रहो और खुदा लगती (सच्ची) गवाही दो चाहे यह गवाही खुद तुम्हारे या तुम्हारे मां बाप या सगे सम्बन्धियों के लिए हानिकारक ही क्यों न हो। चाहे मालदार हो या मुहताज (निर्धन) क्योंकि खुदा तो हमारी निस्बत उन पर अधिक मेहरबान है। तुम हक़ (सत्य) से कतराने में अपने मन की दुष्ट इच्छाओं का पालन न करो और यदि घुमाफिरा करके गवाही दोगे या बिल्कुल इन्कार करोगे तो याद रहे कि जो कुछ तुम करते हो खुदा उसे भलीभांति जानता है।"

अल्लाह तआ़ला के इस हुक्म पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि इस्लाम में न्याय व इन्साफ के जो आदेश दिये गये हैं उनपर अमल करने से एक ऐसे आदर्श समाज का निर्माण होता है जिसमें अमीर ग़रीब, छोटा और बड़ा हर एक के अधिकार की स्वतः सुरक्षा हो जाती है। इस हुक्म पर ग़ौर करने से यह भी मालूम होता है कि किसी भी तरह का सम्बन्ध चाहे वह माता, पिता का ही क्यों न हो इंसाफ़ की राह में रूकावट नहीं बनना चाहिए।

सिद्क़ (सच बोलना) : सच बोलना एक ऐसी विशेषता है जो अल्लाह के सर्वश्रेष्ठ बन्दों से ख़ास तौर से सम्बन्धित है। इस का प्रत्यक्ष दर्शन रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबूवत का एलान है कि जब आप (सल्ल०) ने नबूवत का दावा किया तो कुफ़्फ़ार ने आप (सल्ल०) पर तरह तरह के आरोप लगाए लेकिन किसी ने आपको झूठा नहीं कहा।

एक बार कुरैश के बड़े–बड़े सरदार बैठे थे और हुज़ूर–ए–अकरम (सल्ल०) का ज़िक्र हो रहा था। इन सरदारों में नसर बिन हारिस भी थे जिन की कुरैश बड़ी क़द्र करते थे और उन्हें अनुभवी जानते थे उन्होंने कहा :

"कुरैश ! तुम जिस मुसीबत में घिरे हो अब तक उसका कोई उपाय नहीं कर सके। मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हारे सामने बच्चे से जवान हुए वह तुम में सब से अधिक प्रिय, सच बोलने वाले और अमीन (विश्वसनीय) थे और अब जबकि उनके बालों में सफ़ेदी आ चुकी है और वह तुम्हें सीधी राह दिखाते हैं तो तुम कहते हो कि वह जादूगर हैं, शाएर हैं, काहन (ज्योतिषी) और पागल हैं। खुदा की क़सम मैं ने उनकी बातें सुनी हैं मुहम्मद (सल्ल०) में ऐसी कोई बात नहीं, तुम पर अवश्य कोई विपदा ही आई है।"

इमाम ग़ज़ाली (रह०) ने सत्यता की छः श्रेणी बताई है –

(1) पहली ज़बान की सच्चाई, दूसरी नियत की सच्चाई, तीसरी इरादे में सच्चाई का पाया जाना, चौथे इरादे को पूरा कर दिखाना, पांचवां, मन और मन के बाहर की समानता सत्यता है और झूठी सच्चाई का दर्जा यह है कि इंसान धर्म की सच्चाई को पाने के लिए पूरी कोशिश करे और उन सभी श्रेणियों में कमाल हासिल करनेवाला सिद्दीक़ (सच्चा होने) का पद पाएगा।

सिद्क़ अर्थात सच्ची बात कहना वास्तु में साफ़ और सीधी बात करने का नाम है और कुर्आन करीम में इसे तक़वे (ईश यम, संयम) के साथ बयान किया गया है जैसा कि खुदा का आदेश है –

अनुवाद – "ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरते रहो, और साफ़ सीधी बात करो।" (सूरः अहज़ाब–70)

एक बार एक आदमी हुज़ूर (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुआ और निवेदन किया " या रसूलल्लाह ! मुझ में चार बुरी आदतें हैं। एक यह कि बदकार (दुराचारी) हूं और दूसरा यह कि चोरी करता हूं, तीसरे यह कि शराब पीता हूं और चौथा यह कि झूठ बोलता हूं। इन में से केवल एक आदत आप की ख़ातिर छोड़ सकता हूं।"

हुज़ूरे अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया "झूठ न बोला करो।"

चुनान्चः उसने प्रतिज्ञा की कि वह झूठ नहीं बोलेगा। अब जब रात हुई तो उसको शराब पीने का जी चाहा और फिर बदकारी के लिए आमादा हुआ। अचानक उसे ख़्याल आया कि सुबह को जब हुज़ूरे अकरम(सल्ल०) पूछेंगे कि रात में तुमने शराब पी, बदकारी की तो क्या जवाब दूंगा।

यदि हां कहूंगा तो शराब और ज़िना (परस्त्री गमन) की सजा दी जाएगी। यह सोचकर दोनों काम से बाज़ रहा। जब रात अधिक बीत गई तो चोरी के लिए घर से निकलना चाहा फिर इसी ख़्याल ने उसका दामन थाम लिया कि कल पूछगछ हुई तो क्या जवाब दूंगा। हां कहा तो हाथ काटा जाएगा और इन्कार नहीं कर सकता कि प्रतिज्ञा भंग होगी। यह ख़्याल आते ही इस जुर्म से भी बाज़ रहा। सुबह को रसूल के दरबार में हाज़िर हुआ और निवेदन किया – "या रसूलल्लाह! एक झूठ न बोलने से मेरी चारों आदतें छूट गईं। यह सुनकर आप (सल्ल०) प्रसन्न हुए। इस घटना से यह बात अच्छी तरह मालूम हो जाती है कि झूठ को छोड़ कर सच्च को अपनाया जाए तो सारी बुराइयां अपने आप समाप्त हो जाती हैं। इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "सच बोलना नेक कामों का निर्देश देता है और नेक काम जन्नत में ले जाता है। इन्सान सच बालते बोलते खुदा के यहां सच्चों में लिखा जाता है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका

प्रोफेसर शान्तिय राय

मुसलमान और जनआन्दोलन (चौथी क़िस्त)

मैंने पिछले भद्र 1375 के "परिचय" के एक संस्करण में "भारतीय मुक्ति संग्राम व मुस्लिम समाज" विषय के अन्तर्गत एक लेख लिखा था। इस लेख में देश में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में भारत में मुसलमानों के योगदान पर संक्षिप्त बहस की गई थी। इसमें विशेषकर 182० से 183० के बीच आजादी के लिए सशस्त्र संघर्ष का उल्लेख था। कुछ एक कमियों के बावजूद इस लेख पर सहृदय पाठकों की जो प्रतिक्रिया रही उसे याद करके मुझे खुशी होती है।

इससे मुझे आज़ादी के लिए भारतीय संघर्ष के वृहत्तर परिप्रेक्ष में मुस्लिम समुदाय के योगदान पर लिखने की प्रेरणा मिली। संयोग से मैं पुनः दोहराता हूं कि आज़ादी के आन्दोलन में मुस्लिम प्रतिभागियों में से अनेक ऐसे थे जो न तो कोई वर्ग–भेद का संकुचित दृष्टिकोण रखते थे और न ही वे यह दिखाने के लिए करते थे कि ऐसा करने से वे जानबूझ कर कोई क्रान्तिकारी रोल एक मुसलमान की हैसियत से अदा कर रहे हैं। अपने धर्म पर विचार किये बिना उन्होंने वृहत्त जन आन्दोलन में भाग लिया और भारत में आजादी हासिल करने के लिए एक मजलूम इन्सानियत के मेम्बर की हैसियत से अपने तनमन की बाज़ी लगा दी; उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में यह समझ कर हिस्सा लिया था कि यह पैन इस्लामी आन्दोलन का एक भाग है।

यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि मैं अचानक केवल मुसलमानों के योगदान पर लिखने के लिए क्यों तैयार हो गया। मेरा जवाब है कि पहली बात तो यह है कि हिन्दू समुदाय के कुछ ऐसे इतिहासकार और इतिहास की पुस्तकों के लेखक हैं जो साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से सोचते और वकालत करते हैं कि भारत की आज़ादी के आन्दोलन में मुसलमानों का कोई रचनात्मक रोल नहीं रहा है। और यह कि वह वास्तव में इसके विरोधी थे। हमारे कुछ राजनीतिक नेता जिनमें वह लोग भी शामिल हैं जो अपने को वामपंथी और सोशलिस्ट कहलाते हैं, जो इस प्रकार के विचार को बल देते हैं। वे इस प्रकार का विचार अपने स्वयं के काल्पनिक तर्कों पर रखते हैं, और हिन्दू इतिहासकारों द्वारा प्रचारित हमारी आज़ादी के आन्दोलन में मुसलमानों के तथा कथित नकारात्मक रोल के सिद्धान्त को आवश्यक रूप से स्वीकार करते हुए इतिहास का भौतिकवादी अर्थ लगाने में अपने को संतुष्ट करते प्रतीत होते हैं। दूसरे यह कि कुछ ऐसे मुस्लिम इतिहासकार हैं जो दूसरी तरफ़ जानबूझ कर अथवा अंनजाने में इतिहास को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करने को प्राथमिकता देते हैं।

इतिहास लिखने वालों में इस साम्प्रदायिक एवं एक पक्षीय दृष्टिकोण के फलस्वरूप 1947 के बाद भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में मुस्लिम युवा उन उदार मुसलमानों के बारे में कुछ भी नहीं जान सके जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में दूसरों के साथ बराबर के भागीदार रहे। भारत में मुस्लिम युवाओं ने जाना कि उनके समुदाय के लोग ब्रिटिश राज्य के दासवत समर्थक थे और पाकिस्तान में मुस्लिम युवाओं ने जाना कि एक मात्र सच्ची लड़ाई जो मुसलमानों ने लड़ी वह साम्प्रदायिक आधार पर शक्ति के बंटवारे की लड़ाई थी जिसकी शुरूआत मुस्लिम लीग ने की थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों के पक्षपाती इतिहासकारों का भला हो कि इन ग़लत विचारों ने नवजवानों के मन मसितष्क में गहरी जड़ें पकड़ ली हैं। वैज्ञानिक इतिहासकार अब महसूस करने लगे हैं कि इतिहास के तोड़ मरोड़ के इस प्रयास ने किस प्रकार भारतवासियों के संवेगात्मक(Emotional) एकीकरण में बाधा उत्पन्न कर दी है।

इस प्रश्न को भली प्रकार समझने के लिए उन तमाम विचारधाराओं का जायज़ा लेना ज़रूरी है जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भारत के स्वतंत्रता संग्राम की मुख्य धारा में अपना योगदान दिया। (क) वहाबियों का सशस्त्र संघर्ष और अग्रि युग की प्रारम्भिक क्रानितकारी शक्तियां (1832–1934) (ख) संवैधानिक आन्दोलन (1885–1918) (ग) जन आन्दोलन (1921–1942) (घ) जनसाधारण का क्रान्तिकारी संघर्ष (1918–1847)

पिछले अध्याय में मैंने वहाबियों के सशस्त्र संघर्ष और अग्रियुग के प्रारम्भिक क्रान्तिकारी शक्तियों में मुसलमानों की भूमिका का वर्णन किया संवैधानिक लाइन पर राष्ट्रव्यापी आन्दोलन 1885 में कांग्रेस के जन्म के साथ शुरू हुआ। 1921 तक कांग्रेस आन्दोलन का मुख्य स्वरूप अपील और मुकदमों का दायर करना था। 1905 में बंगाल के विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन ने लोगों की सीधी लड़ाई का रूप धारण कर लिया और यह बिना रोक टोक के बढ़ती रही। कुछ तो कांग्रेस की संवैधानिक कमियों के कारण और कुछ इस लिए कि इस आन्दोलन का नेतृत्व व संचालन मुख्यता प्रारम्भ काल के क्रान्तिकारियों के द्वारा हो रहा था। कुछ भी हो इस लड़ाई से कांग्रेस को बल

मिला। कांग्रेस के संवैधानिक एजीटेशन के दौरान मुस्लिम समुदाय के उभरते हुए बुद्धिजीवी वर्ग ने राजनारायण बोस की हिन्दू राष्ट्रवादिता और सर सैयद अहमद खां की मुस्लिम राष्ट्रवादिता उपदेश के बावजूद राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लिया। बदरूद्दीन तैयबजी और सीवान के रहमतुल्लाह जैसे विख्यात मुसलमान कांग्रेस की सेवा के लिए आगे आये और कांग्रेस के अध्यक्ष की कुर्सी को सुशोभित किया। मौलाना शिबली नोमानी जैसे अनेक मुस्लिम विद्वान तथा बुजुर्ग कांग्रेस के पीछे खड़े होने में नहीं हिचकिचाते थे। कांग्रेस के तीसरे अधिवेशन के अध्यक्ष तैयबजी अंजुमने इस्लाम की ओर से कांग्रेस के लिए प्रतिनिधि चुने गये थे। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में तर्क देते हुए ज़ोर देकर बताया कि भारत के किसी भी महत्वपूर्ण समुदाय के लिए यह कितनी अजीब बात है कि वह अपने को नेशनल कांग्रेस से, जिसमें राष्ट्र की आशा की किरणें निहित हैं, अलग रखे। कांग्रेस के बारहवें अधिवेशन के अध्यक्ष रहमतुल्ला सिवानी ने बड़े अच्छे ढंग से कट्टर तथा एंग्लोफिल मुसलमानों द्वारा रखे गये कांग्रेस में न शामिल होने सम्बन्धी सत्रह सूत्रीय बहस का मुंह तोड़ जवाब दिया। इसके अतिरिक्त एक धनी मुसलमान हुमायूं करमान ने कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन के लिए पांच हज़ार रूपये का चन्दा दिया। बम्बई के एक दूसरे प्रभावशाली मुसलमान सौदागर अली मोहम्मद भीजी ने गांवों में कांग्रेस को लोकप्रिय बनाने के लिए अथक प्रयास किया।

मौलाना शिबली नोमानी के अलावा दूसरे बहुत से मुस्लिम बुजुर्ग जैसे मौलाना रशीद अहमद गंगोही, मौलाना सलफुल्ला, मुल्ला मोहम्मद शीराज़ी ने अपने को कांग्रेस की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। बंगाल के विभाजन के विरुद्ध कांग्रेस के संवैधानिक आन्दोलन (कानूनी लड़ाई) के दौरान इसने राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। ब्रिटिश सरकार ने हिन्दू राजनीतिक नेताओं के प्रभाव से मुसलमानों के अलग करने के लिए ढाका के नवाब सलीमुल्ला की सहायता मांगी। उनके भड़काने पर और "प्रचार भ्रमण" से कोमिल्ला (पूर्वी बंगाल) में साम्प्रदायिक दंगों का माहौल पैदा हो गया। फिर भी एक दो अप्रिय घटनाओं को छोड़कर बंगाल के अनेक मुस्लिम नेताओं ने विभाजन विरोधी आन्दोलन में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। उनमें ढाका रियासत के एक अन्य हिस्सेदार ख़्वाजा अतीकुल्ला का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने खुलकर एलान किया "मैं तुम्हें बता दूं कि यह कहना ग़लत है कि पूर्वी बंगाल के मुसलमान बंगाल के बंटवारे के हक़ में हैं। सच्चाई यह है कि केवल मुट्ठी भर मशहूर मुसलमान हैं जो अपने स्वार्थ के लिए विभाजन का समर्थन करते हैं।" सेन्ट्रल मोहमडन एसोसिएशन की ओर से भी नवाब अमीर हुसैन ने सरकार की बंगाल के बंटवारे की योजना की सार्थकता पर संदेह व्यक्त करते हुए बयान जारी किया।

बंगाल के विभाजन के विरोध में सात अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हाल में एक विशाल सभा आयोजित की गई और उसके मुख्य प्रस्ताव का समर्थन मोल्वी हसीबुद्दीन ने किया। मुस्लिम समुदाय के अनेक विख्यात वक्ताओं ने लोगों को स्वदेशी आन्दोलन में भाग लेने हेतु प्रेरित करते हुए पार्कों में लेक्चर दिये। उनमें से मशहूर बैरिस्टर अब्दुल रसूल, मोल्वी अब्दुल क़ासिम, दीदार बख़्श, दीन मोहम्मद, गफूर, लियाक़त हुसैन, इस्माईल शीराज़ी और अब्दुल हलीम ग़ज़नी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। बारीसाल राजनीतिक कांफ्रेंस की अध्यक्षता करते हुए बैरिस्टर अब्दुल रसूल को घोर शारीरिक व मानसिक यात्नाएं दी गईं। मोल्वी इस्माईल शीराज़ी ने अपने उत्तेजनापूर्ण भाषण से लोगों में खलबली मचा दी। विभाजन विरोधी फड़के तत्वाधान में मुस्लिम नेताओं ने अपने हस्ताक्षर से चन्दा जमा करने की अपील जारी की।

अगस्त 6, 1905 की मीटिंग के बाद जन आन्दोलन छात्रों में फैल गया। तो अब्दुल अहमद यूसुफ जीलानी के नेतृत्व में बुरहानपुर में विद्यार्थियों का एक अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

इससे पूर्व मैंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के भाग लेने का उल्लेख किया है। प्रथम विश्वयुद्ध और 1917 की बोलशिवक क्रानित की समाप्ति पर अली ब्रदर्स (मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली) के नेतृत्व में आज़ादी की लड़ाई तेज़ी से आगे बढ़ी। मुस्लिम समुदाय की एक बड़ी संख्या ने उस आन्दोलन में हिस्सा लिया, शारीरिक यात्नायें झेलीं और जेल गये। उस समय बंगाल के जो मुस्लिम नेता आगे आये और आन्दोलन में सम्मिलित हुए उनमें मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मौलाना अकरम खां, इस्माईल शीराज़ी, मैमन सिंह के गयासुद्दीन, मोल्वी बुकाई नागरी, मोल्वी फूलपुरी, करातिया के मशहूर लीडर चान्दमियां, कोमिल्ला के अश्रफुद्दीन अहमद आदि ने महत्वपूर्ण कार्य किया। इनमें से कुछ क्रान्तिकारी आन्दोलन से भी जुड़े थे जैसा कि इसके पहले बयान किया गया।

भारत के अन्य भागों में भी मुस्लिम नेताओं के नाम उल्लेखनीय हैं जैसे डा० एम०ए०अंसारी, डा० सैफुद्दीन किचलू, डा० आसिफ़ अली, हसरत मोहानी, लाहौर के डा० आलम, नाथ वेस्ट फ्रन्टियर सूबा के खान अब्दुल गफ़्फ़ार खाँ, हकीम अजमल खां, तसद्दुक़ अहमद खां शेरवानी, मौलाना ज़फ़र अली खां एडीटर "ज़मींदार", कालीकट (केरल) में जनाब अब्दुर्रहमान एडीटर "अल-अमीन" आदि। अली ब्रदर्स कांग्रेस की उच्चतम कार्यकारणी के सदस्य थे। मुसल्मि विद्वान में सब से अधिक विद्वान और कुरआन व हदीस के मर्मश मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और दिल्ली के डा० अन्सारी और डा० ज़ाकिर हुसैन जैसे लोगों ने, जिन्होंने मुसलमानों को प्रेरणा दी, यह सभी कांग्रेस के प्रतिनिधि थे। राजनयिक तथा जातीय बन्धनों तथा यात्नाओं की परवाह किये बिना उन्होंने एकता और संघर्ष का झंडा बुलन्द रखा।

1921 में अली ब्रदर्स ने लोगों के

बीच अद्वितीय रोल अदा किया। यह कुछ तो युद्ध के दौरान उनकी गतिविधियों तथा यात्नाओं के कारण था और कुछ मुसलमानों में नये जागरण के कारण। किन्तु वास्तव में वह महात्मागांधी की शिक्षाओं से प्रभावित थे। उन्हें महात्मा का दायां और बांया हाथ समझा जाता था। गांधी जी ने उन्हें साथ लेकर पूरे देश का भ्रमण किया और हमें अच्छी तरह याद है कि उन दिनों महात्मा गांधी की जय' के साथ 'अली भाइयों की जय' का नारा लगाया जाता था। जून 2०, 192० को इलाहाबाद में हिन्दू–मुस्लिम की मिली जुली कांग्रेस में असहयोग आन्दोलन का निर्णय लिया गया।

सुभाष चन्द्र बोस अपने संस्मरण में यू०पी० के प्रभावशाली नेता मौलाना हसरत मोहानी के बार में लिखते हैं, "अहमदाबाद के कांग्रेस अधिवेशन में एक रोचक घटना घटी। हसरत मोहानी ने एक प्रस्ताव रखा कि कांग्रेस के लक्ष्य और उद्देश्य इसके संविधान में एक गणतन्त्र (फेडरल रिपब्लिक आफ इण्डिया) की स्थापना के रूप में स्पष्ट किये जायें। उनका भाषण इतना प्रेरणादायक था और श्रोताओं ने उसे इतना पसन्द किया कि ऐसा लगताथा कि उनका प्रस्ताव भारी बहुमत से पास हो जायेगा। किन्तु प्रस्ताव महात्माजी के अकेले विरोध से अस्वीकार कर दिया गया।" सन् 1923–27 के बीच हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए बार बार प्रयास किये गये किन्तु इसका कोई नतीजा न निकला। 1925 में देश बन्धु चितरंजन दास की मृत्यु से एकता के इन प्रयासों को बड़ा धक्का पहुंचा। फिर भी जब साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए अखिल भारतीय आन्दोलन की शुरूआत हुई तो मुस्लिम लीग ने पहली बार कांग्रेस के नेताओं का साथ दिया। यदि 1927 को कलकत्ता की एकता कांफ्रेंस में मोहम्मद अली जिन्दा द्वारा रखी गयी चौदह सूत्रीय मांग पर कांग्रेस के नेताओं ने सहानुभूति पूर्वक विचार किया होता तो 1947 में भारतीय उपमहाद्वीप को राष्ट्रीय क्रान्ति द्वारा उत्पन्न गूढ़ समस्याओं और पेचीदगियों का सामना न करना पड़ता।

इन कठिनाइयों के बावजूद पंजाब के एक लीडर डा० आलम ने मुस्लिम बहुसंख्यक राज्यों का दौरा शुरू किया। और साम्प्रदायिकता के विरुद्ध भाषण दिये। अगस्त 1928 में मेमन सिंह नगर में "बंगाल राज्य छात्र कांफ्रेंस" के द्वितीय वार्षिक सम्मेलन में डा० आलम के अध्यक्षीय भाषण के यह शब्द लेखक को अच्छीतरह याद हैं, "हमें ब्रिटिश साम्राज्य से पूरी ताक़त के साथ लड़ना होगा किन्तु उससे पहले हमें हर जगह और हर समय साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ाई लड़रनी होगी।" पंजाब के इस उत्साही तथा उदारहृदय देश भक्त ने उस समय बंगाल के नवजवानों में हलचल मचा दी।

1928को नेहरू रिपोर्ट मुस्लिम लीग के नेताओं को संतुष्ट नहीं कर सकी। उस समय राष्ट्र नेताओं की निष्ठा और लगन में कमीके कारण राष्ट्रीय एकता को ठोंक पीट कर मज़बूत करने की समस्याओं में गतिरोध उत्पन्न हो गया। अप्रैल 1930 में गान्धी जी के नेतृत्व में सवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। बहुत से ख़िलाफत कार्यकर्ताओं ने अपने को उससे दूर रखा। जबकि बहुतों ने इसमें भाषण दिया। उस समय तक मुस्लिम लीग की ख्याति बहुत अधिक नहीं थी। कुछ भी हो, किसी समग्र सामाजिक क्रान्ति के अभाव में सवज्ञा आन्दोलन एक साल के अन्दरअपने रास्ते से भटक गया। इसी अवधि में गांवों में किसानों ने (कोमिल्ला, मेमन सिंह, छपरा, बलिया, आज़मगढ़) ज़मीदारों के अत्याचार के विरूद्ध आन्दोलन गठित किया और बम्बई, शोलापुर, मद्रास और कलकत्ता में जगह जगह हड़तालें हुईं।

साम्प्रदायिक झगड़ों का लाभ लेते हुए ब्रिटिश सरकार ने माहौल को दूषित करने के लिए 1932 में एक नया क़म्यूनल एवार्ड शुरू किया। इससे साम्प्रदायिक झुकाव वाली पार्टियों तथा नेताओं को देश में फूट और झगड़े को हवा देने में मदद मिली। कांग्रेस के रवैये के विरोध में डा०आलम तथा डा० अन्सारी जैसे चोटी के नेता उदासीन और निष्क्रिय हो गये। उस समय देश को अचानक निरोशा का सामना था। कांग्रेस में मौजूद विभिन्न वर्गों को एक साथ लेकर चलने की नीति के ढांचे में जन आन्दोलन को आगे बढ़ाना अब बिल्कुल सम्भव नहीं रह गया था। और इस प्रकार धीरे–धीरे यह चरण समाप्त हो गया। दूसरी गोल मेज कान्फ्रेंस की विफलता के तुरन्त बाद 1932 में गांधी जी को जेल भेज दिया गया। और इसके साथ ही सवज्ञा आन्दोलन का समय से पहले अन्त हो गया।

बंगाल में एक भयानक अत्याचार हो रहा था, सभी क्रान्तिकारी जेलों में ठूंस दियें गये। इन्डिया के कुछ अन्य भागों में भी राजनयिक कैदी काल कोठरियों में यात्नायें झेल रहे थे। जुल्म और अत्याचार की इस घड़ी में भी कांग्रेस में रहकर या उसके बाहर रहकर अनेक मुस्लिम नेताओं ने आज़ादी के लिए राष्ट्र की लड़ाई में हिस्सा लिया।

अनुवाद : मो० हसन अन्सारी

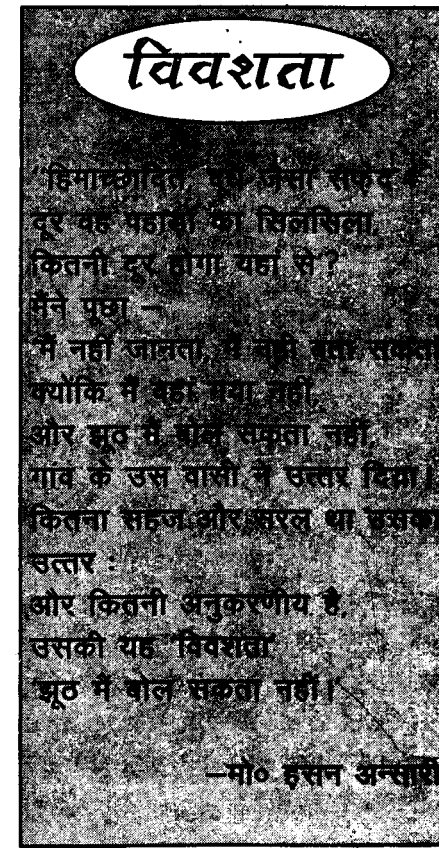

बच्चों का पृष्ठ

अरबी से अनुवाद

अल्लाह की ओर दावत

अहमद अली नदवी

फ़िरऔन हज़रत मूसा (अ) की बातों का कोई जवाब न दे सका और जब उनसे बचना चाहा तो सुवाल कर बैठा कि "ऐ मूसा हमें बताओ कि तुम्हारा परवरदिगार (पालन हार) कौन है? मूसा (अ०) ने उसको जवाब दिया, और कहा कि मेरा रब वह है जो धरती और आकाश और जो चीज़ भी इन के बीच है, उसका परवरदिगार है यदि तुम विश्वास करो तो।"

मूसा अ० का यह जवाब फ़िरऔन को बहुत खला और उसपर बड़ा गुस्सा आया। उसने चाहा सभा वाले भी इस जवाब पर गुस्सा हों और आश्चर्य करें। वह कहने लगा कि तुम इस की बातों को सुन नहीं रहे हो कि यह क्या कहता है। मूसा अ० की बात अभी समाप्त नहीं हुई थी । उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि "मेरा रब (परवरदिगार) तो तुम्हारा भी रब (खुदा) है और तुम्हारे बाप दादा का भी परवरदिगार। इसके बाद तो फ़िरऔन का पारा और चढ़ गया और गुस्से में कणों से कहने लगा कि "जो रसूल तुम्हारे पास भेजा गया है वह पागल है।"

मूसा अ० ने उससे फिर कहा "कि मेरा रब तो पूरब–पश्चिम का भी मालिक है और जो कुछ इसके बीच है उसका भी पैदा करने वाला है।"

फ़िरऔन ने मूसा को इस कड़वे विषय से हटाने के लिए कहा कि अच्छा मूसा यह बताओ हमारे पूर्वज (वंशज) का क्या हाल है फ़िरऔन ने अपने मन में सोचा कि अगर मूसा कहेंगे कि वह हक पर थे तो मैं कहूं गा वह तो बुत पूजते थे। और अगर कहेंगे कि वह तो पथ भ्रष्टता और मूर्खता में थे तो सभा के लोग क्रोध में आजाएंगे और कहेंगे कि मूसा ने हमारे पुर्खों को गाली दी।

परन्तु मूसा अ० फ़िरऔन से अधिक बुद्धिमान थे। उनको अल्लाह की तरफ़ से ज्ञान मिल रहा था। मूसा अ० ने फ़िरऔन से कहा कि इसका ज्ञान और जानकारी मेरे परवरदिगार के पास किताब (आमालनामा) में लिखी है और मेरा अल्लाह न ग़लती पर है न भूलता है। मूसा अ० समझ गये कि फ़िरऔन के पास अब कोई जवाब नहीं है। मूसा अ० ने फिर उससे कहा कि मेरे पैदा करने वाले ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिस्तर बनाया और उसने तुम्हारे लिये ज़मीन में रास्ते (मार्ग) बनाये और उसने तुम्हारे लिए आकाश से पानी उतारा। मूसा अ० की इन बातों से फ़िरऔन को बड़ी हैरत हुई उसकी समझ में नहीं आरहा था कि वह मूसा की इन बातों का क्या जवाब दे। बादशाहों की आदत है कि जब उनको कोई जवाब नहीं बन पड़ता है तो उनको गुस्सा आता है। फ़िरऔन को भी मूसा अ० की बातों पर गुस्सा आया और कहने लगा कि मूसा "तुमने मेरे सिवा किसी और को भगवान माना तो तुम्हें सज़ा दूंगा। और जेल में डलवा दूंगा।"

मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुअ़जज़ात

फ़िरऔन ने अपनी आखिरी बात कह दी तो मूसा अ० ने फिर फ़िरऔन से कहा कि "अगर तुम्हारे सामने अपने मुअ़जज़ात (निशानियाँ) दिखलाऊँ तो तुम उसको मानोगे (विश्वास करोगे)"? फ़िरऔन बोला कि "अच्छा दिखलाओ अगर तुम बड़े सच्चे हो तो।" मूसा अ० ने अपनी छड़ी ज़मीन पर फेंकी तो वह सचमुच का सांप हो गई। फिर मूसा ने अपना हाथ बग़ल में करके बाहर निकाला तो वह रोशन हो गया। यह देखकर फ़िरऔन ने अपने सभा सदस्यों से कहा कि "मुझे तो यह जादूगर मालूम पड़ता है" सब ने बादशाह की ताईद की और कहने लगे कि यह तो खुला (स्पष्ट) जादू है। मूसा अ० ने उससे कहा कि "कितनी बड़ी धांधली करते हो। जब हमने सच्चाई बताई तो तुम उसको जादू कहते हो। तुम्हें पता है कि जादूगर कभी सफल नहीं होते। अंत में फ़िरऔन ने एक और चाल चली और कहने लगा कि "तुम चाहते हो कि हम अपने बाप दादा के धर्म को छोड़ दें और बाप दादा को जो करते देखा उससे हट जायें। यह बात हम तुम्हारी नहीं मानेंगे।" फिर उसने अपने दरबारियों को मूसा का हव्वा खड़ा करके डराया और कहने लगा कि मूसा अपने जादू के ज़ोर पर तुमको तुम्हारी ज़मीन से निकालना चाहता है। तुम बताओ इस बारे में तुम्हारी क्या राय है क्या सुझाव है?

दरबारी कहने लगे कि आप अपने देश के बड़े–बड़े जादूगरों को बुलाकर मूसा से मुक़ाबला करवा दीजिए। बादशाह ने उनकीराय से सहमति ज़ाहिर की और एलान करा दिया कि जो भी जादू जानता है वह बादशाह के पास आ जाये। मिस्र के कोने–कोने से जादूगर बादशाह के पास आ गये और समय निर्धारित हो गया। लोगों से कहा जाने लगा कि जादूगर सफल होंगे तो हम उनके साथ होंगे।

मैदान में

लोग सुबह ही मैदान जाने के लिए निकल पड़े और सब उस मैदान में जमा हो गये जहां यह मुक़ाबला होना था। मैदान में बच्चे, औरतें, मर्द बूढ़े और जवान सब आ गये। घर के घर खाली हो गये। घरों में वही बचे रह गये जो बीमार थे या मजबूर थे।

मतरिया फ़िरऔन के ज़माने में एक गांव था उस गांव में केवल चर्चा थी

जादू और जादूगरों की। असवान, अकसर तथा जीजा शहरों के मशहूर जादूगर भी आये। आपस में वह बातें करने लगे कि कौन सफल होगा? मिस्र के बड़े से बड़े जादूगर आ गये और सोचने लगे कि हम में एक से बढ़कर एक है। कोई तो सफल होगा ही। मूसा की हैसियत ही क्या है। उसने और उनके भाई ने जादू सीखा नहीं है। उनकी सफलता में शक (सन्देह) है। उसका पालन–पोषण महल में हुआ है और फिर वह डर कर मिस्र से चला गया था। कुछ वर्ष मदयन में बिताये। उसने जादू कहां और किससे सीखा होगा? मिस्र में तो नहीं सीखा यह यक़ीन है। और मदयन में कोई सिखाने वाला नहीं है यह भी पता है। बनी इस्राईल भी आशा–निराशा के साथ आये। दिल में दुआ मांग रहे थे कि अल्लाह मूसा पर और बनी इस्राईल पर रहम फ़रमाये और उनकी सहायता करे।

बड़े गर्व और घमण्ड के साथ जादूगर मैदान में पहुंचे। रंग बिरंगे कपड़े पहने और अपने लाठी डंडा और रस्सियों के साथ आये। बड़े खुश थे और इतरा रहे थे और कहते थे कि आज जौहर दिखाने का दिन है। आज बादशाह हमारा लोहा माने गा आज लोग हमारी क़ीमत जानेंगे।

जादूगर जमा होने के बाद बादशाह से बोला कि हमारी कामयाबी (सफलता) पर हमको क्या इनाम मिलेगा। बादशाह (फ़िरऔन) ने कहा कि तुम मुझसे क़रीब (निकट) हो जाओगे यही तुम्हारा इनाम और पुरस्कार होगा। इस बात से लोग धोखा खा गये और वह उसके लालच का शिकार हो गये।

झूठ और सच

मूसा अ० ने उन जादूगरों से कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डाला। जादूगरों ने फ़िरऔन की इज्ज़त की क़सम खाते हुए अपनी सफलता की आशा लिये अपने डंडों और रस्सियों को ज़मीन में डाला। लोगों ने डंडे और रस्सियों को ज़िन्दा सांप देखा तो उनको बड़ा आश्चय्र हुआ और डरे भी। उनसे बचने के लिए लोग पीछे हटे और शोर मचाने लगे सांप–सांप मूसा अ० ने भी वह देखा जो लोग देख रहे थे मूसा अ० को भी हैरत हुई उनकी रस्सियों और लकड़ियों को जादू के जोर पर दौड़ते हुए सांप बन जाने पर । मूसा अ० ने भी दिल में डर महसूस किया। उनका डर स्वाभाविक था। आज परीक्षा का दिन था। आज ही की सफलता पर इज़्ज़त व ज़िल्लत (बेइज़्ज़ती) का दारोमदार था। अगर जादूगर सफल हो जाते हैं तो अल्लाह की (मंशा) मसलेहत और अगर मेसा सफल होते हैं तो अल्लाह की मरज़ी। मूसा कीसफलता एक आदमी की सफलता नहीं है उनकी सफलता दीन की सफलता है।

अल्लाह ने मूसा अ० को हिम्मत दी और उनसे कहा कि डरने की कोई बात नहीं। जीतोगे तुम्हीं। तुम्हारे हाथ में जो है उसको डाल दो। वह उनसबको खा जायेगा। जो कुछ उन्होंने जादू के जोर पर बनाया है। यह तो जादूगरों का धोखा है। जादूगरों ने जो पेश किया है वह उसमें सफल नहीं हो सकेंगे।

मूसा अ० ने जादूगरों से कहा कि जो कुछ तुमने बनाया है अल्लाह उसको समाप्त कर देगा। अल्लाह गड़बड़ करने वालों के कार्य को ठीक नहीं समझता सत्य–सत्य ही है। अपराधी चाहे या न चाहे अल्लाह अपनी बात सत्य साबित करके रहेगा। मूसा अ० ने अपना डंडा डाला। उससे जादूगरों ने जो कुछ बनाया था समाप्त हो गया। सत्य की विजय हुई और जो कुछ उन्होंने किया वह बरबाद हो गया। इससे जादूगर परेशान हुए और दंग रह गये। और कहने लगे कि यह क्या हो गया। वास्तव में जादूगर तो हम हैं हम जादू की हर क़िस्म जानते हैं। हम तो इस फ़न के गुरू हैं जो कुछ मूसा ने दिखाया है वह जादू हो ही नहीं सकता। अगर वह जादू होता तो हम जादू से जादू का तोड़ करते हैं। हमारा फ़न (काम करतब) हमारा अभ्यास और हमारी उस्तादी सब ख़त्म कर दी। हमारा जादू इसके सामने ऐसा फीका पड़ा जैसे शबनम सूरज के सामने सूख जाती है। वह समझ गये कि मूसा अल्लाह के नबी हैं। वह सज्दे में गिर गये और कहा कि हम मूसा व हारून के रब पर जो समस्त सृष्टि का रब है ईमान लाये।

फ़िरऔन की धमकी

जादूगरों के इमान लाने से फ़िरऔन का पागलपन बढ़ गया गुस्से से उठता, बैठता गरजता और बरसता था। उसकी सब योजना असफल हो गई । उसने तो जादूगरों के ज़रिये मूसा मूसा को शिकस्त देना चाहा था। उल्टे जादूगर के लश्कर में शामिल हो गये। उसने मूसा को आड़ बना कर उनका शिकार करना चाहा और वह सब ईमान ले आये। सब तदबीरें (उपाय) उलटी हो गई। फ़िरऔन तो समझता था कि वह लोगों की अक़्ल पर वैसे ही शासन करता है जैसे उनके जिस्मों पर करता है लोगों के दिलों पर व उसी तरह हुकूमत करता है जैसे उनकी ज़बानों पर उसकी हुकूमत है। किसी को यह हक़ नहीं कि उसके पूछे बिना कोई किसी पर ईमान ले आये।

फ़िरऔन ने ईमान लाने वालों से कहा कि तुम मुझसे पूछे बिना कैसे ईमान ले आये। उसने उसी शाहाना घमण्ड में कहा कि वही तुम्हारा बड़ा है। जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। यह तुम्हारी साज़िश है जो तुमने शहर में रची है ताकि शहर के रहने वालों को शहर से निकाल दो। तुम्हें तो अब पता चलेगा। फिर फ़िरऔन ने एक तीर और छोड़ा और बोला कि मैं तुम्हारे हाथ पैर काट दूंगा और तुम सबको फांसीपर लटका दूंगा।

ईमान लाने वालों ने उसकी हर बात सुनी। हर तीर सहा और सबके साथ उससे कहा कि अब हमें कोई परवाह नहीं। हम तो अपने पैदा करने वाले की तरफ़ लौटकर आने वाले हैं। हम तो चाहते हैं कि अल्लाह हमारे पाप माफ़ कर दे और हम प्रथम ईमान लाने वालों में से हैं।

(शेष पृष्ठ 25 पर)

मैकू

मो० हसन अन्सारी

दुबला–पतला बदन। चेहरे पर झुर्रियां । आंखें गढ्ढों में धंसी हुईं। माथेपर पड़ी लकीरें। पंसुलियों से चिपका हुआ पेट। कपड़े के नाम पर एक फटी पुरानी धोती। पैर नंगे। धोती फटी सी लटी दुपटी अरू पांव उपानहि के नहीं सामां' को चरित्रार्थ करने वाले मैकू की तस्वीर आज भी जब आखों के सामने नाचने लगती है तो अनायास ही 'दीनबन्धु' की याद आ जाती है और जीवन सार्थक सा होता प्रतीत होने लगता है।

मैकू की उम्र कोई सत्तर से ऊपर थी और उसके आगे पीछे कोई न था। किन्तु हड्डियों के इस ढाँचे से मुहल्ले के बच्चे, बूढ़े और जवान सभी परिचित थे। मैंने मैकू को जीवन की उन घड़ियों से जूझते देखा है जिस बुढ़ापे के लिए बचपन में दुआयें मिला करती हैं – खुश रहो, जवान हो, बूढ़े हो जाओ। जवान होने तक की बात तो बहुत अच्छी, परन्तु बुढ़ापे में क़दम रखते ही, सहारे की चिन्ता हर एक को सताने लगती है। और तब कभी कभी लगने लगता है कि जीवन के "काले कोसों" की यह यात्रा कैसे कटेगी। मैकू के चेहरे पर निराशावादिता की झलक मैंने कभी नहीं देखी। हर हाल में खुश। राज़ी ब रज़ा। उसे अपने जवाब दे चुके बाहुबल पर भरोसा था। अपने पालन हार पर उस का अडिग विश्वास था। वह श्रम के महत्व को जानता था। मेहनत की कमाई में उसका दृढ़ विश्वास था, फलतः चौबीस घंटे में आधी रोटी भी उसका पेट भरने को तो नहीं पेट की आग बुझाने को काफी थी। उसे सन्तोष और निष्ठा की दौलत प्राप्त थी उस का मनोबल मज़बूत था। सर्वशक्तिमान में उसका अडिग विश्वास था। यही उसकी पतवार थे जिनके सहारे वह जीवन के झंझावत का बड़ी कामयाबी से मुक़ाबला करता रहा।

पुलिस लाइन की चहार दीवारी से लगी हुई एक झुग्गी। उसके भीतर पड़ी हुई एक टूटी खाट। एक दो पुराने बर्तन। एक खुरपी एक डलिया। जाड़े की रातों में किसी टिमटिमाते दिये की याद दिलाता हुआ 'तपता' जिसके पास बैठकर मैकू माध–पूस की ठिठुरन दूर करता था। यही मैकू की कुटिया की कुल गृहस्थी थी। इसमें न तालों की जरूरत थी न कुंडीकी आवश्यकता। कुत्ता अन्दर न जासके इसके लिए एक बेड़ा लगा था, बस।

पास में एक बाबूजी का छोटा सा परिवार रहता था। पढ़ा लिखा सहृदय परिवार । दीन दुखियों के लिए इस परिवार के दिल में बड़ी जगह थी। मैकू जब भी उनके यहां जाता उसे खाने को कुछ न कुछ अवश्य दिया जाता। मैकू चुपचाप खाना लेकर खा लेता। और दुआयें देता। फिर वह कभी डलिया भर मिट्टी लेकर आता और कहता, बाबू जो यह मिट्टी आप के गमलों के लिए लाया हूं, और यह कहता हुआ डलिया उलट कर चला जाता कभी मेंहदी की पत्ती लाता कभी चने का साग, कभी कुछ बेर। और इनके लिए वह कुछ पैसा आदि कभी न लेता। उसकी कोशिश होती कि वह किस प्रकार बाबूजी के एहसान का कुछ बदला चुका दे।

किसी का कृपा पात्र बनना अच्छी बात है परन्तु किसी के एहसान को याद रखना और यथा सम्भव कुछ करके उसके प्रति आभार व्यक्त करना बड़ी बात है। यह एतराफ़, यह अभिव्यक्ति व्यक्ति का अपने मोहसिन के प्रति हो सकता है, मां–बाप के प्रति हो सकता है, मित्र, रिश्तेदार नातेदार के प्रति हो सकता है, किसी इन्सान के प्रति हो सकता है और अपने मालिक व ख़ालिक़, और संसार के पालनहार के प्रति हो सकता है। मैकू की यही प्रवृत्ति और भावना बार–बार उसकी याद दिलाती है।

ईश्वर करे हमारी नई पीढ़ी के रोम–रोम में श्रमशीलता और थोड़े से एहसान का भी बदला चुकाने की भावना घर कर जाये। ऐसा हो जाये तो निश्चय ही मानवता का कल्याण होगा, समाज सुखी होगा और सद्भाव, सृजन और सुख–सौहार्द का बोल बाला होगा।

पुरानी खांसी और श्वांस रोग

आक के हरे पत्तों पर बारीक सफेद रंग का रोंआ होता है उसे सावधानी के साथ चाकू से अलग करें, ताकि आक के पत्तों का दूध उसमें सम्मिलित न हो। इसकी गोलियां बाजरा के दाने के बराबर बनायं। पुरानी खांसी और श्वांस रोग के लिए लाभकारी है। एक गोली प्रातः व एक गोली सायं खिलाकर ऊपर से पान का बीड़ा दें। 2–4 दिन के प्रयोग से लाभ होगा।

बिच्छू का विष व घावों की चिकित्सा – आक का दूध 20 ग्रा0, नौशादर 5 ग्रा., चूना अनबुझा, 2.1/2 ग्रा. ग्लिसरीन 30 ग्रा. मिलाकर खरल करके मलहम बनाकर शीशी में सुरक्षित रखें। समयानुसार व आवश्यकतानुसार बिच्छू के डंक पर 2 रत्ती से 4 रत्ती माल दें। कुछ ही क्षणों में आरम्भ होगा।

आक की जड़ का छिलका सूखा हुआ 1 भाग, राल 3 भाग, कत्था 4 भाग तीनों को बारीक पीसकर छान लें। साफ करके घावों को भरने के लिए छिड़कें।

शुक्रप्रमेह व मर्दाना कमजोरी – शिंगरफ 12 ग्रा., आक का दूध 250 ग्रा. खरल करें ताकि दूध जज्ब हो जाये। इसकी टिकिया 1 रू. जितनी मोटी बनाकर धूप में अच्छी प्रकार शुष्क करें। जब शुष्क हो जाये तो इस पर खद्दर का सूत 12 ग्रा. लपेट दें, ताकि कोई स्थान खाली न रहे, फिर इस गोले को कड़ाही में रखकर आग लगायें। प्रातः अत्यन्त बढ़िया सफेद रंग की भस्म तैयार होगी। इसका प्रयोग – शुक्र प्रमेह, मर्दानाशक्ति तथा शीघ्रपतन के लिए लाभदायक है।

मात्रा – 1/2 रत्ती इसे मक्खन के साथ सेवन करें।

अतः उपर्युक्त विवरण के आधार पर अनुमान होता है कि सर्वसाधारण जड़ी बूटी 'आक' औषधीय रूप में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण औषध है।

क़ादियानियत से होशियार

इस्लाम के सभी उलमा चाहे वह देवबन्दी हों या बरेलवी, नदवी हों, अहले ह़दीस हों, हनफी हों, मालिकी हों,शाफ़ई हों, हंबली हों, अ़रब के हों या ग़ैर अ़रब हों सब ने कहा है कि क़ादियानी मुसलमान नहीं हैं चाहे वह अपने को क़ादियानी कहते हों या लाहौरी या अह़मदी कहते हों। जो व्यक्ति मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी को चाहे नबी मानता हो चाहे मुजतहिद मानता हो चाहे मसीहे मौऊद मानता हो चाहे महदी मानता हो, सबको पथभ्रष्ट (गुमहराह) बताया गया है अतः इन सब से होशियार रहने की ज़रूरत है।

इन के आदमी ऐसे गांवों में पहुंचते हैं जहां आलिम लोग या दीन का काम करने वाले लोग नहीं पहुंच पाते। फिर उन गावों के मुसलमान गरीब भी होते हैं वहां इन का आदमी पहुंच कर मुसलमानों के बच्चों को मुफ्त पढ़ाना शुरू कर देते हैं। ग़रीब मुसलमानों की माली मदद करते हैं। वहां के मर्दों और औरतों को स्पीशल बसों से अच्छा खिलाते पिलाते कादियान ले जाते हैं और हदिया तुहफ़ा (उपहार) के साथ वापस लाते हैं इस तरह सुन्नी मुसलमानों को क़ादियानी बनाने का काम करते हैं।

ऐसी दशा में हर पढ़े लिखे दीन से सम्बन्ध रखने वाले मुसलमान का फर्ज है कि वह ऐसी जगहों का पता लगाएं और वहां जानकारों के साथ पहुंचें और अपने भाइयों को कादियानियत की गुमहराही (भ्रष्टाचार) से बचाने की कोशिश करें। समझाने बुझाने, लिट्रेचर प्राप्त करने आदि के लिए " शोब–ए–दावत व इर्शाद' नदवतुल उलमा पो० बा० नं. ६३ लखनऊ से सहयोग लिया जा सकता है।

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki,
Chowk, Lucknow- 2260063

0522-627487
HOTEL AVADH
Hostel Facility also available
(For Boys only)
6, N.K. Halwasiya Road,
Opp. Bhopal House
Lalbagh, Lucknow-226001

Mohd. Aslam
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons
Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

विदीशा में
सच्चा राही
प्राप्त करें
Hafiz Ayub Khan Dewli
At. P.O. Laira.
Jama Masjid Sadeedia
Distt. Vidisha (464224) M.P.
Phone : 07593-44822

अब विदीशा में भी
सच्चाराही प्राप्त करें
बदरुद्दीन दादा भाई
मुक़ाम व पोस्ट – लायर
जिला – विदीशा 462224 (एम०पी०)
फोन : 07593 - 44822

पोलियो रोग – एक चुनौती

डा० मु०अ० रऊफ सिद्दीकी

अभी पिछले दो एक वर्ष से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पोलियो रोग को हम जड़ से मिटा देने में सफलता के अन्तिम चरण में हैं परन्तु हाल के सर्वेक्षण के बाद पता चला कि अभी इस क्षेत्र में बहुत काम करना बाकी रह गया था और विशेष सावधानियां बरतने की आवश्यकता है।

पोलियो रोग पोलियो वायरस के कारण होता है और इस को फैलाने में गंदा पानी और मक्खी दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह रोग तेज बुखार से आरम्भ होता है आंख कान नाक से पानी बहने लगता है और आरम्भ में सर्दी जैसे लक्षण प्रतीत होते हैं और कुछ दिन बाद हाथ या पैर या गर्दन आदि में से किसी एक पर लकवा मार जाता है जो कभी कभी जानलेवा भी होता है और अधिकतर बच्चों में विकलांगता तमाम उम्र के लिए छोड़ जाता है।

इस रोग की जानकारी सबसे पहले होने का वैज्ञानिक द्वारा 1840 में हुई फिर 1909 लैन्डसटीनर आदि द्वारा इसके वाइरस को पहचाना गया। 1949 में इसके वाइरस को एन्डर्स, वेलर तथा रोबिन्स द्वारा उगाया भी जा सका जिसके लिए इन तीनों को नोबुल पुरस्कार भी प्रदान किया गया। 1955 में साक द्वारा इससे बचाव के लिए वैक्सीन तैयार की गई जिसको 1961 में साबिन ने पी जाने वाली वैक्सीन के रूप में विकसित किया। तब से आज तक यही पी जानेवाली वैक्सीन ही सफलता से प्रयोग हो रही है।

'पल्स पोलियो पर्व' सारे देश में एक साथ मना कर हम ने इस रोग पर बहुत हद तक काबू पा लिया है। पिछले कई वर्ष पहले सारे देश से इक्का दुक्का नये पीड़ित बच्चों को ही पाकर यह आशा हो रही थी कि इस की समाप्ति की घोषणा अब होने ही वाली है कि अभी हाल में देश के कई स्थानों में मुख्यतः उत्तर प्रदेश में बहुत से स्थानों पर इस रोग के मौजूद होने के समाचार पाये गये ऐसा लगा जैसे चमन में बहार आते–आते वापस पलट गई।

इस समय वर्ष 2002 पूरी दुन्या 650, भारत में 443 और उत्तर प्रदेश में 372 बच्चों को रोग से ग्रसित पाया गया उत्तर प्रदेश में मुख्यतः पूर्वी और पश्चिमी भागों में अधिक रोग ग्रसित बच्चे पाये गये हैं।

पोलिया की बीमारी को मिटाने का एक ही केवल एक ही उपाय है। 0 से 5 वर्ष के सभी बच्चों को एक एक माह के अन्तर पर 3 बार पोलियो वैक्सीन पिलाना। यह इतना सरल है कि कोई भी दवा पिला सकता है। न सुई का डर न बुखार का भय। लक्ष्य वाले बच्चों तक वैक्सीन का शतप्रतिशत पहुंचना बहुत आवश्यक है साथ ही दवा के रख रखाव में उचित सावधानी स्वास्थ्य विभाग द्वारा की जाती है। अब यह समाज की भी जिम्मेदारी है कि किसी भी बच्चे को वैक्सीन से वंचित न रखा जाये। साथ ही रोकथाम के लिए यह भी आवश्यक है कि मक्खियों तथा दूषित पानी से बचा जाये। इसके वाइरस मलद्वार शरीर में विसर्जित होते हैं अतः मल को खुले में न रहने दिया जाये विसर्जित मल को ढकें गडढ़ें अथवा आधुनिक प्रासाधन विधियों का प्रयोग कर मक्खियों की पहुंच से दूर रखा जाये।

अधिक घनी मुस्लिम आबादी वाले इलाकों में रोगी बच्चों की संख्या अधिक पाये जाने पर मुस्लिम समुदाय की ओर उंगलियां उठने लगी हैं कारण जान पाने के प्रयास में दो बातें खुलकर सामने आई हैं एक तो अज्ञानता दूसरे भ्रामक प्रचार। भ्रम की स्थिति समाप्त करने के लिए समुदाय को उसकी मात्रभाषा में जानकारी सम्बन्धी सामग्री मिलना चाहिए। जिसमें अज्ञानता भी दूर की जा सकती है। साथ ही समाज और सरकार दोनों को सहानुभूति पूर्वक एक दूसरे में दूरी कम करने की जरूरत है। और इन के बीच सुरक्षा और हितैषी होने की भावना को और मजबूत करने की आवश्यकता है बहुत सी जगहों पर भ्रामक प्रचार में वैक्सीन के प्रति कई प्रकार के डर के कारण लोग अपने बच्चों को छुपा लेते हैं और पोलियो की वैक्सीन नहीं पिलाते हैं। किसी भी समुदाय में भ्रम में पड़ने का कोई औचित्य नहीं है क्योंकि वही वैक्सीन एक ही शीशी से हर समुदाय के व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के पिलाइ जाती है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को भ्रामक प्रचार के विरुद्ध सच्चाई का पता कर के भ्रम का खंडन करना चाहिए ताकि लक्ष्य को शत प्रतिशत पूरा कर के हम समुदाय, प्रदेश, तथा देश का मस्तक गर्व से ऊंचा उठा सकें। पल्स पोलियो द्वारा एक मौका और हाथ आया है। पूरे उत्तर प्रदेश में यह अभियान 29 सितम्बर, 17 नवम्बर 2002, 5 जनवरी 2003 तथा 9 फरवरी 2003 को एक बार फिर चलाया जाना है और इसबार अगर हमारा प्रयास सफल रहा तो न केवल रोग से बल्कि इन अभियानों के क्रम से भी मुक्ति पा जायेंगे और अपने नवजात शिशुओं को क्रम से पोलियो से बचाने की वैक्सीन पिलाते रहेंगे एक साथ इतने बड़े अभियानों की दौड़ धूप से बचे रहेंगे और फिर सहने चमन से पलट कर न जाने वाली बहार का स्वागत करेंगे।

इस्लाम में रिश्वत के हराम होने के आदेश

— शेख़ अहमद बिन अब्दुल अज़ीज़ अबूज़बी

सब तारीफ़ उस ज़ात पाक के लिए उचित है जिसने हलाल को हलाल और हराम को हराम क़रार दिया और लोगों के लिए भलाई और बुराई के अंतर को बयान किया। वही सबका पूज्य (माबूद) और हर चीज़ की जानकारी रखने वाला मालिक है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और रसूल (सन्देष्टा) हैं। ख़ुदा का उन पर और उनकी सन्तान और साथियों पर दुरूद व सलाम हो।

हज़रत अबू हुरैरा का वर्णन है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "रिश्वत लेने वाले और रिश्वत देने वाले और इन दोनों के बीच माध्यम बनने वाले पर ख़ुदा की लानत हो।"

एक दूसरी रवायत में है—

"रिश्वत लेने वालों और रिश्वत देने वालों पर ख़ुदा की लानत हो।"

हर वह गोश्त जो हराम से पालन-पोषण पाता है उसके लिए आग अधिक बेहतर है। किसी मुसलमान को तो यह पूछना ही न चाहिए कि रिश्वत खाने से कितनी अनगिनत ख़राबियां पैदा होती हैं। रिश्वत लेने-देने वालों का बाइकाट किये बिना, समाज का सुधार नहीं हो सकता है हर वह गोश्त जो हराम से पालन-पोषण पाता है उसके लिए आग अधिक बेहतर है। किसी मुसलमान को तो यह पूछना ही न चाहिए कि रिश्वत खाने से कितनी अनगिनत ख़राबियां पैदा होती हैं। रिश्वत लेने-देने वालों का बाइकाट किये बिना, समाज का सुधार नहीं हो सकता है।

दोस्तो और भाईयो! उम्मत का सच्ची राह से भटकाव, अव्यवस्था और मौलिक नियमों को तोड़ने और मनोबल की कमज़ोरी और अपने वजूद को हिला देने वाले तरीक़े को अपनाने का नतीजा यह होगा कि उम्मत के लोगों में सामूहिक बीमारियाँ पैदा हो जाएंगी और आचरण का पतन हो जाएगा जो उसके जीवन के स्तम्भ को तोड़ देगा, उसके टुकड़े—टुकड़े कर देगा। उम्मत के कुटुम्ब के सदस्यों में घमण्ड और लापरवाही आम हो जाएगी, जिसके नतीजे में क़ौम के अन्दर कमज़ोर और अवसरवादी लोग पैदा हो जाएंगे जिनको अपनी अनुचित आवश्यकता या अपनी घटिया आकांक्षाएं और सांसारिक लाभ के अतिरिक्त कोई और चिन्ता न होगी। ऐसी परिस्थिति में उम्मत का प्रबन्ध बिगड़ जाएगा और आपस में एक—दूसरे पर भरोसा उठ जाएगा। भरोसा और विश्वास ऐसी सामूहिक आवश्यकता है कि जो विश्वास खोदे वह सफल नहीं हो सकता। जो विश्वास के वर्णन से वचिंत हो उसके जीवन का आनन्द जाता रहता है।

ऐसी क़ौम जिसमें रिश्वत का लेन—देन होता है उसको न सुख—शान्ति मिलती है न चैन और आराम नसीब होता है। रिश्वत ऐसी बीमारी है कि इसके कारण आपसी सहयोग का जज़्बा समाप्त हो जाता है और दूसरों की सहायता का क्रम बिखर जात है। इसी लिए हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "तुम में स कोई उस समय तक पक्का मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अपने भाई के लिए वही न पसंद करे जो खुद अपने लिए पसंद करता है।

ईमान की एक निशानी यह भी है कि इंसान स्वार्थी और अवसरवादी न हो। बस अपनी ज़ाती ही ज़रुरत के बारे में सोचता हो। बल्कि मोमिन को तो ऐसा होना चाहिए कि वह सबके लिए रहमत हो, हंसमुख व पाक दिल हो, लोगों के लिए अच्छी इच्छाएं रखता हो। उसका मन साफ़—सुथरा हो। आचरण व चाल—चलन अच्छे हों। जो भलाई अपने लिए चाहता हो वही दूसरे भाइयों के लिए पसंद करता हो। उसकी उन्नति और सफलता का इच्छुक और दुख—दर्द को ख़ात्मे और उससे बचाव का ऐसा ही इच्छुक हो जैसे ख़ुद अपने लिए भलाई का इच्छुक होता है। उसे इस बात का शौक़ हो कि उसके हाथों उसके मुसलमान भाई को ऐसा व्यवहार नसीब हो जिससे उसको ख़ुशी और लाभ हो

सब से अधिक विनाशकारी सामूहिक बीमारी, जिसमें क़ौमें ग्रस्त होती हैं और फिर वह विघटन व अनार्की का शिकार हो जाती हैं, वह रिश्वत है जो सत्ता पक्ष और अधिकारियों में फैल जाती है और वह दूसरों का ख़ून चूसने की आदी हो जाती हैं और अपनी इच्छाओं और हैवानी (पाशव) ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपने भाइयों और अपने देशवासियों के हक़ मार कर अपने पद व अधिकार से नाजाइज़ लाभ उठाते हैं। जब ऐसा वातावर्णन बन जाता है तो इज़्ज़तें मिट्टी में मिल जाती हैं, अधिकार रौंदे जाते हैं और अमानतों में ख़ियानत होती है (न्यास में ग़बन होता है)। इज़्ज़तदारों को अपमानित किया जाता है और कमीनों को आदर व सतकार मिलता है। जो लोग मान सम्मान के हक़दार होते हैं उनकी निन्दा की जाती है और निकम्मे और कमीने लोगों को सम्मान

दिया जाता है। पद और नौकरियां इच्छाओं और बुरे इरादों की बुन्याद पर दी जाती हैं योग्यता, सत्यनिष्ठा (अमानत) निःस्वार्थता की बुन्याद पर नहीं। इस दशा में कोई भी भी व्यक्ति जिसका हक़ मारा गया हो अपना हक़ हासिल नहीं कर सकता। न कोई उत्पीड़न जुल्म के दूर होने की आशा रख सकता है सिवाए इसके कि उन लोगों को रिश्वत दे जो इस शिकायत को दूर करने का अधिकार रखते हैं या वह स्वयं बड़ा आदमी हो या फिर चापलूसी या फूट से काम ले। कभी–कभी तो इन रिश्वतख़ोरों की आदत इस हद तक पहुंच जाती है कि वह लाज व लज्जा को ताक़ पर रख के भावताव करते हैं। यह घटिया तबीअ़त के लोग अपने गुरुर और घमण्ड के कारण या हराम के नाम से बचाने के लिए कभी रिश्वत का नाम बदल कर उपहार या कोई और नाम रख देते हैं। हदीस में आता है, हुजूर (सल्ल०) फ़रमाते हैं–

अनुवाद– हर वह गोश्त जो हराम से पालन–पोषण पाता है उसके लिए आग अधिक बेहतर है।

किसी मुसलमान को तो यह पूछना ही न चाहिए कि रिश्वत खाने से कितनी अनगिनत ख़राबियां पैदा होती हैं। रिश्वत लेने–देने वालों का बाइकाट किये बिना, समाज का सुधार नहीं हो सकता है। ख़राबी का ख़ात्मा ख़राबी फैलने से पहले इसी सूरत में सम्भव है और इसका चलन होने से पहले इसकी जड़ काट देना हमारे लिए आवश्यक है। मुआ़मलात (आदान–प्रदान) को सही ढंग से सम्पन्न करना और उसको चलाना, जो क़ौम की भलाई के लिए निश्चित हो, और उसको सफलता की मंज़िल तक पहुंचाए, जभी संभव है जब ऐसे कर्मचारियों का सम्मान हो और उनकी तारीफ़ की जाए जो क़ौम और समाज के भलाई चाहने वाले हों। विशेषज्ञों को उत्साहित किया जाए। निःस्वार्थ कर्मचारियों को उनकी मेहनत और लगन पर पुरस्कार दिया जाए और ऐसे लोगों से बचा जाए जो क़ौम की आवश्यकताओं और उसके हितों से खेलते हों ताकि अच्छाई, सत्यनिष्ठा, सच्चाई और निःस्वार्थता के अन्दर मुक़ाबले का जज़्बा पैदा हो और किसी कमीने और दुष्ट व्यक्ति की यह हिम्मत न हो कि वह सज्जन पुरुषों के आड़े आए और उनके लिए रुकावट बने और ना ही अपभोगी (बददायानत) को वह मर्तबा हासिल हो सके जो ईमानदार व्यक्ति को मिलता है। इसी कारण रिश्वत देने वाला लेने वाला और उन दोनों के दरमियान माध्यम बनने वाला, यह तीनों ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान से मल्ऊन (धिक्कृत) गर्दाने गए हैं और ऐसा क्यों न हो जबकि इस्लाम ख़ैर व बेहतरी, कल्याण और भलाई की दावत देता है। वह ऐसे क़ानून का दाअ़ी (निमंत्रणकर्ता) है जिसमें अच्छाईयाँ ही अच्छाइयाँ हों जो इंसानी मन और समाज को अंतःकरण की बीमारियों, गन्दगी और दुराचार के रोगाणुओं से मुक्त करता है और वह इंसान को इ़ज़्ज़त, बुज़ुर्गी, प्रतिष्ठा और चमत्कार को चोटी पर पहुंचाता है और उसको वह उसकी शान के योग्य रुतबा प्रदान करता है जो बुद्धिजीवियों और दूर्दशी क़ौम के लिए उचित है और जिसे ख़ुदा ने अपनी पहचान और अमानत के बोझ को उठाने की इ़ज़्ज़त और चमत्कार से सुसज्जित किया है।

अब अगर इंसान उन अच्छी ख़ूबियों से मुंह मोड़ता है और उसकी सीमा और पाबन्दियों के दाएरे से बाहर निकलता है तो वह स्वतः अपने को धिक्कार और अवमानना का पात्र बनाता है।

रिश्वत देने वाले ने अधिकारों को रौंदने और लोगों की आवश्यकताओं और हितों से खेलने और ग़लत तरीक़े से लोगों के माल को हड़प करने का द्वार खोला है और गुनाह व पाप और अत्याचार और ज़ियादती जैसे बदतरीन काम में सहयोग कर रहा है न कि नेकी और संयम के काम में। इसी प्रकार रिश्वतख़ोर ने अपने अन्तःकरण को दुष्ट, माल को नाजाइज़ और खाने को हराम कर लिया है। वह रुपए पैसे का गुलाम बन कर रह गया है। हुजूर (सल्ल०) का कथन है–

अनुवाद– "हमने जिसको किसी काम पर नियुक्त किया और उसका वेतन निश्चितत कर दिया तो अब उसके बाद वह जो कुछ लेगा ख़ियानत (अपभोग) है।"

अल्लाह तआ़ला ने यहूदियों की इन शब्दों की निन्दा की–

अनुवाद– "वह झूठी बातों को खूब सुनते हैं और हराम की उनको लत पड़ी हुई है।"

दोस्तों! हराम की सब से बुरी शक़्ल रिश्वत है। ऐ मुसलमानो! तुम हर उस चीज़ से अपना दामन बचाओ जो तुम्हारी इ़ज़्ज़त और बड़ाई को दाग़दार करे या तुम्हारी बुज़ुर्गी और अमानतदारी में ख़लल डाले। अगर ख़ुदा हाकिम बनाए या कोई ऊँचा स्थान या पद प्रदान करे तो तुम उससे वही काम लो जो तुम को तुम्हारे ख़ुदा और मित्रों व बिरादरी के सामने सम्मान दिलाए और हमेशा के लिए तुम्हारी अच्छी चर्चा और बेहतरीन नेकनामी छोड़े। तुम जुल्म ज़ियादती से बहुत दूर रहो। हरामख़ोरी और रिश्वत लेने से कोसों दूर भागो। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है –

अनुवाद– "लोगो तुम (सब) ख़ुदा के मुहताज हो और ख़ुदा बेनियाज़ है। अगर चाहे तो तुम को मिटा दे और नयी मख़लूक़ (प्राणि वर्ग) आबाद करे और यह ख़ुदा को कुछ मुश्किल नहीं।"

अनुवादक : **हबीबुल्लाह आज़मी**

हिन्दी जानने वालों के लिये (दूसरा पाठ)

आओ उर्दू सीखें

— इदारा

हमारा यह कालम "आओ उर्दू सीखें" उन सज्जनों के लिए है जो हिन्दी लिखना पढ़ना जानते हैं परन्तु उर्दू नहीं जानते।

पाठ–1 में आपको उर्दू अक्षरों से अवगत कराया गया, जो व्यक्ति एक भाषा सीख चुका होता है, उसको ज्ञात होता है कि अक्षरों के नाम किस प्रकार याद किये जाते हैं और लिखने का अभ्यास किस प्रकार करते हैं। अभी तो आप अक्षरों को हिन्दी नामों ही से याद करें अगले पाठ में हम इनके उर्दू नाम भी बताएंगे। यह बात याद रहे कि जिस प्रकार उर्दू भाषा दाहने से बाएं को लिखी जाती है उसी प्रकार ज, च, ह, ख़, ज़, ग़, की ध्वनि वाले अक्षरों को छोड़ कर सभी अक्षर भी दाहने से बाएं की ओर लिखे जाते हैं।

हिन्दी भाषी यह बात जानते हैं कि हिन्दी में अक्षरों को गतिशील करने के लिए मात्राओं का प्रयोग किया जाता है, उर्दू में उनके स्थान पर ज़बर, ज़ेर और पेश प्रयोग होते हैं।

उदाहरण :

ब بَ　　बि بِ　　बु بُ

ब بَ को आप पहचान चुके हैं, بَ के ऊपर जो छोटी सी तिरछी लकीर है उसको ज़बर कहते हैं, यह जिस अक्षर पर हो उसकी आवाज़ उस अक्षर के साथ आ की मात्रा की आधी आवाज़ देता है, हिन्दी में इसको किसी मात्रा के बिना लिखते हैं, जैसे क, ख, ग, आदि।

उदाहरण में : –

बि بِ में بَ के नीचे छोटी सी तिरछी लकीर है इसको ज़ेर कहते हैं यह जिस अक्षर के नीचे लगी है उस अक्षर को इ की मात्रा के समान पढ़ते हैं। इस प्रकार बे के ऊपर जो शकल बनी है उसको पेश कहते हैं, इसको जिस अक्षर के ऊपर बनाते हैं उस अक्षर को उ की मात्रा से पढ़ते हैं।

उदाहरण :

ब بَ	बि بِ	बु بُ	क کَ	कि کِ	कु کُ
ज جَ	जि جِ	जु جُ	च چَ	चि چِ	चु چُ
ख خَ	खि خِ	खु خُ	ग گَ	गि گِ	गु گُ
घ گھَ	घि گھِ	घु گھُ	छ ﭼھَ	छि ﭼھِ	छु ﭼھُ

नोट : याद रहे कि मात्राओं के स्थान पर प्रयोग होने वाले इन चिन्हों को उर्दू में हरकत कहते हैं और उससे तात्पर्य हरकत की अलामत (गतिशीलन चिन्ह) लेते हैं।

□□□

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

ख़लीज टाइम्स के अनुसार सऊदी हुकूमत की तरफ़ से अमरीकी कम्पनियों के पेय पदार्थ के बाईकाट के कारण आगामी हज के अवसर पर लाखों हज करने वाले लोग ईरानी पेय पदार्थ प्रयोग करेंगे। ईरानी पदार्थ बनाने वाली कम्पनियों के अनुसार लगभग 20 लाख टन पेय पदार्थ हज करने वालों के लिए सऊदी अरब में तैयार करने का काम शुरू कर दिया गया है। सऊदी अरब और दूसरे खलीजी देशों ने फिलिस्तीनियों के खिलाफ़ इस्राईल की तरफ़दारी करने पर पेय पदार्थ तैयार करने वाली अमरीकी कम्पनियों का बाईकाट कर रखा है।

उत्तरी कोरिया के सरकारी तरजुमान (प्रवक्ता) ने अमरीका की तरफ से कुछ कम्पनियों पर मीज़ाईल टेकनॉलोजी की बिक्री पर प्रतिबन्ध लागू करने पर गम्भीर असंतोष प्रकट किया है और कहा है कि वह प्रतिबन्धों को स्वीकार नहीं करेगा। उत्तरी कोरिया के तरजुमान (प्रवक्ता) ने कहा है कि अमरीका यदि अपनी हटधर्मी छोड़ दे तो उससे बातचीत हो सकती है। लेकिन हम किसी प्रतिबन्ध को स्वीकार नहीं करते।

स्पष्ट रहे कि अमरीका ने क्यूबा, ईरान, इराक़, लीबिया, उत्तरी कोरिया, सूडान और शाम पर आतंकवाद में सहायता करने का आरोप लगाकर प्रतिबन्ध लगाया है और इन देशों पर अमरीकी हथियार खरीदने और अन्तर्राष्ट्रीय सहायता देनेवाली संस्थाओं से मानव कल्याण व विकास के लिए सहायता प्राप्त करने पर भी प्रतिबन्ध है।

ब्रिटिश समाचार पत्र डेलीमिरर द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार 77प्रतिशत लागों ने उसामा बिन लादिन को संसार के लिए बहुत बड़ा ख़तरा बताया जबकि 75 प्रतिशत ने सद्दाम हुसैन और 51 प्रतिशत ने अमरीकी राष्ट्रपति जार्जबुश को संसार का सबसे बड़ा खतरा बताया।

ईराक़ पर अमरीकी आक्रमण के बारे में 41 प्रतिशत ने विचार व्यक्ति किया कि यदि संयुक्त राष्ट्र की अनुमति मिल जाए तो सद्दाम का तख़्ता उलटने का मुआमला एक न्यायपूर्ण कार्यवाही बन सकती है।

12 प्रतिशत का विचार है कि यह आक्रमण संयुक्त राष्ट्र की मंजूरी के बिना नहीं किया जाना चाहिये।

एक ईरानी आर्टिस्ट ने दावा किया है कि वह लकड़ी पर जो कुर्आन शरीफ अंकित कर रहा है वह संसार का सबसे बड़ा कुर्आन मजीद होगा। फ़रशाद मालकीनिया ने 114 सूरतों में से पांच सूरतें 110 पृष्ठों पर अंकित कर चुका है। उपरोक्त कुर्आन मजीद का हर पृष्ठ 2. 4मीटर लम्बा और 1.2 मीटर चौड़ा होगा और हर पृष्ठ का वज़न 70 किग्रा होगा।

अमरीका और सऊदी अरब क्षण–क्षण एक दूसरे से दूर होते रहे हैं यद्यपि उस के सम्बन्ध हमेशा बहुत अच्छे रहे हैं लेकिन आज समस्या कारोबार की है जो खरबों डालर पर फैला हुआ है। अमरीका पत्रिका न्यूज़वीक ने पेरीस्कोप के कालम में क्रस्टोफ़ोर्ड की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसमें कहा गया है कि गत मास पेंटागन की सलाहकार पेनल ने सऊदी अरब को अमरीका दुश्मन करार दिया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन दोनों देशों के बीच वर्तमान मतभेद जारी रहे तो बाज़ समीक्षकों को आशा है कि सऊदी पूंजीनिवेश करने वाले, जिन्होंने अमरीका में लगभग 600 बिल्यन डालर निवेश कर रखा है, अपनी पूंजी का अधिकांश भाग निकाल लेंगे।

नैटो के सिक्रेटरी जनरल ने कहा है कि अमरीका को बेलगाम होने से रोकने के लिए यूरोप अपनी फौजी क्षमता बेहतर बनाए। उन्होंने कहा कि अमरीका और उसके सहयोगी देशों के बीच सैनिक विभाग में बढ़ती हुई दूरी रणनीति में दूरी बढ़ना का कारण बन सकता है क्योंकि अमरीका भविष्य में तनहा भी कार्यवाही कर सकेगा। जर्मनी के नगर म्यूनिच में सेक्योर्टी कांफ्रेंस को सम्बोधित करते हुए उन्होंने ने कहा कि यदि सैनिक क्षमता बेहतर न हुई तो यूरोप की सेना अमरीकी सेना से लड़ने के योग्य नहीं रहेगी और अमरीकी पालिसी पर यूरोप का प्रभाव सीमित हो जाएगा अतः नैटो की हैसियत बहाल करने के लिए परिवर्तन आवश्यक है।

सऊदी अरब के विदेश मंत्री ने चेतावनी दी है कि यदि इस्राइल के प्रधानमंत्री एरियल शैरोन सत्ता में रहे तो पश्चिम एशिया मसले का अंत त्रासद होगा। विदेश मंत्री शहजादा सऊद अल फैजल ने संवाददाताओं के साथ बातचीत में पश्चिम एशिया शांति वार्ता के प्रति श्री शैरोन के रवैये को गलत ठहराते हुए कहा कि उनके सत्ता में न रहने की स्थिति में कुछ उम्मीद बंध सकती है।

शाहजादा सऊद ने कहा कि वह जानते हैं कि श्री शैरोन को इस्राइल में बहुसंख्यक जनता का समर्थन हासिल है लेकिन बहुत से इस्राइली फिलिस्तीनियों के साथ शांतिपूर्ण समझौते के हक में हैं। उन्होंने कहा कि यह बदलाव भी उन्हीं इस्राइलियों को लाना होगा जो शांति के इच्छुक हैं यदि इस्राइली शांति के लिए कड़ा रुख अपनाएंगे तो उन्हें सुरक्षा भी हासिल होगी लेकिन यदि वे यह मामला श्री शैरोन पर छोड़ेंगे तो उससे पश्चिम एशिया समस्या का अंत त्रासद होगा।

शाहज़ादा सऊद ने कहा कि शैरोन ऐसे शख़्स हैं जो सोचते हैं कि अरब तो मरा हुआ ही भला होता है और इस्राइल चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ है। वह सोचते हैं कि किसी अरब के लिए शांति का अर्थ केवल यही है कि इस्राइलियों को महासागर में डुबो दिया जाए। उनके अनुसार इस्राइल को सुरक्षा के लिए सिर्फ अपने हथियारों और अमरीका के साथ सम्बन्धों पर निर्भर रहना होगा।

उन्होंने कहा कि वह उम्र के पचास साठ वर्ष बिता चुके हैं और दुर्भाग्य से नयी सदी में इस्राइलियों का भविष्य निर्धारित करने की जवाबदेही उनके पास है।